मुस्तफ़ा कमाल पाशा



غازی مصطفی کمال پاشا

लेखक—प० कार्त्तिकेयचरण मुखोपा

man Press, Calcutta



महावीर ग़ाजी मुस्तफ़ा कमाल पाशाका

सचित्र जीवन-चरित्र ।



लेखक

पं० कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्याय ।



प्रकाशक

रामलाल वर्म्मा, प्रोप्राइटर—

"वर्म्मन प्रेस" और "आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०,"

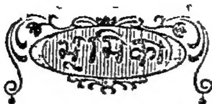
३७, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता ।



मार्गशीर्ष, सं० १९७९ वि०

प्रथम संस्करण २००० प्रति] [मूल्य १।), रेशमी जिल्द १।।)


मुद्रक
रामलाल वर्म्मा
बर्म्मन प्रेस,
कलकत्ता



वर्तमान युग स्वाधीन साधनाका युग है। इसमें संसारके सारे परतन्त्रदेश अपनी-अपनी मोह-निद्राको भङ्गकर, सदियोंसे पड़ी गुलामीकी बेड़ियां तोड़कर, युद्धको भेरी बजाते हुए, अपने उन शत्रुओंसे लड़ रहे हैं, जिन्होंने उनको सार स्वर्णपिणी स्वतन्त्रता अपहरण करने का पाप किया है।

स्वाधीनता या स्वतन्त्रता जीव, जाति और देशका मर्मस्थल हैं। इस पर हाथ दिया, कि प्रलय उपस्थित हो जायेगा! आप किसी आदमीकी हत्या कर डालिये, पर उसे परतन्त्र भूलकर भी न बनाइये। यदि बनायेंगे, तो वह जिस दिन भी अपने स्वरूपको समझेगा, जिस दिन भी अपने अधिकारोंको पहचानेगा, उसी दिन आपका प्राण शत्रु हो उठेगा। आप उसे हरचन्द दबायेंगे, पर वह किसी तरह भी न दबेगा। यदि आप उससे अधिक शक्तिमान् हैं और इसलिये उसे प्राणदण्ड देंगे, तो वह मरकर भी आपको मार देगा। क्योंकि आपने उसे परतन्त्र बनाकर उसीसे शत्रुता नहीं की, वरन् सबको समान अधिकार प्रदान करनेवाले प्रकृति और परमात्मासे भी शत्रुता की है।

जो राजगण स्वार्थ मदसे मत्त होकर किसी जाति या देशके भोग्य अधिकारोंको स्वयं गपक बैठते हैं, उसकी स्वाधीनतासे स्वयं लाभ उठाते हैं, एक दिन उस जाति द्वाराही उनका नामोनिशान मेट दिया जाता है।

उस दिन यूरोपमें रणभेरी बजी थी। विश्व विजय की दुराकांक्षाको छातीमें छिपाये जर्मन सम्राट्ने अखिल यूरोपसे युद्ध ठान दिया था। जिन राष्ट्रोंको उसकी शक्ति-सामर्थ्यपर अचल विश्वास था, वे भी अपने हितैषियोंके हित वाक्योंकी अवहेलनाकर उसके साथी हो लिये थे। किन्तु पासा उलटा पड़ा! जो जाति संसारके मुँहसे कामिल जादूगर साबित हो चुकी थी, उसने अपनी चालोंसे जर्मनीको पछाड़ दिया! साथ ही साथ उसके साथी भी पराजित माने गये।

अब आयी पराजितोंसे क्षति-ग्रहणकी बारी। किन्तु विजेताओंने न्याय

ा नक्कारा पीटते हुए भी,क्षति लेते समय अन्यायकीही पराकाष्ठा कर दी। करने गये थे क्षति-पूर्त्ति,पर कर बैठे अपने स्वार्थकी उदर-दरीकी पूर्त्ति।

पराजितोंमें मुसल्मान जगत्का धर्म गुरु तुर्कीभी था। विजेताओंने ससे अपनी क्षति-पूर्त्ति करते समय,इसका सारा साम्राज्यही गपक लिया। र्क-सम्राट् सरल थे, इसलिये कूट नीतिके पुतले मित्र राष्ट्रोंकी चालोंको रा न्याय समझकर उन्होंने उस नुक्सान-नामेपर स्वीकृति दे दी। किन्तु नका यह काम तमाम तुर्कों को अनुचित जान पड़ा, अतएव वे उस स्वीकृति ा विरोध करने लगे। विजेताओंने इस विरोधको विष दृष्टिसे देखा। किन्तु करही क्या सकते थे? साहस और शक्तिके पहलेसे लालेही पड़े हुए थे। आखिर जादूसे काम लिया गया। धन-बल हीन यूनानको दम-पट्टी देकर तुर्कीसे भिड़ा दिया गया।

तुर्कोंमें बहुत दिन पहलेसेही एक युगावतारिक पुरुष राजतन्त्रमें दोष देख,प्रजातन्त्र स्थापन या शासन-सुधारके लिये क्रान्ति करनेका उपक्रम कर रहा था। इस पुरुषका नाम था "गाजी मुस्तफा कमाल पाशा।" कमाल पाशाने पहलेसेही प्रभुत शक्तिका सञ्चय कर रखा था,अतएव उन्होंने अपनी जाति और अपने देशका गौरव बनाये रखनेके लिये, आत्म त्यागका समय उपस्थित देख, शत्रुओंका बड़ी वीरताके साथ सामना किया। शत्रु न टिके और अधिकृत देशोंको छोड़ प्राण-लेकर भाग गये। कमालकी करामातसे तुर्की तुर्कियोंकाही रह गया।

यदि आज तुर्क-त्राता गाजी मुस्तफा कमाल पाशा तुर्कीमें न रहे होते,तो तुर्क-साम्राज्यके संसारसे नेस्तनाबूद होनेमें बाकीही क्या रहा था? उन्होंने जिस अद्भुत कौशल द्वारा अपने देश और अपनी जातिका गौरव बनाये रखा, वह संसारके समस्त परतन्त्र देशोंको स्वतन्त्र बननेका सुन्दर सबक है।

ऐसे महावीरकी महिमामयी जीवन-कथा लिखकर, स्नेहास्पद पण्डित कार्त्तिकेयचरण मुखोपाध्यायने हिन्दी जगत्का महान् उपकार किया है। बङ्गाली होकर भी हिन्दीके लिये उनका यह प्रयत्न वास्तवमें प्रशंसनीय है।

हमने इस पुस्तकको साद्यन्त पढ़ा है और पढ़कर हम यह कहे बिना नहीं रह सकते,कि कमालकी कथा लिखकर कार्त्तिक बाबूने अपनी कलमको कृतार्थही नहीं किया, वरन् साहित्यमें एक सुन्दर सामग्री उपस्थित की है।

कलकत्ता,
२५—१२—३२

नरोत्तम व्यास।

निवेदन

आजसे कई वर्ष पहले गाजी मुस्तफा कमाल पाशाका नाम भारतवासियोंको विदित नहीं था और न टर्कीके लोगही यह बात जानते थे, कि इस सामान्य सैनिक अधिकारीमें, इस मामूली तुर्क युवकमें, पतनोन्मुख तुर्क-जातिको दासत्वकी गहरी गारमें गिरनेसे एकाएक बचालेनेकी शक्ति भरी हुई है; परन्तु जब समय आया,—परीक्षाका अवसर उपस्थित हुआ, तब उसी सामान्य मनुष्यने दुनियाको दिखा दिया, कि स्वतन्त्रता-प्रिय वीर तुर्क जाति अब भी सर्वथा निर्वीर नहीं हुई है—आज भी उसके अस्ताचल गमनोन्मुख भाग्यांशुमालीको अपने पराक्रमसे पुनरावर्तित करनेवाला वीर विद्यमान है।

अस्तु, इस वीर तुर्क युवककी जीवन विषयक बातें जाननेके लिये भारतवासियोंके मनमें इच्छा उत्पन्न होना बिल्कुल स्वाभाविक है। अत अपने देशवासियोंकी इसी इच्छाकी पूर्तिके लिये हमने यह छोटीसी पुस्तक लिखनेका प्रयास किया है। इस काममें हमें लाहौरसे निकलनेवाले दैनिक 'आफताब' के विद्वान् सम्पादक मौलवी वजाहत हुसैन साहबकी उर्दूमें लिखी "मुस्तफा कमाल पाशा"की जीवनीसे तथा हाफिज अब्दुस्समद साहब 'बनारसी'से बडी सहायता मिली है, जिसके लिये हम उन्हें हृदयसे धन्यवाद देते हैं। साथही सुप्रसिद्ध दैनिक पत्र "भारत-



इस्लाम-साम्राज्यकी स्थापना

प्रारम्भिक इतिवृत्त

इस्लाम या मुहम्मदी धर्मके संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद साहबके पूर्व, एशिया महाद्वीपके दक्षिण पश्चिम भाग, अर्थात् वर्त्तमान अरब, ईरान, टर्की, फारस, सीरिया, अर्मेनिया, अफगानिस्तान आदि देशोंका समाज शरीर सुसङ्गठित और सुश्रृङ्खलित न था। इनके शासनका कोई सुव्यवस्थित या निश्चित स्वरूप नहीं था। इन देशोंके आदिम निवासी स्वभावतः बड़े बलशाली होते थे। लोग दल बाँध-बाँधकर घूमा करते थे। एक स्थानपर स्थायी रूपसे जमकर रहना वे पसन्द नहीं करते थे। ऊँटों, घोड़ों और खच्चरोंपर अपना माल असबाब लादकर और

अपने बाल-बच्चोंको साथ लेकर, अधिकतर लोग देश-विदेशोंमें भ्रमण किया करते थे। वे जहाँ जाते, वहीं तम्बू-खेमे खड़े करके कुछ दिनोंके लिये ठहर जाते।

उस प्राचीन समयका इतिहास दुर्लभही नहीं, अप्राप्य भी है। संसारके सभी देशवासियोंका प्रारम्भिक इतिहास इसी प्रकार दुर्लभ है और सभी जातियोंकी प्रारम्भिक दशा प्रायः ऐसीही रही है। चीन और यूनान आदि देशोंके कुछ भ्रमण शील इतिहास-लेखकों तथा मुसलमान-धर्मकी स्थापना-कालके वृत्तान्तोंसे उस प्राचीन समयकी परिस्थितिका थोड़ा-बहुत हाल जाना जाता है। उनके धर्मके विषयमें भी यद्यपि विशेष कुछ हाल नहीं मालूम होता, तथापि मुसलमान-धर्मकी स्थापनाके कारणोंसे ही यह बात स्पष्ट रूपसे जानी जाती है, कि वहाँ मूर्त्ति-पूजा, किसी-न-किसी रूपमें, अवश्य प्रचलित थी। सम्भव है, हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि भारतवर्षीय धर्म-सम्प्रदायोंके प्रचार और प्राबल्यके कारणही इन देशोंमें मूर्त्ति-पूजाकी प्रथा प्रचलित हो गयी हो।

क्रमश जन-संख्याकी वृद्धि, सभ्यताका विकास आदि स्वाभाविक तथा प्राकृतिक कारणोंसे लोग निश्चित रूपसे एक-एक स्थानपर बसने लगे। कभी-कभी जीवन-निर्वाहके लिये आवश्यक वस्तुओंका संग्रह करने, व्यवसाय करने अथवा ऐसेही कामोंके लिये वहाँके लोग दल बाँध-बाँधकर निकलते थे। परन्तु अब घूमते-फिरते रहनेपर भी वे अपना एक निश्चित और स्थायी



आवास स्थान बना चुके थे। क्रमश बसनेवाले लोगोंमें मुखिया या सरदार होने लगे। ऐसे मुखिया या सरदार अपने दलवालोंमें सर्वापेक्षा अधिक शक्ति सम्पन्न और प्रभावशाली होते थे। प्रत्येक दलवाले अपने मुखियाकी बात मानते और उनके कहे अनुसार काम करते थे। ज्यों ज्यों इन दलोंका परस्पर मेल होता गया, त्यो-त्यों इनका आकार और बल भी बढता गया। अन्तमें येही मुखिया राजा और शासकके रूपमें आ गये। बहुतसे दलोंके एकत्र मिल जानेसे समाज-संगठन तथा राज्योंकी स्थापना होने लगी और धर्म भाव भी बलवान् रूप धारण करने लगा।

इस्लाम-धर्मकी स्थापना

लोगोंमें तात्कालिक धर्मभाव (बुत परस्ती)की उत्तेजना संवर्द्धित होनेके कारणही पैगम्बर मुहम्मद् साहबको, इस्लाम धर्मकी स्थापना और प्रचारमें, बडी बडी कठिनाइयों और विघ्न बाधाओंका सामना करना पडा, परन्तु उसकी स्थापना हो चुकनेपर, कुछही दिनोंके अन्दर, अरब निवासियोंके जातीय चरित्र, चाल-ढाल, रीति-नीति, आचार-व्यवहार आदिमें बहुत परिवर्त्तन हो गया। साथही उनमें नव स्थापित इस्लाम धर्मका विशेष रूपसे समावेश हुआ। इसके पहले अरब, ईरान आदि देशोंके निवासियोंका कोई जातीय धर्म नहीं था। पैगम्बर मुहम्मद साहबनेही उन्हें एक धर्म सूत्रमें बाँधा। अपने अनुयायियोंको उन्होंने राज-नीति और धर्म-नीतिकी एक मजबूत डोरीसे बांध-

कर एकत्र किया। उन्होंने अपनी इस एकीकरण प्रणालीको किसी स्थान-विशेष या देश विशेषमें सीमाबद्ध करके नहीं रखा था। उन्होंने उसे संकुचित रूप न देकर बडाही व्यापक रूप दिया था। इस धर्मकी स्थापनाके साथही अरब-वासियोंकी सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक अवस्था बहुत उन्नत होने लगी। अरब वासियोंके पूर्वजोंकी जो दल-बन्दियां थीं, उनमें जो भेद-भाव था, जो मत-मतान्तरके झगडे थे और जो विद्वेष-वैमनस्य चलता था, उसे मुहम्मद साहबने केवल दूरही नहीं कर दिया, बल्कि उनके स्थानपर एक राष्ट्रीय धार्मिक भाव स्थापितकर,वहांके भिन्न-भिन्न समाजों, सम्प्रदायों और जातियोंकी समस्त शक्तियोंको एक नवीन स्रोतमें बहा दिया। केवल अरबवालोंकोही नहीं, आस पासके उन अन्य देशवासियोंको भी, जिन लोगोंने इस्लाम धर्मको कबूल किया, मुहम्मद साहबने समानताकी दृष्टिसे देखा और समानताके समस्त अधिकार दिये।

समस्त इस्लाम-धर्मावलम्बियोंमें मुहम्मद साहबने जिस ऐक्य-सूत्रके बलसे एकता उत्पन्न की, वह आज भी हम कुरान शरीफमें देख सकते हैं,———

"إنما المؤمنون إخوة فأصلحوا بين أخويكم"

अर्थात्—"इस्लाम धर्मपर विश्वास रखनेवाले सभी श्रेणोके मनुष्य परस्पर भाई-भाई हैं, इसलिये हे धर्मनिष्ठ! तुम ऐसी चेष्टा करो, कि तुम्हारे अन्दर फूटका बीज किसी प्रकार घसने न पाये।"

मनुष्यके नैतिक चरित्रको अध पातसे बचाने और उसे सदैव दृढ बनाये रखनेके लिये उनका कहना था,——

"إن أكرمكم عند الله أتقاكم"

अर्थात्—"ईश्वरकी दृष्टिमें, तुम लोगोमें, वही सर्वाधिक प्रिय और श्रेष्ठ है, जो ईश्वरसे सर्वापेक्षा अधिक डरता है।"

जातिगत विद्वेष भावको मिटानेके लिये, जातीय अहंकार को चूर्ण विचूर्ण करनेके लिये तथा उच्च वंशमें उत्पन्न होनेका मद मानव हृदयपरसे धो डालनेके लिये उन्होंने कैसा उत्तम उपाय स्थिर किया था और मानव हृदयकी कुण्ठा तथा संकोचको निकालकर उसे विशाल और उन्नत बनानेके लिये उन्होंने मनुष्यके सम्मुख कैसा उच्च आदर्श स्थापित किया था, इसका पता उनके इस वाक्यसे अच्छी तरह लग सकता है —

لا فضل عربي على عجمي ولا لعجمي على عربي إنكم أبناء آدم

अर्थात्—"हे मनुष्यो ! ईश्वरने तुम्हारी सारी पेंठ छीन ली है; तुम्हारे उच्च वंशोद्भव होनेका सारा गर्व और मद हरण कर लिया है। तुम सभी आदमकी* सन्तान हो और आदम स्वयं पृथ्वीकी सन्तान थे। कोई भी अरब निवासी, यदि वह धर्म-भीरु नहीं हो, तो उसे बाहरवालोंसे अपनेको किसी अंशमें भी श्रेष्ठ समझनेका कुछ भी अधिकार नहीं है।"

* हिन्दू-शास्त्रकारोंके मतानुसार जैसे मनुसे मनुष्यकी सृष्टि मानी जाती है, उसी प्रकार इस्लाम धर्मानुसार आदमसे आदमीकी सृष्टि मानी जाती है।

मुसल्मान धर्ममें—मुसल्मान जातिमें—एक बड़ी विशेषता है। वह यह, कि जातिका जो व्यक्ति धर्म-गुरु होता है, वही उस जाति या समाजका शासक और राजा भी हुआ करता है।

प्राचीन भारतवासियोंमें धर्माधिपतिका दर्जा शासनाधिपतिकी अपेक्षा भी ऊँचा माना गया था। स्वयं राजा लोग भी उनकी पाद-पूजा करते थे। परन्तु मुसल्मान-धर्मकी स्थापनाके समयसेही उसका धर्म-गुरु और शासक एकही व्यक्ति हुआ करता है। इसका कारण यह है, कि मुसल्मान-धर्म का प्रचार करनेके साथ ही-साथ पैगम्बर मुहम्मद साहबने मदीनेमें एक सम्पूर्ण स्वतन्त्र राजनीतिक सम्प्रदायके कर्णधारका भार अपने ऊपर ले लिया था। तभीसे इस्लाम-धर्म एक राजनीतिक सम्प्रदायका धर्म समझा जाने लगा। धर्माधिपति जब किसीको इस्लाम-धर्मकी दीक्षा देते थे, तब वे शासककी हैसियतसे उसे समाजकी शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित रखनेका उपदेश भी दिया करते थे। जो लोग मुसल्मान धर्मका अवलम्बनकर चुके थे, उनका कहना था, कि "ईश्वरके दूत यानी पैगम्बर और अन्यान्य धर्माधिकरणोंकी आज्ञाका पालन प्रत्येक मुसल्मानको सच्चे दिलसे करना चाहिये।"

खलीफाकी आवश्यकता

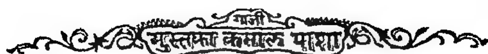
इस तरह देखा जाता है, कि अरब देशके आदि निवासियों जैसे असभ्य, विश्रृङ्खलित और धर्म ज्ञान शून्य
भी मुहम्मद साहबने कुछही वर्षोंके अन्दर धार्मि

उत्पन्न कर, उनके समाजका स्वरूप ऐसा सुश्रृङ्खलित बना दिया, कि जिसकी आशा भी नहीं की जा सकती थी।

समाज संगठन हो चुकनेके बाद उनके तमाम अनुयायी उनके उपदेशोंको 'ख़ुदा तालाका हुक्म' या 'ईश्वरदत्त आदेश' समझने लगे। कुछ कालके अनन्तर स्वाभाविक रीतिसे इस बातकी आवश्यकता हुई, कि उनके प्रत्येक काममें सहायता करनेके लिये एक सहकारी नियुक्त किया जाये। निश्चित हुआ, कि जो आदमी इस पदपर नियुक्त किया जाये, वह समाजके लोगोंके न्याय-अन्यायका विचार करे, सर्व साधारणके लिये ईश्वरा-राधनामें मुखिया या प्रधानका कार्य करे और इस्लाम-धर्मकी रक्षाके लिये उसके विरोधियोंसे संग्राम करे।

मुहम्मद साहबके जीवन-कालमें स्वयं मुहम्मद साहबकी आज्ञासेही सब काम-काज होते थे, पर उनकी मृत्युके बादसे उनके स्थानपर रहकर उनके प्रतिनिधि स्वरूप कार्य-संचालन करनेवाले खलीफा कहलाने लगे।

पैगम्बर साहबकी मृत्युके पश्चात् ऐसे योग्य व्यक्तिके चुनाव-का प्रश्न उठा, जो जनताको धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक मार्गोंका प्रदर्शन करा सकता हो। इस प्रकारका प्रश्न मुहम्मद साहबके मनमें कभी उठा नहीं होगा, यह नहीं कहा जा सकता, बल्कि इसका प्रमाण पाया जाता है, कि उन्होंने जान बूझकर इस प्रश्नको इस्लाम-धर्मावलम्बियोंके विचाराधीन छोड़ दिया था। मुसलमान जगत्‌में यह किंवदन्ती बहुत दिनोंसे प्रचलित



है, कि तुफैलका पुत्र अमीर एक बार मुहम्मद साहबके पास गया और उसने उनसे पूछा,—"जनाब! अगर मैं मुसलमान-धर्मका अवलम्बन करूँ, तो आप मुझे किस कोटिमें स्थान देंगे? क्या आप अपने पश्चात् इस धर्म-सम्प्रदायका शासनाधिकार मुझे प्रदान कर सकते हैं?" मुहम्मद साहबने अमीरके इस प्रश्नके उत्तरमें कहा था,—"यह कुछ मेरी व्यक्तिगत सम्पत्ति तो है नहीं, कि मैं इसे उठाऊँ और आपके हाथोंमें दे दूँ।" इस वाक्यसे उनके हृदयकी महत्ताका पूर्ण परिचय मिलता है।

८ जून सन् ६३२ ई०को पैगम्बर मुहम्मद साहब इन्तकाल कर गये। उनकी मृत्युके पश्चात् उनके इष्ट-मित्रोंने किसी व्यक्तिको उनके उत्तराधिकारीके पदपर अभिषिक्त करनेके लिये एक सभा की। इस सभामें सर्व सम्मतिसे मुहम्मद साहबके अत्यन्त विश्वासपात्र हजरत आबू बकर सिद्दीक उनके उत्तराधिकारी निर्वाचित हुए।

यह मुसल्मानी सल्तनत, जो मदीनेमें कायम हुई, किस तरह तुर्कोंके हाथोंमें आयी, इसका कमसे कम संक्षिप्त विवरण जाने बिना, पुस्तकके मुख्य विषयकी ओर अग्रसर होनेसे, सब बातें स्पष्ट समझमें नहीं आ सकतीं। इसलिये यहाँ इस्लामी सल्तनतके इतिहासकी केवल बहिर्रेखाका दिग्दर्शन मात्र करादेना उचित और आवश्यक जान पड़ता है।



चार ऐतिहासिक कालांश

प्रथम कालांश

सन् ६३२ से
सन् ६६१ तक

मुसलमान इतिहास-लेखकोंने मुहम्मद साहबके पश्चात्की ऐतिहासिक घटनाओंको, चार कालांशोंमें विभक्त किया है। इनमें पहला कालांश सन् ६३२ ई० से आरम्भ होकर सन् ६६१ ई० में समाप्त होता है। इस कालांश-में जो व्यक्ति खलीफा होता, वही धर्म-गुरु और राजा या शासक-का काम भी करता था। इन तीस वर्षोंमें पैगम्बर मुहम्मद साहबके पश्चात् चार खलीफा हुए—(१) आबू बकर सिद्दीक़ (२) उमर बिन खत्ताब (३) उस्मान् बिन अफ्फान और (४) अली बिन अबी तालिब। ये लोग खुलफा-ए-राशदीन कहलाते थे। इस्लामके इतिहासमे यह समय सर्वाधिक पवित्र और सर्वोच्च आदर्शतक पहुँचा हुआ था। परन्तु यह परिस्थिति बहुत दिनोंतक स्थायी रूपसे रह न सकी।

इस अवधिमें जितने खलीफा हुए, वे प्रत्येक धार्मिक प्रथा और धार्मिक क्रियाका यथारीति पालन करते रहे। वे दीना-दपिदीन प्रजाजनके समान जिन्दगी बसर करते थे। विला-सिता और भोगेच्छा उनके पास फटकनेतक न पाती थी।

अमीर-उमरा और अर्बिस्तानके बाहरवाले जब कभी खलीफाको देखने आते, तो वे खलीफा और सर्व साधारणकी वेश-भूषामें कोई अन्तर न देखकर बड़े अचम्भेमें पड़ जाते थे। इतिहास-लेखकोंका कहना है, कि ये शहरके बाहर, एक एकान्त स्थानमें झोपड़ेके अन्दर रहते, जमीनपर केवल साधारणसी चटाई बिछा कर सोते-बैठते और मामूली कपड़े पहनते-ओढ़ते थे। उनकी यह सादगी और फकीराना चाल-ढाल अबतक मुसलमान जगत्का आदर्श समझी जाती है। आज भी मुसल्मान-संसार अपने उन त्यागकी प्रतिमूर्त्ति-स्वरूप धर्माचार्योंकी शत-मुखसे प्रशंसा करता और आँसू बहाता है।

द्वितीय कालांश

सन् ६६१ से सन् १२५८ तक

इस्लाम राज्यकी यह परिस्थिति मदीनेके अन्तिम खलीफा अली साहबके समयतक ही रही। उनके बादही अर्थात् सन् ६६१ ई० सेही अवस्था बहुत कुछ बदलने लगी। अब इस्लाम सत्ताका दूसरा कालांश आरम्भ हुआ। सन् १२५८ के अन्ततक इस कालांशकी अवधि मानी गयी है। इस अवधिमें इस्लाम जगत्को पथ-प्रदर्शन करनेका भार अर्बिस्तानके एकाधिपत्य शासकके हाथोंमें आ गया। खलीफाका पद अब वंशागत अधिकारीको मिलने लगा। खलीफा पहले जिस प्रकार न्याय-अन्यायके विचारक और परम स्वार्थ त्यागी फकीर होते थे, अब वह बात न रही। इस वंशके पहले खलीफा

मोआवियाह बिन-अबी सुफियान थे *। सबसे पहले इन्होंनेही अपने जीवन कालमें अपना उत्तराधिकार खलीफाका पद अपने पुत्र मजीद बिन मोआवियाहको प्रदानकर खलीफा निर्वाचनकी प्रथाको सदाके लिये तोड दिया। इस समयके खलीफोंमें प्राचीन खलीफा उमरकी तरह सादगी और अलीकी तरह दयालुताका भाव न रहा। अब विदेशी मुसलमानोंको समानताका अधिकार देना बन्द कर दिया गया। यद्यपि इस्लाम-धर्मके सिद्धान्तोंमें यह बात मौजूद थी, कि कोई व्यक्ति, चाहे वह किसी देशका निवासी क्यों न हो,यदि उसने मुसलमानी धर्म कुबूल कर लिया है, तो उसे भी वे सब अधिकार मिलने चाहियें, जो अरब निवासियोंको प्राप्त होते हो।

प्रत्येक देश, जाति और राष्ट्रकी उन्नतिकी एक सीमा होती है। उस सीमातक पहुंचकर उसका पतनोन्मुख होना प्रकृतिका एक अटल नियम है। इतिहास इसका ज्वलन्त प्रमाण है। अरबोंकी उन्नति भी जब चरम सीमातक पहुँच गयी, तब वे भी धर्म विगर्हित कार्य करने लगे और लक्ष्य भ्रष्ट पथिककी तरह अग्रसर होने लगे। कहते हैं, "प्रभुता पाई काहि मद नाहीं"। अरबिस्तानमें जिस विश्व-व्यापक अद्वैत वादके प्रचारके लिये, मनुष्य जातिको समानताके अधिकार देनेके लिये, भ्रातृ-भावके विस्तारके लिये और शासनमें प्रजाको अधिकार देनेके लिये

* यह खानदान बनू उमैया कहलाता है, इस खानदानके १४ शासक हुए। अन्तिम खलीफाका शासन सन् ७४४ ई० तक रहा।

इस्लाम-सल्तनत कायम हुई थी, अरब-निवासियोंने अब अपने उस उच्च आदर्शको भुला दिया। वे इस राज्यको अपनी निजी सम्पत्ति समझने लगे। सुतरां जिस उच्च आदर्शको अपना लक्ष्य बनाकर अरब-निवासियोंने इतना बड़ा साम्राज्य स्थापित किया था और वे इतने शक्ति-सम्पन्न हुए थे, अन्तमें उसी लक्ष्यसे भ्रष्ट होना उनके नाशका कारण बन गया।

इसी दूसरे कालांशमें, अरबिस्तानके बनू उमैया राजवंशके ध्वंस होनेके बाद, फारस देशवालोंकी सहायतासे, अब्बासिया खानदानके एक योग्य व्यक्ति खलीफा बनाये गये। इस खानदानके पहले खलीफा अबुल अब्बास सफफाह हुए। उन्होंने सन् ७४६ ई० में शासन-भार अपने हाथमें लिया। इस खानदानके ३५ खुलफा गद्दीपर बैठे। इस खानदान वालोंने इस बातका सदा खयाल रखा, कि यह राज-सिंहासन उन्हें फारसवालोंकी सहायतासे मिला है। इसलिये वे फारस देशवालोंको अपने शासनमें ऊँचे-ऊँचे पद दिया करते थे। यद्यपि इस अब्बासिया खानदान वालोंमें बहुतसे दोष मौजूद थे, तथापि इसमें बहुतसे सद्गुण भी विद्यमान थे। इस वंशके अधिकतर खलीफा उदार हृदयके हुए। इनके शासनमें मुसल्मान-साम्राज्य फिर एक बार उन्नतिके शिखरपर पहुंच गया। इतिहास-लेखकोंका कहना है, कि इनके समयमें मुसल्मान संसारमें भौतिक विज्ञानकी बड़ी उन्नति हुई थी। नाना प्रकारके वैज्ञानिक यन्त्रादिका आविष्कार हुआ था। व्यापार-वाणिज्य भी बहुत उन्नत अवस्थातक जा पहुँचा था।

दीन दु:खियोंकी सहायताके लिये जगह-जगह दातव्य औषधालय, विद्यालय और अन्न-सत्र आदि बनाये गये थे।

स्वतन्त्र विवेकके मनुष्योंका इन खलीफोंके यहाँ यथेष्ट आदर-सत्कार होता था। मानवी शक्तियोंके विकासके लिये खलीफाकी ओरसे यथेष्ट सहायता दी जाती थी। सीमान्त प्रदेशोंमें शत्रुओंको घुसने न देनेके लिये कड़ी किलेबन्दी रहती थी। अगर कभी कोई शत्रु सीमाके अन्दर प्रवेश करनेका साहस भी करता, तो उसका बड़ी दृढ़ताके साथ सामना किया जाता था और आक्रमणकारियोंको उनके बल तथा सुसगठित सैन्य दलसे हार खानी पड़ती थी।

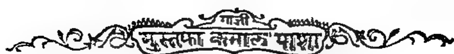
मुसल्मान जगत्‌ने इस समय केवल राजनीति विज्ञानमेंही उन्नति नहीं की थी, वह अध्यात्म-विद्या, गणितशास्त्र, चिकित्सा-शास्त्र आदिमें भी आगे बढ़ा हुआ था। इस समय प्राय सारा यूरोप अज्ञानान्धकारसे ढँका हुआ था। इस वंशके अन्तिम खलीफाका नाम 'अल मुस्तासम बिल्लाह' था और इस वंशके हाथोंमें सन् १२६० के मध्यतक शासनाधिकार रहा।

परन्तु सन् १२४३ से १२६० ई० तक इनका शासनाधिकार किसी सुव्यवस्थित रूपमें न था। वास्तवमें इस समय इस्लाम-साम्राज्यका प्राय सम्पूर्ण शासनाधिकार मिश्रके मामलुक सुल्तानों तथा मिश्र देशके कई अन्य राज-वंशोंके हाथोंमें आ गया था।

अब्बासिया खानदानके खलीफोंने अपनी राजधानी 'बागदाद' नामक स्थानमें बनायी थी। आजकल बाग्दादको 'बगदाद' कहते

हैं; परन्तु वास्तवमें इसका नाम 'बाग़दाद' अर्थात् 'न्यायकी वाटिका' था। सन् १२५८ ई० में हलाकू नामक एक तुर्क सरदारने दल-बल सहित बाग़दादपर आक्रमण किया। इसने कई दिनोंतक बाग़दादमें कत्लेआम जारी रखा, तमाम शहरको तहस-नहस कर डाला। बड़ी-बड़ी इमारतोंमें आग लगा दी। अन्तमें लूट-मार करके जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर वह फिर अपने घर लौट गया। इतिहास-लेखकोंका कहना है, कि इस भीषण आघातके कारण इस्लाम जगत्की जड़ हिल गयी। कुछ इतिहास-लेखकोंका कहना है, कि हलाकूके इस आक्रमणसे इस्लाम साम्राज्य की जो भयङ्कर क्षति हुई, वह आज भी पूरी नहीं हो सकी है।

भारतका धन वैभव देखकर जिस प्रकार पठानों, मुगलों, तातारों और तुर्कोंने बार-बार आक्रमण किया और वे भारतकी शान्तिको भङ्ग करके, राजधानियों और तीर्थ-स्थानोंपर आक्रमण करके, जो कुछ हाथ लगा, उसे लेकर फिर अपने घर लौट गये थे, उसी प्रकार इस्लाम साम्राज्यका धन-वैभव भी विदेशियों और विजातियोंकी आँखोंमें गड़ने लगा था और कितनीही बार अपने लोभको संवरण न कर सकनेके कारण उन्होंने मुसल्मान-साम्राज्य-पर आक्रमण भी किया था, पर उनके आक्रमणोंसे मुसलमान जगत्-का विशेष कुछ नुकसान नहीं हुआ था; परन्तु अन्तमें हलाकूके इस आक्रमणसे—जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है—मुसल्मान-साम्राज्यका मेरुदण्ड टूटसा गया। वह इस भयङ्कर आघातको सह न सका।



तृतीय कालांश

सन् १२६१ से सन् १५१७ तक

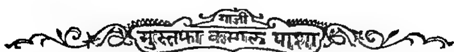
इसके बाद इस्लाम साम्राज्यके इतिहासका तीसरा कालांश प्रारम्भ होता है। इसकी अवधि तीन सौ वर्षोंकी अर्थात् सन् १२६१ ई० से लेकर सन् १५१७ ई० तक मानी जाती है। इस कालांशके प्रारम्भमें खलीफोंके हाथमें शासनाधिकार केवल नाम मात्रका रह गया था। यद्यपि उस वंशका सर्वथा नाश नहीं हुआ था और न वे मुसलमान जगत्के आदर्श पदसे गिरे ही थे, तथापि सन् १२५८ वाले बगदादके कतलेआमसे उनकी सारी शक्ति क्षीण हो गयी थी। इस बीचमें मिश्रके मामलुक सुल्तानों तथा कई राजवंशों द्वारा मुसलमान-जगत्का शासन होता रहा। बेइबार्स* नामक माम-

*बेइबार्स प्रथम और बेइबार्स द्वितीय नामके दो मिश्री शासक हुए थे। बेइबार्स प्रथम "बाहरी मामलुक" नामक सम्प्रदाय विशेषका नेता था। सलादीन नामक कोई मिश्री राजा था। ये बाहरी मामलुक सम्प्रदायवाले पहले इसी सलादीनके उत्तराधिकारी राजाओंके शरीर-रक्षकका काम करते थे। यह तुर्किस्तानसे लाये हुए गुलामोंका एक दल था। बेइबार्सने धर्म द्रोहियोंको परास्त किया। इसके बाद इन्होंने कुटूज नामक एक राजाको मारकर उसकी गद्दी छीन ली। अन्तमें अपने अधीनस्थ सैनिकों द्वारा वह राजा बनाया गया। इसने शासन दण्ड ग्रहण करके सबसे पहले सीरियामें होनेवाले एक अन्तरंग झगड़ेको दबाया; फिर इसीने चंगेज़खांके पौत्रके आक्रमणसे मुसलमान-संसारकी रक्षा की। इसी बेइबार्स प्रथमकी बात यहाँ लिखी गयी है।

लुक सुलतानको जब पता लगा, कि अब्बासिया खानदानके लोग अब भी जीवित हैं और अपने कुछ थोड़ेसे अधिकारोंके साथ सीरियामें मौजूद हैं, तब उन्होंने उनको बुलानेका विचार किया। उनकी इच्छा थी, कि अब्बासिया वंशके जो खलीफा आज भी जीवित हैं, उन्हें बुलाकर उन्हेंही पुन. मुसलमान साम्राज्यका शासन-भार दिया जाये। वेही मुसलमान जगत्के सिरमौर माने जाने योग्य व्यक्ति हैं। बेइवार्सकी यह भी इच्छा थी, कि उन्हें खलीफाके पदपर अभिषिक्त कराके आप उनसे हार्दिक आशीर्वादोंके साथ विधिवत् सुलतानकी उपाधि ग्रहण करें।

अनन्तर सीरियासे अब्बासिया खानदानके खलीफा अहमद ताहिर बड़ी शान-शौकतके साथ मिश्रकी तत्कालीन राजधानी कैरोमें बुलाये गये। उनके कैरो पहुँचनेपर वहाँके सुलतान राजोचित वेश भूषा और सैन्य-सामान्तोंके साथ उनकी अगवानीके लिये आगे आये। राज-दरबारमें पहुँचनेपर वे बड़े सम्मानके साथ उच्चासनपर बैठाये गये। खलीफा अहमद ताहिरने खतबा पढ़ा और उन्हें मुसतन्सिर बिल्लाहकी उपाधि प्राचीन विधिके अनुसार दी गयी और वेही मुसल्मान साम्राज्यके खलीफा माने गये। अनन्तर खलीफाने बेइवार्सको इस्लामके विरुद्ध लोहा लेनेवालोंके साथ संग्राम करनेका अधिकार प्रदान किया।

कुछ दिनों बाद किसी मुगलने इस्लाम-साम्राज्यपर आक्रमण किया। खलीफा मुसतन्सिर बिल्लाह उसका प्रतिरोध करनेके



लिये आगे बढ़े पर इस धर्मयुद्धमें वे मारे गये। उनकी मृत्युके पश्चात् बेइबार्सने उन्हीं अब्बासिया वंशके एक और व्यक्तिको लाकर खलीफाकी गद्दीपर बैठाया और उनकी अधीनता स्वीकार की। वे धर्म-गुरु और शासककी तरह पूज्य समझे जाने लगे; पर शासनाधिकार प्रत्यक्ष रूपसे मिश्रके मामलुक सुल्तानोंके हाथोंमेंही रहा। तीसरे कालांशमें खलीफाकी गद्दी मिश्र देशके कैरो स्थानमें रही और यह वंश "अब्बासिया-ए मिश्र' खानदान कहलाता था। इस वंशके १६ खलीफे हुए और सन् १५०६ ई० तक इनका शासन माना जाता है।

चतुर्थ कालांश

सन् १५१७ ई० से वर्त्तमान समयतक

इधर इस्लामकी शक्ति इस समय जिस प्रकार अत्यन्त क्षीण हो गयी थी, उसी प्रकार उधर टर्कीके राजाका बल बहुत बढ़ गया था। सन् १५१७ ई०में सलीम प्रथमने मिश्रके मामलुक सुल्तानोंको हराकर मिश्रपर अधिकार किया। मिश्र देशपर अधिकार करनेके बाद सलीम प्रथमने अब्बासिया-ए मिश्र खानदानके अन्तिम खलीफा अल् मोतवक्केल अलेल्लाह इब्न उमर उल-हकीमके हाथोंसे यह उपाधि ग्रहण की,—"सुल्तानेस् सलातीन व हाकिमुल-उ हुक्कामीन, मालिकुल्बहरेन् व बररैन हामीदीन, खलीफा रसूल-अल्लाह, अमीर-उल मोमिनीन।"

इस प्रकार सलीम प्रथम उसमानिया खानदानके पहले

खलीफा हुए। ये जगद्विख्यात विजयी मुहम्मदके पौत्र थे, इन्होंने एशिया महादेशके जिन अंशोंमें रोमन साम्राज्य कायम हुआ था, उन्हें अपने अधिकारमें करके क्रिस्तानी शासनके बदले इस्लामी सल्तनत कायम की। उनके समयमें जितने मुसल्मान शासक थे, उनमें सुल्तान सलीम खाँ सबसे अधिक बलशाली थे। यद्यपि उन्होंने खलीफा होनेका अधिकार और उपाधि अब्बासिया-ए-मिश्र खानदानके अन्तिम खलीफाके हाथोंसे पायी थी, तथापि समस्त मुसल्मान-जगत्‌में उनके खलीफा होनेपर एक बड़ी खलबली मची। कितने ही मुसल्मानोंकी यह आपत्ति थी, कि ये हमारे धर्म-गुरु खलीफ़ाके पदपर नहीं बैठाये जा सकते हैं और साथही दूसरे पक्षवालोंका कहना था, कि ये ख़लीफा होनेके सर्वथा योग्य हैं और सब तरहसे खलीफाके पदके अधिकारी होनेका उनको हक है। लगातार दो-तीन वर्षों तक यह झगड़ा चलता रहा और बड़े-बड़े आलिम-फाजिलों और उलमाओंकी बहसके बाद वे सर्व-सम्मतिसे खलीफा माने गये। तबसे अबतक किसीने टर्की सुल्तानके खलीफ़ा होनेके विषयमें कोई प्रश्न नहीं उठाया।

सलीम प्रथमने खलीफाकी उपाधि पानेपर निर्वाचन प्रथानुसार मिश्र देशकी राजधानी कैरोके उलेमाको अपने यहाँ बुलवाया और उनके तथा टर्कीके उलेमाके द्वारा आयूबकी मस[illegible] खलीफा निर्वाचित किये गये।

इस प्रकारकी निर्वाचन-प्रथा-प्रचलि[illegible]
सुल्तानको राज्याधिकार पानेपर

सम्मति और शैखुल-इस्लामसे हज़रत अली साहबकी पवित्र तलवार ग्रहण करनी पडती है।' इसके साथही इस्लाम धर्मके संस्थापक पैगम्बर मुहम्मद साहबके स्मृति चिह्न स्वरूप उनका अंगा, हज़रत अली साहबके स्मृति-चिह्न स्वरूप उनके हाथकी तलवार और विजय पताका तथा कई और वस्तुएँ ग्रहण करनी पडती हैं। कहते हैं, बाग़दादके हत्याकाण्डके समयसे ये सब वस्तुएँ मिश्रकी राजधानी कैरोमें लायी गयी थीं और जब सलीम प्रथमने मिश्रपर अधिकार करके खलीफाकी उपाधि प्राप्त की थी, तभीसे ये चीज़ें टर्कोंकी राजधानी कुस्तुनतुनियामें सुरक्षित रखी गयी हैं।

'लेन पोल' नामक एक विख्यात इतिहास लेखकका कहना है, कि सोलहवीं सदीके प्रारम्भमें, मिश्र-विषयके बादसेही सलीम प्रथमकी सत्ताको फारसके सिया सम्प्रदायके मुसलमानोंने भलेही स्वीकार न किया हो, परन्तु भारतवर्ष, अफ्रिका, जावा, सुमात्रा, चीन, मलाया आदि सब देशों और द्वीपोंमें, जहाँ कहीं मुसल्मान थे, सबने उनकी सत्ता स्वीकार करली थी।

भारतवर्षमें रहनेवाले सारे मुसलमान राजाओंपर टर्कोंके सुलतानका प्रभाव कितना शीघ्र और कितना जबर्दस्त पडा था, इसका एक ऐतिहासिक प्रमाण दे देना अनुचित न होगा। उधर सन् १५१७ ई० में सलीम प्रथमने खलीफाकी उपाधि प्राप्त की थी और इधर भारतमें मुगल साम्राज्य स्थापित हो चुका था। दूसरे मुगल सम्राट् हुमायूँ भारतका शासन करते थे। सन् १५३३ ई० में हुमायूँने गुजरातके मुसल्मान राजा बहादुर शाह-

र चढाई की। मुगल सम्राट्की चढ़ाई करनेकी ख़बर पाकर हादुरशाहने टर्कीके सुल्तान सुलेमानके पास अपनी रक्षाके लिये सहायता करनेकी प्रार्थना की। सुल्तानने बहादुरशाहकी सहायता के लिये अपनी नौसेनाके ८० युद्ध-पोत भेज दिये थे। इस बातसे यही मालूम होता है, कि टर्कीके सुल्तानका प्रभाव भारतवासी मुसलमानोंपर बहुत अधिक पडा था और सुल्तान अपने शासना धिकारकी सीमाके बाहरवाले मुसलमानोंको भी सहायता प्रदान करनेको प्रस्तुत रहते थे। इसी प्रकार इतिहासमें इस बातके भी कितनेही प्रमाण हैं, जिनसे मालूम होता है, कि टर्कीके सुल्तानका प्रभाव जावा, सुमात्रा आदि देशोंपर यथेष्ट पडा था।

इस तरह हम देखते हैं, कि पैग़म्बर मुहम्मद साहब द्वारा जो इस्लाम साम्राज्य कायम हुआ था, उसकी राजधानी पहले मदीनेमें, फिर दमस्कमें, फिर बागदादमें, तब कैरोमें और अन्तमें कुस्तुनतुनियामें रही। इसी कुस्तुनतुनियाका साम्राज्य रूम साम्राज्य कहलाता है। इसके सुल्तान या ख़लफा उसमानिय वंशके कहलाते हैं।



रूस-साम्राज्य

प्राकृतिक विभव

पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा स्थापित इस इस्लाम साम्राज्य-को टर्कोंके सुल्तानोंके हाथमें आये आज चारसौ वर्षोंसे भी अधिक हुए। टर्कोंके सुल्तानोंके हाथमें जिस समय मुसल्मान साम्राज्यका शासन-सूत्र आया था, उसके कुछ काल बाद यूरोपके भिन्न भिन्न देशोंके शासकोंकी ओरसे एशिया आदि महादेशोंके भिन्न भिन्न देशोंमें कितनेही आदमी व्यापार-वाणिज्यके लिये भेजे जाने लगे थे। पहले पहल पश्चिमी यूरोपवाले अफ्रिका महा-देशके किनारे किनारे होकर महीनोंकी लम्बी समुद्र यात्रा करके हिन्दुस्थानमें आये थे। यहाँका धन वैभव देखकर वे बराबर यहाँ आने-जाने और व्यापार करने लगे। परन्तु आने-जानेका मार्ग इतनी दूरका था और ऐसा कठिन था, कि वे दूसरा मार्ग ढूँढने लगे। होते होते उन्होंने भूमध्यसागरका रास्ता ढूँढ निकाला। पीछे स्वेजकी नहर कटवाकर यह मार्ग सरल बनाया गया। तबसे वे इसी मार्गसे आने जाने लगे। इस जलमार्गसे आते-जाते समय जहाँ जहाँ बड़े बड़े नगर मिलने लगे, वहाँ-वहाँ भी पश्चिम यूरोपवाले अपने व्यापारी अड्डे बनवाने लगे।

पर चढाई की। मुगल सम्राट्की चढाई करनेकी खबर पाक
बहादुरशाहने टर्कीके सुल्तान सुलैमानके पास अपनी रक्षाके लि
सहायता करनेकी प्रार्थना की। सुल्तानने बहादुरशाहकी सहाय
के लिये अपनी नौसेनाके ८० युद्ध-पोत भेज दिये थे। इस बात
यही मालूम होता है, कि टर्कीके सुलतानका प्रभाव भारतवा
मुसलमानोंपर बहुत अधिक पड़ा था और सुल्तान अपने शास
धिकारकी सीमाके बाहरवाले मुसलमानोंको भी सहायता प्र
करनेको प्रस्तुत रहते थे। इसी प्रकार इतिहासमें इस बातके
कितनेही प्रमाण हैं, जिनसे मालूम होता है, कि टर्क
सुल्तानका प्रभाव जावा, सुमात्रा आदि देशोंपर यथेष्ट पडा था

इस तरह हम देखते हैं, कि पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा
इस्लाम साम्राज्य कायम हुआ था, उसकी राजधानी प
मदीनेमें, फिर दमस्कमें, फिर बागदादमें, तब कैरोमें और अ
कुस्तुनतुनियामें रही। इसी कुस्तुनतुनियाका साम्राज्य
साम्राज्य कहलाता है। इसके सुल्तान या ख़लफा उसमा
वंशके कहलाते हैं।



रूस-साम्राज्य

प्राकृतिक विभव

पैगम्बर मुहम्मद साहब द्वारा स्थापित इस इस्लाम साम्राज्य-को टर्कोंके सुल्तानोंके हाथमें आये आज चारसौ वर्षोंसे भी अधिक हुए। टर्कोंके सुल्तानोंके हाथमें जिस समय मुसल्मान साम्राज्यका शासन सूत्र आया था, उसके कुछ काल बाद यूरोपके भिन्न भिन्न देशोंके शासकोंकी ओरसे एशिया आदि महादेशोंके भिन्न भिन्न देशोंमें कितनेही आदमी व्यापार वाणिज्यके लिये भेजे जाने लगे थे। पहले पहल पश्चिमी यूरोपवाले अफ्रिका महा-देशके किनारे किनारे होकर महीनोंकी लम्बी समुद्र यात्रा करके हिन्दुस्थानमें आये थे। यहाँका धन वैभव देखकर वे बराबर यहाँ आने-जाने और व्यापार करने लगे। परन्तु आने-जानेका मार्ग इतनी दूरका था और ऐसा कठिन था, कि वे दूसरा मार्ग ढूँढने लगे। होते होते उन्होंने भूमध्यसागरका रास्ता ढूँढ निकाला। पीछे स्वेजकी नहर कटवाकर यह मार्ग सरल बनाया गया। तबसे वे इसी मार्गसे आने जाने लगे। इस जलमार्गसे आते-जाते समय जहाँ जहाँ बड़े बड़े नगर मिलने लगे, वहाँ-वहाँ भी पश्चिम यूरोपवाले अपने व्यापारी अड्डे बनवाने लगे।

इधर पूर्वीय यूरोपवाले अर्थात् रूसवाले भी अपने व्यापार विस्तारके साथ-साथ साम्राज्य विस्तार करने लगे। होते-होते इन यूरोपीय देशोंका व्यापार मध्य एशियाकी ओर भी बढ़ने लगा। रूसवाले अपना व्यापार-वाणिज्य उत्तर सागरकी राहसे जाकर नहीं कर सकते थे, क्योंकि उधर शीत इतना अधिक पड़ता है, कि उत्तर सागरका जल बारहों महीने वर्फ़ बना रहता है। इसलिये वे भी उन्हीं जल-मार्गोंसे आने-जाने लगे, जिन मार्गोंसे होकर पश्चिम यूरोपवाले आया-जाया करते थे।

व्यापार-मार्ग

इस तरह रूस और पश्चिम यूरोप अर्थात् ग्रेट-ब्रिटेन, पुर्तगाल आदि देशवालोंके बीच व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता उत्पन्न हुई और क्रमशः इस प्रतिद्वन्द्विताके फल-स्वरूप रूस और ग्रेट-ब्रिटेन आदि देशोंमें परस्पर विरोध-वैमनस्यका भाव जमने लगा। पश्चिम और मध्य यूरोपवालों तथा रूसियोंका मध्य एशियाके साथ व्यापार-वाणिज्य करनेका एकमात्र जल मार्ग कृष्णसागर है। मध्य यूरोपसे विस्तृत डैन्यूब नदी भी आकर इसी समुद्रसे मिलती है। अतः सारे पूर्वी और पूर्व-दक्षिण यूरोपका वाणिज्य इसी मार्गसे हो सकता है। कृष्णसमुद्रको सागर कहनेकी अपेक्षा बहुत बड़ी झील कहना अधिकतर उपयुक्त होगा। यह यूरोप और एशियाकी भूमिसे प्रायः घिरा हुआ है। इसका उत्तरी तट यूरोपीय रूसके दक्षिणी प्रान्तोंसे घिरा हुआ है।

रूसके सबसे अधिक उर्वर प्रदेश इसी समुद्रके तटपर हैं। रूसी गल्ला ओडेसा आदि इसी तटके बन्दरोंसे संसारके अन्य देशोंमें जा सकता है। संसारसे माल मँगानेका मार्ग भी रूसके लिये यही है। यहीं रूसकी मुख्य जल-सेना भी है। इसके पश्चिमी तटपर रूमानिया और बुलगेरिया हैं। दक्षिण-पश्चिम और पश्चिमी तट यूरोपीय टर्की और एशियाई टर्की कहाता है। पूर्वी तट आरमीनिया तथा ट्रांस काकेशस प्रान्तसे घिरा है। कहना नहीं होगा, कि चारों ओरके इन देशोंका वाणिज्य इसी समुद्रकी राह हो सकता है।

प्राकृतिक दुर्ग

इस इतने बड़े और महत्वके समुद्रको बाहरी भूमध्यसागरसे मिलानेवाली दो तङ्ग जल प्रणालियाँ हैं और दोनोंही यूरोपीय तथा एशियाई टर्कीके बीचसे गया हैं। इन दोनों प्रणालियोंके दोनों तटोंपर अच्छी पहाड़ियाँ हैं। इनके कारण इन तटोंपर राज्य करनेवालेके लिये अल्प सेना और कुछ पहाड़ी तोपोंकी सहायतासे कालासमुद्रका सारा व्यापार बन्दकर देना बायें हाथका खेल है। पानीके बम अगर इन प्रणालियोंमें डाल दिये जायें, तो बड़े बड़े भयङ्कर लड़ाऊ जहाज भी भीतर आनेका साहस नहीं कर सकते। इन तटोंके अधिकारी कृष्णसागरके तटवर्त्ती समस्त यूरोपीय देशोंका वाणिज्य चौपट कर सकते हैं, उनकी जल सेनाको चूहेकी तरह पिंजड़ेमें बन्द कर दे सकते हैं। न वे

अपनेको आप बचा सकते हैं और न बाहरी शक्तियाँ उन्हें कुमुकही पहुँचाकर बचा सकती हैं।

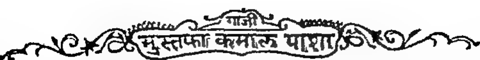
इन जल-प्रणालियोंके नाम बासफोरस और दर्रे दानियाल हैं। बासफोरस प्रणाली कृष्ण-सागरको मारमोरा समुद्रसे मिलाती है। इसके यूरोपीय तटपर कुस्तुनतुनिया और एशियाई तटपर स्कुटारी है। कुस्तुनतुनिया और स्कुटारीकी गोलाबारी बचा कर कोई जहाज बासफोरस दरवाजा पार नहीं कर सकता। मारमोरा समुद्र भी कृष्णसागरकी तरह है, पर उससे बहुत छोटा झील है, जो चारों ओरसे, इन दो जल-प्रणालियोंके सिवा, यूरोपीय और एशियाई तुर्कोंसे घिरा हुआ है। इस समुद्रसे भूमध्य-सागरमें जानेकी राह दर्रे दानियाल है। यह जल प्रणाली बास-फोरसकी अपेक्षा लम्बी और तङ्ग है। इसके यूरोपीय तटपर भयङ्कर पहाड़ोंसे भरा हुआ गैलीपाली प्रायद्वीप है और पश्चिमी तटपर एशिया तुर्कीके चानक आदि, सैनिक दृष्टिसे बड़े महत्वके स्थान हैं। इन जल-मार्गोंके अधिकाश तटपर बहुत दिनोंसे टर्कीके सुल्तानोंका अधिकार और नियन्त्रण रहा है। तमाम यूरोपीय राष्ट्र इसी कारण रूम साम्राज्यपर बड़ी तीव्र दृष्टि रखते थे। कितनीहो बार कितनेही यूरोपीय राष्ट्रोंने इसे अपने अधिकारमें करनेकी चेष्टा भी की, पर कोई फल न हुआ। इसके बहुतेरे कारणोंमें यह भी एक कारण है,कि यदि कोई राष्ट्र रूम साम्राज्य पर अधिकार करना चाहता,तो अन्य यूरोपीय राष्ट्र तुर्कोंका पक्ष लेकर उसके विरुद्ध खड़े हो जाते और फिर उस राष्ट्रको दबा

देते। इसी लिये कुस्तुनतुनिया सदा इस्लाम साम्राज्यका केन्द्र स्थान बनकर सुरक्षित रहा है। इसके अतिरिक्त कुस्तुनतुनिया की प्राकृतिक परिस्थिति भी ऐसी दृढ है, कि कोई भी आक्रमणकारी इसपर सरलता-पूर्वक अधिकार करना तो दूरकी बात है, चढाई भी नहीं कर सकता।

राजनीतिक अवस्था

सलीम प्रथमके पुत्र, सुलेमानने सुल्तानके अधिकार अपने हाथोंमें लेतेही बेलग्रेड रोड्स आदिपर कब्जा कर लिया और आस्ट्रियाके कई प्रान्तोंपर भी अधिकार कर इस्लाम धर्मका प्रचार करना आरम्भ किया। उनके इस कार्यक्रमको देख, समस्त ईसाई राष्ट्रोंके हृदयमें आतङ्क घुस गया। इस समय सुल्तानकी सल्तनत केवल यूरोपीय देशोंकी ओरही बढती नहीं थी, बल्कि उन्होंने इसी समय अफ्रिका महादेशका उत्तरी भाग भी अपने अधिकारमें कर लिया था, जिससे समस्त भूमध्य सागरपर इनका प्रभुत्व स्थापित हो गया था। सुलेमान द्वितीयका शासन सन् १५२० से सन् १५६६ तक रहा।

१६ वीं सदीके अन्तिम भागमें तथा १७ वीं सदीके प्रारम्भमें अर्थात् मुराद तृतीय, मुहम्मद तृतीय और अहमद प्रथम नामक दुर्बल सुल्तानोंके समय रूम-साम्राज्यकी अवस्था बहुत कुछ खराब हो गयी थी। मुहम्मद चतुर्थके शासन कालमें उसके परम नीतिनिपुण वज़ीर मुहम्मदके अपूर्व बुद्धि-बलसे रूम-साम्राज्य



रूम-साम्राज्यके भीतरही बहुतसे प्रजाजन बागी बन गये। इस अन्तरंग कलह और बगावतका परिणाम यह हुआ, कि सुलतान सलीम तृतीय सन् १८०७ ई०में और मुस्तफा चतुर्थ सन् १८०८ ई०में मार डाले गये *। अनन्तर मुहम्मद तृतीयने इस बगावतको रोक देनेके लिये बड़े उत्साहके साथ प्रबन्ध किया। उन्होंने अपनी सेनाको यूरोपियन प्रणालीसे सामरिक शिक्षा देना आरम्भ किया। इसमें उन्हें बहुत कुछ सफलता भी प्राप्त हुई और उनका सैन्य संगठन और सञ्चालन बहुत अच्छे रूपमें आ गया। परन्तु उन्होंने यूनानियोंके साथ जो कठोर बर्ताव किया, उससे प्राय समस्त यूरोपियन राष्ट्र रूम साम्राज्यके विरुद्ध खड़े हो गये। सन् १८२७ ई० में नेवारिनो स्थानमें रूम साम्राज्यको नौ सेनापर आक्रमण किया गया और उसे बहुत कुछ बर्बाद करके सन् १८२६ ई० में रूस अपना साम्राज्य विस्तार करते हुए आड्रियानोपलतक पहुँच गया। सन् १८२६ ई० की १४ वीं सितम्बरको आस्ट्रिया, रूस तथा रूम-साम्राज्योंके बीच एक सन्धि हुई। इस सन्धिकी शर्तोंके अनुसार सर्विया और के निकटस्थ प्रान्तोंके अधिकार निश्चित कर दिये गये और सम्पूर्ण स्वाधीनता स्वीकार की गयी।

मिश्रियोंकी स्वाधीनता

इसके बाद सुलतानने अपने साम्राज्यको और

* नेलसन्स एनसाइक्लो पीडियाके अनुसार

उसकी नींव सुदृढ़ करनेकी चेष्टा की, तो उसका परिणाम यह हुआ, कि मिश्र भी अपने राजनीतिक अधिकारोंको लेकर स्वतन्त्र हो गया। सुल्तान मजीदके शासनाधिकार ग्रहण करनेपर कई यूरोपीय शक्तियोंकी सहायता द्वारा रूम-साम्राज्य मिश्रवालोंके आक्रमणसे बचाया गया था। सन् १८४० ई० की लण्डनकी सन्धिके अनुसार यह निश्चय हुआ, कि वासफोरस और दर्रे दानियालमें कोई युद्ध पोत—चाहे वह किसी राष्ट्रका हो—जाने न पाये। सन् १८२३ ई० में टर्की और रूसके बीच एक और लड़ाई हुई। इस लड़ाईका कारण यह था, कि सम्राट् निकोलासने सुल्तानके पास कहला भेजा था, कि पैलेस्टाइन (फिलस्तीन) पर सभी ईसाइयोंका धार्मिक अधिकार है, अतएव हमारे अधिकार वहाँ रक्षित रहें। परन्तु सुल्तानको यह बात स्वीकार नहीं थी। इस लड़ाईमें तुर्कोंने बड़ी बहादुरीके साथ रूसियोंका सामना किया और डेन्यूबपर उनकी सेनाको, रोक अपनी रक्षा की। इधर पश्चिम यूरोपवाले राष्ट्रोंने रूसियोंको क्रीमियामें दबा रखा—आगे बढ़ने न दिया।

रूम और रूस

सुल्तान अब्दुल अजीजके शासनकालमें रूम साम्राज्यकी उन्नति और श्रीवृद्धिकी बड़ी आशाएँ की गयी थीं, पर उनके सुयोग्य, राजनीति कुशल मन्त्री फौआद और अली पाशाकी असामयिक मृत्युके कारण रूम साम्राज्यकी उन्नतिके विषयमें जो आशा की

गयी थी, उसपर सहसा पानी फिर गया। कुप्रबन्धके कारण साम्राज्यका खर्च इतना बढ गया था, कि सन् १८७५ में साम्राज्यका खजाना खाली हो गया। यह बात बाहरवालोंको भी मालूम हो गयी और रूस—जो अबतक तीखी नजर गडाये मौक़ा देख रहा था—फिर टर्कोंके विरुद्ध उठ खडा हुआ। रूम-साम्राज्यके प्रजावर्गने ख्याल किया कि रूसके इस प्रकार बार-बार आक्रमण करनेका मुख्य कारण सुल्तानकी कमज़ोरी तथा प्रधान मन्त्रीकी अयोग्यता है। कुछही दिनोंमें प्रजावर्गका यह ख्याल इतना दृढ़ होगया, कि उसने सुल्तान अजीजको ३० मई सन् १८७६ को गद्दीसे उतरनेके लिये बाध्य किया और उनके गद्दीसे उतरनेपर सुल्तानके पदपर मुराद पञ्चम अभिषिक्त किये गये।

इसके प्राय एक वर्ष बाद रूसने फिर रूमपर आक्रमण किया। इस बार भी तुर्कोंको विवश होकर रूसवालोंसे सन्धि करनी पड़ी। यह सन्धि सन् १८७८ ई० की ३ री मार्चको सैन स्टेफानोमें हुई थी। इस सन्धिके अनुसार सुलतानको रूमानिया और सर्वियाको पूर्ण स्वतन्त्रता देदेनी पडी। इस समय अब्दुल हमीद द्वितीय सुल्तान थे।

रूसको इस प्रकार बलवान् होते देख, और बराबर पूर्वकी ओर अग्रसर होनेकी चेष्टा करते देख, इङ्गलैण्डने टर्कोंकी सहायता करना स्वीकार किया, क्योंकि इसमें उसका भी स्वार्थ था। इङ्गलैण्डके सहायता देनेको खड़े होनेपर रूसने हाथ रोक लिया।

सन् १८७८ ई० में वर्लिनमें तमाम एशियाई प्रश्नोंका स्थायी रूपसे निपटारा कर देनेके लिये एक विराट् कांग्रेस हुई। इस कांग्रेसमें सभी सम्मिलित राष्ट्रोंकी ओरसे प्रतिनिधि उपस्थित हुए। इस कांग्रेस द्वारा आस्ट्रेया, बलगेरिया और टर्कीको राजनीतिक सीमा निर्धारित कर दी गयी। इसी समयमें यूनानने अपने सीमान्त प्रदेशोंको बाहरी आक्रमणोंसे बचानेके लिये सुरक्षित कर लिया। यद्यपि इस विषयमें टर्कीका विरोध था, तथापि अन्य राष्ट्रोंके मताधिक्यसे यूनानने अपनेको सुरक्षित बना लिया और बोसनिया तथा हर्जेगोविना आस्ट्रियाके शासनके अधीन कर दिये गये। सन् १८८१ ई० में सुल्तानको थेसाली और आर्टा प्रान्त भी ग्रीसके हवाले करने पड़े।

टर्की और जर्मनी

१८८० में जर्मनीके सामरिक अधिकारिवर्गने रूम साम्राज्यकी सेनाको नवीन यूरोपीय प्रणालीके अनुसार शिक्षा देने तथा उसका सगठन करनेका भार लिया। उन्होंने साम्राज्यभरकी सेनाके सगठन करनेके नियम तैयार किये। १८८७ ई० से ये नियम काममें लाये जाने लगे। अनन्तर दस वर्षो तक सुल्तानने बड़ी बुद्धिमत्ताके साथ शान्ति स्थापित रखी। लड़ाई झगड़ेकी नीतिसे बिल्कुल काम नहीं लिया गया। साथही सुल्तानने अपनी एक विशाल सेना वक्त जरूरतके लिये तैयार कर रखी थी। प्रिन्स अलेगजेण्डरने पूर्वीय रूमेलिया अपने राज्यमें मिला लिया; पर सुल्तान-

ने उनके इस कामका विरोध भी नहीं किया। परन्तु सन् १८९७ ई० के अप्रेल महीनेमें जब यूनानवालोंने जबर्दस्ती तुर्कों से लड़ाई छेड़ी, तब सुल्तानकी उस सञ्चित शक्तिका दुनियाको पता लगा। आदमपाशाने बड़ी आसानीसे यूनानियोंको हरा दिया। केवल कई सप्ताहोंमेंही इन्होंने यूनानियोंसे प्रायः सम्पूर्ण थेसाली ले, अपने कब्जेमें कर लिया, परन्तु मध्य तथा पश्चिम यूरोपवालोंने यूनानको बचा लिया। अन्तमें सन् १८९७ ई० की ४थी दिसम्बरको कुस्तुनतुनियामें सन्धि हुई।

अन्तरंग विप्लव

इसके बाद रूम-साम्राज्यको अन्तरङ्ग कलहका सामना करना पड़ा, शासनका प्रबन्ध बिगड़ जानेके कारण साम्राज्यके अन्तर्गत स्वदेशकी दुरवस्था देखकर कितनेही नवयुवकोंमें स्वदेश-रक्षाका भाव जागृत हो आया। उन्होंने "नवीन तुर्क" नाम देकर एक संघ स्थापित किया। इस संघमें रूम-साम्राज्यके नयी रोशनी-के कितनेही अधिकारी भी सम्मिलित होगये। रूम-सरकारने सन् १९०१ ई० में इन्हें बागी समझा और उनके साथ वैसाही सुलूक किया, जैसा बगावत फैलानेवालोंके साथ किया जाता है।—वे दबा दिये गये।

उसके कुछही दिनों बाद बलगेरियावालोंने मेसेडोनियाकी स्वतन्त्रताके लिये आन्दोलन करना शुरू किया। परन्तु कई राष्ट्रोंके टर्कोंके पक्षमें होनेके कारण सन् १९०५ ई० में यह झगड़ा

शान्त होगया। सन् १६०६ ई० में फ्रान्सके साथ टर्कोंका झगडा आरम्भ हुआ। इसका कारण यह था, कि टर्कोंने ट्रिपोलीके जेनत नामक ओएसिस पर * अपना अधिकार स्थापित करना चाहा था। फारसकी पश्चिमी सीमापरके कई स्थानोंको भी टर्कोंने अपने अधिकारमें करना चाहा। इसके कारण फारस-वालोंसे भी टर्की की लडाई होने लगी।

सन् १६०८ ई० से "नवीन तुर्क" सघवालोंने सलोनिकाको अपना केन्द्र स्थान बनाया। टर्कोंकी सेनामें भी कुशासनके कारण विद्रोहकी अग्नि सुलग चुकी थी। "नवीन तुर्क" संघवाले तत्कालीन रूम-साम्राज्यकी सरकारको शासनसे अलगकर नयी सरकार—नया मन्त्रि मण्डल—बनानेके लिये उतावले होरहे थे। होते होते २४ जुलाई सन् १६०८ ई० को नयी सरकार कायम हो गयी और पुरानी सरकार शासनधिकारसे हटा दी गयी। १७ वीं दिसम्बरको "नवीन तुर्क" सघके प्रधान नेता अहमद रजाके सभापतित्वमें एक विराट् सभा हुई। इसी सभामें नयी पार्लियामेण्टका उद्घाटन हुआ।

पर यह व्यवस्था भी स्थायी रूपसे न रही। चारही महीने बाद अर्थात् २४ अप्रेल सन् १६०६ को मैसीडोनियावालोंकी फौजने बलपूर्वक कुस्तुनतुनियामें प्रवेश किया। २६ ता को मन्त्रिमण्डलने शासनकार्यसे इस्तीफा दे दिया। २७ तारीखको राष्ट्रीय सभा-

* मरुभूमिमें कहीं-कहीं झरनोंके निकल आनेसे जो स्थान उपजाऊ हो जाता है, उसे ओएसिस कहते हैं।

की एक गुप्त बैठक हुई। इस सभामें अब्दुलहमीदको सुल्तानके पदसे अलग कर देना सर्व-सम्मतिसे निश्चय हुआ। उनके छोटे भाई मुहम्मद पञ्चम सुल्तान बनाये गये। सन् १९१० के अप्रेल महीने तकके लिये कुस्तुनतुनियामें 'मार्शलला' जारी किया गया। अप्रेलमें इस फौजी कानूनकी अवधि फिर एक वर्षके लिये बढ़ा दी गयी। इस समय तमाम रूम-साम्राज्यमें बड़ी भारी खलबली मच गयी थी—अवस्था डाँवा डोल होरही थी।

सन् १९११ ई० का वर्ष टर्कीके लिये बडाही बुरा था। मार्चके महीनेमें कुस्तुनतुनियामें फिर फौजी कानून जारी किया गया। इसी सालके सितम्बर मासके अन्तमें इटालीने टर्कीके सुल्तानके पास एक पत्र भेजा, जिसमें लिखा था, कि "ट्रिपोलीमें तुर्कोंने बडा उपद्रव मचा रखा है। तमाम अशान्ति और अरा-जकता फैल रही है। इसलिये यदि ऐसाही हाल रहा, तो हम ट्रिपोलीपर सामरिक अधिकार कर लेंगे।" इसपर सुल्तानने जो जवाब दिया, वह सन्तोष जनक नहीं समझा गया। अन्तमें २९ सेप्टेम्बरको टर्की और इटलीके दर्म्यान युद्ध छिड गया। ट्रिपालीकी सीमाओंपर सैनिक बैठा दिये गये और ५ वीं अक्तूबरको इटालियन सेना ट्रिपाली नगरमें प्रवेश कर पागयी। इसके बाद इटालियनोंने और भी कई बन्दरगाहोंपर आक्रमण किया।

टर्कीकी हीनावस्था

यूरोपीय महासमर

इस प्रकार हम देखते हैं, कि टर्कीकी अवस्था क्रमशः अत्यन्त शोचनीय होती चली आती है। चारों तरफ बलवान् शत्रु अपना जबर्दस्त पाँव जमाये आगे बढ़े चले आते हैं। उत्तरसे रूसी भालू रूस सम्राट् जारके आदेशानुसार टर्कीको निगलनेके लिये चला आरहा है। पश्चिमसे इटली और ग्रीसवाले उसका गला दबाये जारहे हैं। दक्षिणसे समुद्र-तट-वर्ती स्थानों तथा बन्दरगाहोंपर भी उसके प्रबल शत्रु अपना अधिकार जमाते चले जारहे हैं। कोई राष्ट्र उसका सच्चा सहायक नहीं दिखाई देता। सभी अपना-अपना मतलब गाँठनेको तैयार हैं।

ऐसी अवस्थामें सन् १९१४ ई० में यूरोपीय महायुद्ध छिड़ गया। इस युद्धमें प्रायः सभी यूरोपीय राष्ट्रोंने भाग लिया। टर्कीका कुछ अंश यूरोपमें है और कुछ अंश एशियामें है। इसलिये वह भी इस महायुद्धमें शामिल हुए बिना नहीं रह सका। जर्मनोंने उससे सहायता माँगी। यद्यपि टर्की पहले पहल इस युद्धमें शामिल होनेको प्रस्तुत न था, तथापि उसे कई अनिवार्य कारणोंसे शरीक होनाही पड़ा।

किन उपायोंसे टर्कोंको दबाया चाहते थे, इन बातोंको वे लोग बड़े गौरसे देख रहे थे और जिन लोगोंने रूम-साम्राज्यके प्रतिनिधि होकर सेवर्सके सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर किये थे, उनकी कमजोरियोंको भी दूरदर्शी लोग भली भाँति जानते थे। इन्हीं कारणोंसे वे लोग उस सन्धि पत्रको एक रद्दी कागजके टुकड़ेसे अधिक मूल्यवान् नहीं समझते थे।





गाजी मुस्तफा कमाल पाशा।

urman Press, Calcutta

टर्कीका उद्धार-कर्त्ता

जन्म और बाल्यकाल।

टर्कीके गम्भीर विवेचक, दूरदर्शी आशावादी लोग जिस नये देशोद्धारक वीरकी प्रतीक्षा कर रहे थे, वह अन्तमें कार्यक्षेत्रमें उतरही तो गया। या सुप्रसिद्ध मुसल्मान लेखक और राजनीतिज्ञ याकूर कदरीके शब्दोंमें टर्कीका यह सच्चा सपूत सचमुच 'तुर्क जातिके पुनरुद्धारके इस नवीन युगके लिये ईश्वरका एक नया अवतार है'।

इस तुर्क युवकका नाम 'अल गाजी मुस्तफा कमाल पाशा' है। आज समस्त संसार इस तुर्क वीरके नामसे पूर्णतया परिचित है। सारा मुसल्मान जगत् आज इनकी ओर आशा और विश्वास की दृष्टिसे देख रहा है। इनके पूर्वज रूमेलियाके रहने वाले थे। इनके पिता टर्की सरकारके चुंगी विभागमें एक साधारण कर्मचारी थे। वे अपने कार्यवश सपरिवार सलोनिकामें रहते थे। वहीं सन् १८८० ई० में मुस्तफा कमालका जन्म हुआ। पिता माताका लाड़ प्यार और आदर-यत्न पा, बालक कमाल दिन दिन बड़ा होने लगा।

प्राय सभी आदमी बाल्यकालमें चंचल स्वभावके होते हैं;

परन्तु वालक कमालमें उतनी चंचलता नहीं थी। वह आरम्भसेही अपने भविष्य जीवनके गम्भीर कार्यौंकी सूचना देनेके लिये ही मानों, स्थिर, गम्भीर और धीर-भाव धारण किये रहता था। बालक किसी छोटीसी चीजके लिये भी जो उसको भा जाती है, मचल पड़ते हैं, पर वालक कमालमे यह बात न थी। वह उसी समयसे सामान्य वस्तुओंकी स्पृहा नहीं रखता था।

शिक्षा-प्राप्ति

पिता-माताने जब देखा, कि वह पाठाभ्यास करने योग्य हुआ है, तब उसे सलोनिकाके एक प्राथमिक शिक्षा दी जानेवाली पाठशालामें भर्ती करा दिया। पढ़ना-लिखना सीखनेमें उसका विशेष अनुराग उत्पन्न हुआ।

बालक कमालके पिता उसे अत्यन्त छोटी अवस्थामेंही छोड़, इस संसारसे विदा हो गये। वे न तो ऐसे ऊँचे पदाधिकारीही थे और न मोटी तनखाहही पाते थे, जो अपनी मृत्युके पश्चात् अपने परिवारवालोंके लालन पालनके लिये कोई मोटी रकम छोड़ जाते। इस निराश्रय, नि सहाय अवस्थामें बालक कमालके पढ़ाने लिखानेका भार कौन लेता? परिवारवालोंके खाने पीनेका खर्च किसी तरह तो चल भी सकता था, पर उस बालकको पढ़ाने-लिखानेका खर्च कहाँसे चलता?

परन्तु 'जापर जाकर सत्य सनेह, सो तेहि मिले न कछु सन्देह' के अनुसार बालक कमालके अध्ययनके मार्गमें रुकावटें होनेपर

भी उसने उसे प्राप्त करके छोडा। पढने लिखनेमें उसका इतना दृढ अनुराग था, उसमें ऐसे-ऐसे आकर्षक गुण विद्यमान थे, कि जो कोई उसके संसर्गमें आ जाता, वही उसे प्यार करने लगता। अध्यापकोंने उसकी अध्ययन-शीलता देख, उसे नि शुल्क शिक्षा देनेकी व्यवस्था कर दी। कमालकी बुद्धि बडी प्रखर थी। पाठशालामें अपने साथ पाठाध्ययनमे-प्रतियोगिता करनेवालोंसे वह हमेशा ऊपर रहकर भी उनके साथ अपनी सच्ची सहानुभूति रखता और उन्हें अपना मित्र बना लेता था।

शस्त्रास्त्रोंकी शिक्षा

प्रारम्भिक शिक्षाशालाका अध्ययन समाप्त होने भी न पाया था, कि एक दिन उनके किसी सहपाठीसे लडाई हो गयी। अध्यापकने इसपर उन्हें मारा-पीटा। दूसरेही दिनसे इन्होंने पाठशाला जाना छोड दिया।

इसके बाद कमालने माताकी आज्ञाके विरुद्ध छिप छिपकर मोनास्तरकी माध्यमिक सैनिक-शिक्षा-शालामें अध्ययन करना आरम्भ कर दिया।

प्रत्येक विश्वविद्यालयकी भिन्न भिन्न परीक्षाओंमें सम्मिलित होनेवाले विद्यार्थियोंकी उम्रकी एक सीमा होती है, अर्थात् अमुक परीक्षामें सम्मिलित होनेके लिये विद्यार्थीकी उम्र कम से कम कितनी होनी चाहिये, इसका एक निर्द्धारित नियम रहता है। बालक कमाल प्राय सभी प्रकारकी सैनिक परीक्षाओंमें निर्द्धारित

उम्र पूरी होनेके पूर्वही सम्मिलित हुआ और सदा परीक्षोत्तीण होता गया। इस प्रकार प्रारम्भिक शस्त्र-विद्याका अध्ययन समाप्तकर नवयुवक कमाल शस्त्र-विद्याकी उच्च शिक्षा प्राप्त करनेके अभिप्रायसे कुस्तुनतुनियाके सैनिक महाविद्यालयमें भर्ती हुए।

इनकी माताकी बडी इच्छा थी, कि कमालको मुसलमान-धर्म गुरु और उपदेशक बनायें, परन्तु कमालकी इच्छा वीर योद्धा बनकर सच्चा युग धर्म-गुरु बननेकी थी। अपनी इस इच्छाको पूर्ण करनेके लियेही इन्होंने सामरिक शिक्षा प्राप्त करना आरम्भ किया। यहाँ इन्होंने बड़े आग्रह और चावके साथ शस्त्रास्त्रोंका प्रयोग तथा युद्धके लिये सैनिक कवायद सीखी। यहीं इन्होंने ग्रैजुयेटकी उपाधि प्राप्त की।

विशेषताएँ

प्राय: एक वर्ष हुआ, मैडेम बर्थी जार्जेस् गालिस नामक सुप्रसिद्ध लेखिका मुस्तफा कमाल पाशाके पास गयी थीं। कमाल पाशाके व्यक्तित्वकी विशेषताका वर्णन करते हुए उन्होंने लिखा है, कि कमाल पाशामें कितनीही विचित्रतापूर्ण शक्तियाँ होनेकी बातें सुननेमें आती हैं।

वे अपनी अत्यन्त बलवती इच्छाको भी अपने हँसते हुए, शान्त और चित्ताकर्षक चेहरेके अन्दर इस तरह छिपाये रख सकते थे, कि किसीको उनका मनोभाव मालूमही नहीं हो

सकता था। उनके साथी-समाजी सभी उन्हें इतना मानते और उनकी अधीनता इस प्रकार स्वीकार करते, मानों वे उनके कोई अफसर हों, परन्तु वे खुद किसीपर हुकूमत करनेका भाव नहीं दिखलाते थे। इसका प्रत्यक्ष कारण उनमें सर्वाधिक योग्यताका होना था।

वे खुद नेता होनेका भाव नहीं रखते थे, तो भी लोग उन्हें अपना नेता समझते थे। अध्ययन कालमें वे जिधर जाते, उधरही उनके पीछे-पीछे उनके साथी सहपाठी लगे रहते और उनके साथ-साथ फिरा करते थे। वे जिससे जो कहते, उसे माननेको वह तुरत तैयार हो जाता था।

विज्ञान और गणित शास्त्रमें वे अपना सानी नहीं रखते थे। कहते हैं, इनके गणिताध्यपकका नाम भी मुस्तफा था। वे बालक मुस्तफाकी गणित शास्त्रमें असाधारण व्युत्पत्ति और योग्यता देखकर बड़े प्रसन्न रहते थे। एक दिन गणितका एक उलझन सुलझा देनेपर वे इनपर इतने प्रसन्न हुए, कि उन्होंने मुस्तफाके नामके साथ 'कमाल' शब्द जोड़ दिया। उसी दिनसे ये मुस्तफा कमाल कहलाने लगे।

मुस्तफा कमाल कभी कभी बड़ीही रस पूर्ण कविताओंकी रचना किया करते थे; परन्तु उनकी कविताओंमें शृङ्गार, हास्य आदि मधुर रसोंका समावेश नहीं होता, बल्कि वीर और करुण रसही अधिकांशमें पाया जाता है। उनके हृदयमें स्वदेशके प्रति जो अगाध प्रेम था, उसीके आवेशमें आकर वे कविता लिखा करते

थे। स्वेच्छाचारी राजाके अत्याचारोंके विरुद्ध वे बड़ीही उत्तेजनापूर्ण कविताएँ लिखा करते थे। अध्ययन कालमेंही स्वतन्त्रता, विश्वजनीन प्रेम तथा जीवन और मरणके सङ्गीत गा-गाकर उत्साह हीन, निराश तुर्कों के हृदयोंमें आशा और विश्वासका सञ्चार करते, सोये हुओंको जगाते और मृतवत् पड़े हुओंमें जान डालते हुए फिरा करते थे।

प्रौढावस्था प्राप्त होनेतक साधारणतः सभी मनुष्योंमें कुछ-न-कुछ अनुकरण-प्रियता दिखाई देती है। इस अनुकरण प्रियतासेही कहीं कहीं लाभ दिखाई देता हो, पर वह लाभ बहुतही सामान्य है, बल्कि इसकी मात्रा बढ़ जानेसे प्रायः सर्वथा हानिही होनेकी सम्भावना रहती है। इससे मनुष्यका जितना लाभ होता है, उसकी अपेक्षा कई गुनी अधिक हानि यह होती है, कि मनुष्य क्रमशः केवल दूसरोंका अनुकरणही करने लग जाता है और अपने स्वतन्त्र विवेकसे काम नहीं लेता। इस प्रकार वह अपनी खास शक्तियोंको विकसित तो करही नहीं सकता, साथ-ही उसकी उपयोगिताको भी भूल जाता है। कमाल पाशाके विषयमें उनका कोई घनिष्ठ से घनिष्ठ मित्र भी यह बात दावेके साथ नहीं कह सकता, कि उन्होंने कभी—किसी बातमें—किसी-का अनुकरण किया हो। बाल्यकालसेही स्वावलम्बी होनेके कारण उनकी बुद्धि इतनी स्वतन्त्र-गामिनी थी, कि उनपर कभी किसी-का प्रभावही नही पड़ता था। जबतक उनकी स्वतन्त्र विवेक बुद्धि किसी बातको तर्क-युक्तियों द्वारा ठीक न समझ लेती, तब

रय हैं उसे दूसरे किसीकी वातोंसे प्रभावान्वित होकर ठीक मान लेनेको तैयार नहीं होते थे।

विभिन्न-संवाद

मुस्तफा कमाल पाशाके अध्ययन-कालिक जीवनके विषयमें अबतक भिन्न-भिन्न विलायती समाचार-पत्रोंके कई विभिन्न लेखकों और संवाददाताओ द्वारा जो वातें जानी गयी हैं, उनमें कुछ पार्थक्य दिखाई देता है। कुछ लोगोंका कहना है, कि 'जब ये सलोनिकामें अध्ययन कर रहे थे, तब किसी दिन अपनी कक्षाके एक सहपाठी विद्यार्थीसे लड पडे। इसपर जो अध्यापक इनके क्लासमें पढा रहा था, उसने इन्हें काफी सजा दी और इन्होंने भी उसी दिनसे स्कूलमें जाना छोड दिया और उनका पढना बन्द हो गया।'

दूसरी ओर मैडेम गालिस जो १०-१२ महीने पहले मुस्तफा कमाल पाशासे मिलने गयी थीं, लिखती हैं, कि 'सलोनिकाके स्कूलका अध्ययन समाप्त करनेपर इन्हें इनकी तीव्र बुद्धि और योग्यताके लिये छात्र वृत्ति मिली और उसीकी सहायतासे वे मोनास्टिरकी माध्यमिक शिक्षाशालामें शिक्षा प्राप्त करने लगे।'

इसके अतिरिक्त उपर्युक्त लेखिकाका यह भी कहना है,-कि 'मुस्तफा कमालमें एक विचित्र आकर्षिणी-शक्ति है और क्या स्कूलमें, क्या घरमें सर्वत्र वे अपनी इस अद्भुत आकर्षिणी शक्तिसे

काम लेते हैं।' सुतरां किसी सहपाठीसे उनकी लड़ाई-भिड़ाई होनेकी बात अस्वाभाविक जान पड़ती है।

इसी प्रकारके और भी कई विभिन्नता-पूर्ण समाचार प्राप्त हुए हैं, पर हमें वर्त्तमान मुसल्मान-जगत्‌के एकमात्र आधारस्तम्भ, टर्कीके त्राता, गरीबोंके रक्षक, दीनजनोंके सहायक, अत्याचारियोंके संहारक और शान्तिके विधायक गाजी मुस्तफा कमाल पाशाके महान् और विशद जीवनसे जो शिक्षा ग्रहण करनी है, उसमें इन सामान्य पार्थक्योंसे कुछ आता-जाता नहीं है। अतएव हम इन सामान्य बातोंकी ओर यदि ध्यान न भी दें, तो कोई विशेष क्षति नहीं है।

बोलशेविक रूसके अधिष्ठाता और नेता मोशिये लेनिनके विषयमें भी ऐसे कितनेही पार्थक्यपूर्ण सवाद आया करते थे। मोशिये लेनिनके विषयमें तो यहाँतक देखा गया है, कि एकही दिन, एकही तारीख और एकही समयकी घटनाका उल्लेख करते हुए, विलायतके चार समाचार-पत्रोंके सवाददाताओंने चार विभिन्न स्थानोंसे सवाद भेजा है, कि मैंने आज लेनिनको अमुक स्थानपर व्याख्यान देते देखा। यही नहीं, उन्होंने अपने व्याख्यानमें क्या कहा, यह भी लिख मारा था।

महात्मा गाँधीके विषयमें भी भारतवर्षमें ऐसी कितनीही अफवाहें नासमझ लोगोंने उड़ा दी थीं; परन्तु वे तो अफवाहें थीं। उनपर कोई विश्वास करता या नहीं करता; कोई प्रमाण तो नहीं था? पर मोशिये लेनिनके विषयमें जिन संवाददाताओंने

ऐसी बातें लिखीं और वे समाचार-पत्रोंमें प्रकाशित भी कर दी गयी, उनका अन्तमें जब भण्डा-फोड हुआ, तब चारों या कम से-कम उनमेंसे तीनकी सचाईका तो दुनियाको पता लग गया।

सारांश यह, कि इस तरहके कितनेही भ्रान्ति-उत्पादक तथा झूठे समाचार संवाद-पत्रोंके सवाद-दाताओंकी गलतीसे प्रकाशित हो जाते हैं। परन्तु सत्यका सूर्य मिथ्याके बादलोंकी आड़में तभीतक छिपा रह सकता है, जबतक सत्यताको प्रकट करनेवाली तेज हवाका झकोरा उसे उडाकर दूर न हटा दे।

अबतक मुस्तफा कमाल पाशाके जीवनके विषयमें जो संवाद भारतवर्षमें आये हैं, उनके भेजनेवाले सर टौन शेड, मि० चेयर प्राइस, मैडेम यर्थी जार्जेज गालिस और कुस्तुनतुनियाके एक सुप्रसिद्ध दैनिक पत्रके सम्पादक और कोलम्बिया युनिवर्सिटीके ग्रेजुयेट मुहम्मद अमीन साहब आदि कई बड़े-बड़े नामी और यशस्वी लेखक हैं।

मुस्तफा कमाल पाशाके आश्चर्यजनक कार्य्योंका समाचार पाठ करके उनके जीवनके विषयमें जाननेकी इच्छा प्रत्येक मनुष्य को हो सकती थी। यह बिल्कुल स्वाभाविक था। अत जिन सज्जनोंके द्वारा हम भारतवासियोंको मुस्तफा कमाल पाशाके जीवनके विषयके ये संवाद प्राप्त हुए हैं, वे हमारे धन्यवादकेही भाजन हैं। उनकी भिन्न भिन्न रिपोर्टोंमें सामान्य विभिन्नता आगयी है सही और उस विभिन्नतासे अनायासही भ्रान्ति भी उत्पन्न होती है, पर यह भ्रान्ति भी समय आनेपर आपही आप

दूर हो जायेगी और दुनियाके आगे मुस्तफा कमालके सच्चे जीवनका चित्र खिँच जायेगा।

शरीरका गठन

मुस्तफा कमालपाशाका शरीर सुन्दर और सुडौल है। इनका शरीर न तो स्थूलही है और न अत्यन्त कृश। सब अंग हृष्ट-पुष्ट और पेशियाँ गठी हुई हैं। चेहरेपरकी हड्डियाँ उभरी हुई हैं। आँखें नीली और नुकीली हैं। इनके बाल साफ-सुथरे, कोमल और भूरे रङ्गके हैं। मूछे छोटी और सुन्दरता पूर्वक छँटी हुई हैं। इनका कद न बहुत छोटाही है, न बहुत लम्बा, शरीरके मुताबिक और मझोला है। भुजाएँ लम्बी और उँगलियाँ पुष्ट हैं।

सामरिक प्रवृत्ति

'होनहार बिरवानके होते चिकने पात' वाली कहावतको अक्षरश सत्य प्रमाणित करनेके लियेही, मानों कमाल पाशा में बाल्यकालसेही सामरिक प्रवृत्ति देखी जाती थी। अपने बचपनसेही वे बड़े वीर पूजक थे। कहते हैं, ये जब आठ दस वर्षके सुकुमार बालक थे, तभीसे गलियोंमें रास्तोंमें खेलते समय जब तुर्क-योद्धाओं, सैनिकों और खासकर सैनिक अफ़सरोंको देखते थे, तो उनकी वीर वेश भूषा देख-देखकर ये मन ही-मन मुग्ध हो जाते थे। इनकी इच्छा होती कि मैं भी ऐसाही

बनूँ। दुनिया देख रही है, कि वे जैसा बनना चाहते थे, आज सचमुच वैसेही बन गये हैं।

स्वदेश-प्रेम

जब वे कुस्तुनतुनियाके सैनिक-विश्वविद्यालयमें भर्ती हुए, तभीसे उन्हें अपने देशकी राजनीतिक परिस्थितिका ज्ञान उत्तरोत्तर वृद्धि-प्राप्त होने लगा। शासनके दोष दिखाई देने लगे। शासकोंको बद-इन्तजामी और लापरवाहीसे देश किस भयङ्कर सङ्कटके समीप पहुँचता चला जारहा है, यह बात भी उन्हें मालूम होने लगी।

मनुष्यके हृदयपर किसी बड़े से बड़े नेता और उपदेशकके उपदेशोंके या बड़े से बड़े विद्वान् द्वारा लिखित पुस्तकोंके अध्ययनसे जो असर नहीं पड़ता, वह स्वानुभव द्वारा पड़ता है। स्वदेश प्रेम और स्वदेशका उद्धार करनेका भाव भी मनुष्यके हृदयमें अपने ऊपर कष्टों और मुसीबतोंके आनेसे जिस मात्रामें उद्दीपित होता है, उस मात्रामें किसी बड़े भारी स्वदेश प्रेमीके व्याख्यानोंसे नहीं होता। कमाल पाशा बाल्यकालसे मुसीबतोंकी गोदमें पले हुए थे, इसलिये देशकी परिस्थितिको वे भली भाँति समझ रहे थे।

क्रांतिकारी विचार

क्रमश जब इन्हें अपने देशकी दुरवस्थाका और उसपर आने-

वाले भावी सङ्कटका सम्यक् ज्ञान हो गया, तब उसका प्रतिकार करनेके लिये उपाय सोचने लगे। ऐसी अवस्थामें मनुष्यको स्वभावत जो क्रान्तिकारी उपाय सूझता है, वही इन्हें भी सूझा। उन्होंने क्रान्ति-सम्बन्धी कई पुस्तकें भी पढी थीं। कई जब्त की हुई पुस्तकोंके साथ साथ 'वतन' नामक एक नाटक भी पढा था। इस पुस्तकका इनपर बडा असर पडा। अन्तमें अपने देशमें भी क्रान्ति करनेपर वे आमादा हो गये और अपने अभीष्टकी सिद्धिके लिये क्रान्ति करनेका क्षेत्र तैयार करनेमें लग गये।

इस समय सुल्तान अब्दुल हमीद खाँ द्वितीयका शासन था, यह हम पहलेही कह आये हैं। प्रजावर्ग शासकों और अधिकारियोंकी स्वेच्छाचारितासे आरो आ गया था। प्रजापीडक साम्राज्यवादी शासक अपने विरोधियोंका दमन करनेके लिये जो उपाय करता है, सुल्तान अब्दुल हमीदने भी वैसेही उपाय रच रखे थे।

क्रान्ति और जन सत्ताके इस वर्त्तमान युगमें वे अपनी एकछत्र शक्तिको कायम रखना चाहते थे। सुल्तान अब्दुल हमीद भी, उन अहम्मन्य सत्ताधिकारियोंकी तरह, जो वर्त्तमान युगके बढते हुए प्रवाहकी ओरसे अपनी आँखें मूँदकर गये-गुजरे जमानेके स्वप्न देखते हैं, यह समझते थे, कि वे अपने गुप्तचरोंकी सहायतासे टर्कीमें क्रान्ति और जन-सत्ताकी लहरको रोक लेंगे। परन्तु जब किसी देशमें स्वदेश प्रेमकी जागृतिकी नदीमें
आजाती है और लोकमतका प्रवल प्रभञ्जन उ

देता है, तब फिर उसे रोकनेके लिये कौन आगे बढ़नेकी हिम्मत कर सकता है? जो कोई उसके मार्गमें विघ्न डालनेके लिये आ खड़ा होता है, वह करारेपरके वृक्षकी तरह जड़ मूलसे उखड़ कर सदाके लिये विनष्ट हो जाता है। रूसके अत्याचारी ज़ारकी जो दशा हुई, वह संसारकी आँखोंके सामने इस बातका एक प्रत्यक्ष प्रमाण है—एक तरोताज़ा नज़ीर है।

अस्तु; सुल्तान अब्दुल हमीदने भी इस प्रतिघातिनी शक्तिको अन्यान्य स्वेच्छाचारी शासकोंकी तरह दबा देनेकी चेष्टा की थी। तमाम टर्कीमें उनकी खुफिया पुलिसका जाल फैला हुआ था, तथापि क्रान्तिके भावोंको फैलानेवालोंके उद्योगको दबानेमें वह असमर्थही रहा।



क्रान्तिकारी कमाल

अध्ययन-कालके कार्य्य

मुस्तफ़ा कमालका कुस्तुनतुनियाके विद्यालयका अध्ययन अभी समाप्त नहीं हुआ था। ग्रेजुयेट होने और डिप्लोमा पानेमें अभी और कुछ दिन बाक़ी थे। इसी समय मुस्तफ़ा कमालने अपना क्रान्तिकारी विचार दृढ़ कर लिया और उसके अनुसार काम शुरू कर दिया। उन्होंने यह संकल्प कर लिया, कि षड्यन्त्र करके टर्कीकी वर्त्तमान सरकारको पलट दिया जाये।

उद्देश्य स्थिर हो जानेपर उन्होंने कार्यमें हाथ लगाया। सबसे पहले उन्होंने अपने कई मित्रोंसे अपना इरादा ज़ाहिर किया। इनके साथी समाजी और मित्रोंपर पहलेसेही इनकी धाक जमी हुई थी। वे इनकी बड़ी इज्ज़त करते थे। अत वे इनकी बातें मान गये।

सबकी रायसे एक गुप्त संस्था स्थापित की गयी। इस संस्थाके द्वारा सर्व-साधारणमें स्वतन्त्रता और प्रजा-सत्ता आदिका भाव जागृत करनेके लिये, लोकमत अपने पक्षमें बनानेके लिये, प्रजा और राजाके अधिकार समझानेके लिये, प्रजाके स्वत्वपर शासकोंकी दस्तन्दाज़ी करनेकी बातें प्रकट करनेके लिये

और प्रजा सत्तात्मक शासन स्थापित करनेके उपाय बतानेके लिये एक समाचार-पत्र प्रकाशित किया।

इस गुप्त संस्थाके सभापतित्व तथा उसके मुख पत्रके सञ्चालक और प्रधान सम्पादकका कार्य भार मुस्तफा कमालने स्वय ग्रहण किया। कुछ दिनोंतक यह कार्य बडे जोरो से चलता रहा। सर्वसाधारणमें इस समाचार पत्र द्वारा एक नवीन जागृतिका भाव आने लगा।

इधर मुस्तफा कमाल अपनी कार्य-सिद्धिके लिये अपना कार्य बडी योग्यता और सफलताके साथ कर रहे थे। उधर सुल्तान-के गुप्तचर इस गुप्त संस्था और उसके मुख-पत्रके संचालकों और लेखकोंकी खोजमें फिर रहे थे। मुस्तफा कमाल इन खुफियोंका हाल अच्छी तरह जानते और सदा अपने कार्य बडी सतर्कता और सावधानताके साथ करते थे। कमाल अगर चालाक और सतर्क थे तो, ये खुफिये भी बडे काँइयाँ थे। उन्होंने पता लगाकरही छोडा। पर पहले कोई गिरफ्तार नहीं किया जा सका।

कुछ दिनों बाद सरकारकी ओरसे स्कूलके अधिकारियोंके नाम एक चेतावनी आयी, कि 'स्कूलके कुछ लडके राज विद्रोहा-त्मक कार्यमें सम्मिलित हो रहे हैं; अतएव उन लडकोंका पता लगाया जाये और पता लगनेपर उन्हें दण्ड दिया जाये।' साथही भविष्यमें ऐसा आचरण करनेवाले विद्यार्थियोंको कठोर दण्ड देनेकी धमकी भी दी गयी थी।

यह सब कुछ हुआ, परन्तु मुस्तफा कमालका काम इन धमकियों और चेतावनियोंसे भला कब रुकनेवाला था ? उन्होंने और भी सतर्कताके साथ अपना काम ज़ारी रखा। उनके अदम्य उत्साह और अबाधित गतिमें कौन रुकावट डाल सकता था ?

अध्ययनके पश्चात्

रूमकी राजधानी कुस्तुनतुनियाके सैनिक विश्वविद्यालयने मुस्तफा कमालको सेना नायकका पद प्रदान किया। सेनामें वे "लेफ्टिनेण्ट" बनाये गये। इस समय उनकी अवस्था केवल २२ वर्षों की थी। सेनामें प्रवेश करनेपर भी इन्होंने अपना गुप्त आन्दोलन जारी रखा। अपने अध्ययनकालमें इन्होंने जो गुप्त समिति स्थापित की थी, अब स्तम्बोलमें उसका सदर मुकाम कायम करके काम करना शुरू किया।

खुफिया विभागवाले पहलेसेही इनके पीछे पड़े हुए थे। उनमेंसे एक इनके साथ हो लिया और बराबर इनके साथ रहकर सब कामोंको अच्छी तरह देख लिया। इसी खुफियाने इन्हें तथा उस गुप्त समितिके कई अन्यान्य सदस्योंको एक दिन गिरफ्तार करा दिया।

कहते हैं, जिस दिन इन्हें विश्व विद्यालयका 'डिप्लोमा' अर्थात् सैनिक शिक्षामें उत्तीर्ण होनेका प्रमाण पत्र मिला, ठीक उसी दिन यिल्डीजसे एक सरकारी पत्र भी मिला। इस पत्र द्वारा मुस्तफा कमाल यिल्डीज बुलाये गये और वहीं उनपर मामला

चलाया गया। इनके राजद्रोही साबित होनेपर ये जेलमें ठूंस दिये गये। यहाँ ये एक काल कोठरीमें बन्द कर दिये गये। इसी काल कोठरीमें इन्हें लगातार तीन मासतक रहना पड़ा।

इस परिस्थितिमें यदि मुस्तफा कमालके बदले और कोई आदमी होता, तो सम्भव था, कि वह अपना विचार बदल लेता। पर मुस्तफा कमालका मस्तिष्क इन कठिनाइयोंसे डाँवा-डोल होनेवाला न था। वे जैसी दृढ़ताके साथ पहले कार्य करते थे, अब भी—कारागारमें आबद्ध होनेपर भी—उसी प्रकार-की स्थिरमतिसे अपने पूर्व निर्दिष्ट अभीष्टकी सिद्धिकी ओर अग्रसर होनेको प्रस्तुत थे।

निर्वासित अवस्थामें

अस्तु, तीन महीनेतक काल कोठरीमें आबद्ध रखकरही टर्की-सरकार शान्त नहीं हुई। उसने सन् १९०२ में उन्हें देश-निर्वासनका दण्ड देकर सीरियाके एक एकान्त प्रदेशमें भेज दिया और समझ लिया, कि अब बला टल गयी। परन्तु युवक कमाल जैसे "कार्यं वा साधयेम् शरीरं वा पातयेम्" की नीतिके अनुसार चलनेवाले दृढ़ प्रतिज्ञ मनुष्यके सहायक जगदीश्वर हुआ करते हैं।

यहाँ, उस एकान्त सुदूर विदेशमें भी, मुस्तफा कमाल अपने उद्देश्यसे विरत नहीं हुए। यहाँ भी उन्हें अपनेही समान उद्देश्यों-का एक आदमी मिल गया। यह आदमी भी राजनीतिक अप-

वहाँके गवर्नरसे तो विशेष कुछ सहायता नहीं मिली, पर इतना अवश्य हुआ, कि ये कुछ दिनोंतक वहाँ गुप्त भावसे रह सके। प्राय: आठ महीनेतक इनपर किसीकी दृष्टि नहीं पड़ी।

जिस समय ये सैलोनिका पहुँचे, उस समय वहाँ टर्कोंकी सरकारको बदलदेनेके लिये बड़े जोरोंका आन्दोलन चल रहा था। कुछ राज-विप्लवी नवयुवकोंकी सहायता पाकर इन्होंने यहाँ भी अपना काम जारी कर दिया, पर इस बार भी ये अधिक दिनोंतक अपना कार्य न कर सके। क्योंकि गुप्त भावसे कबतक रह सकते थे? अन्तमें भेद खुलही गया और इन्हें सैलोनिकाका काम स्थगित रखकर वहाँसे हट जाना पड़ा।

परन्तु इसी समय इनके कई मित्रोंके बीच बिचावमें पड़ जानेके कारण इनके अपराध क्षमा कर दिये गये और इन्हें फिर अपना सेना-नायकका पद भी मिल गया। अब ये कुस्तुनतुनियामें रहने लग गये। यहाँ ये "अनजुमने इत्तहाद व तरक्की" अर्थात् "ऐक्य और उन्नति" नामक संस्थामें मिलकर कार्य करने लगे। कहते हैं, कमाल पहले इस संस्थाके विरुद्ध थे, पर अपना काम बनते देख, वे अपना पूर्व-विरोध भूलकर इसी संस्थाके साथ सम्मिलित होकर कार्य करने लगे। परन्तु मुस्तफा कमाल अपने लक्ष्यसे, कभी—किसी अवस्थामें भी—च्युत होनेवाले न थे। एक बार वे जिस कामको करनेके लिये खड़े होजाते, उसे पूरा करके ही छोड़ते थे।

इसी "अनजुमने इत्तहाद व तरक्की," नामक संस्थाको सहाय-



तासे सन् १६०८ ई० की राज्य क्रान्ति हुई थी। यह राज्य क्रान्ति "रक्त शून्य-क्रान्ति" कहलाती है। इस क्रान्तिमें, अनवर पाशा, जमाल पाशा और 'फतही बे' भी सम्मिलित थे। इस क्रान्तिका परिणाम यह हुआ, कि सुल्तान अब्दुल हमीद द्वितीय सुल्तानके पदसे अलग कर दिये गये और एक प्रकारकी राष्ट्रीय पार्लामेण्टकी संस्थापना हुई। अब्दुल हमीदके छोटे भाई मुहम्मद खामिस (पाँचवे) सुल्तान बनाये गये।

यद्यपि इस क्रान्तिके द्वारा राष्ट्रीय पार्लमेंटकी स्थापना हो गयी, तथापि उससे मुस्तफा कमालके विचार पूर्ण नहीं हुए, उनका अभीष्ट सिद्ध नही हुआ। इसका कारण यह था, कि अब टर्कीके शासनकी बाग-डोर सुल्तानके हाथोंसे निकलकर अनवर पाशाके हाथमें आगयी।

मुस्तफा कमालका जो अभीष्ट था, वह सिद्ध नहीं हुआ और अनवरने शासन सूत्र अपने हाथोंमें लेलिया। इस कारण स्वभावत अनवर पाशा और मुस्तफा कमाल पाशामें बनती नहीं थी। अनवर प्रधान युद्ध सचिव हुए। वे जो चाहते, कर देते। अनवरकी तूती इस प्रकार बोलती देख, मुस्तफा कमाल अत्यन्त दु'खित हुए। पर वे निराश होनेवाले जीव न थे, अत' वे अपने उद्योगसे विरत नहीं हुए।



सेनापति कमाल

योग्य सेना-नायक

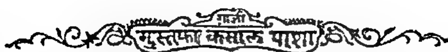
एक योग्य सेनापतिमें जितने गुणोंकी आवश्यकता होती है, वे सब मुस्तफ़ा कमालमें पूर्ण मात्रामें विद्यमान हैं। सेनापर शासन करते समय उसे किस प्रकार अपने कर्तव्यका ज्ञान कराया जाता है, स्वदेश-प्रेमकी उत्तेजना किस प्रकार प्रत्येक सैनिकके हृदयमें भर दी जाती है, किस प्रकार प्रत्येक सैनिक द्वारा अपने नायककी आज्ञाका पालन कराया जाता है और सेनाके अन्दर क्या-क्या दोष होते हैं तथा उन्हें दूर करनेके लिये कैसे उपायोंका अवलम्बन करना चाहिये—ये सब बातें कमाल बहुतही अच्छी तरह जानते हैं।

इसीसे इनके अधिकारमें जब जो कुमुक या सेना-विभाग दिया गया, तब सबसे पहले इन्होंने उसे सब प्रकार योग्य और कार्य-कुशल बनानेपर विशेष लक्ष्य रखा। जब सबसे पहले इन्हें सेना-विभाग शिक्षा देनेके लिये मिला, तब इन्होंने पहले उसके समस्त दोषोंको निकाल डाला और तब उससे काम लिया। सन् १९०८ की राज्य-क्रान्तिके समय मुस्तफ़ा कमालने अपने सैनिकों द्वारा जो आश्चर्य्य-जनक कार्य कर दिखाये, उन्हें देखकर-टर्कोंके



सेनापति कमाल।

Burman Press, Calcutta.



बड़े-बूढ़े सेनापतियोंने भी दाँतों उँगली काटी थी। इनकी योग्यता, दृढ़ता और वीरताको देखकर इनके विरोधियोंको भी इनकी प्रशंसा करनी पड़ी थी।

सन् १९१० में टर्कीके समर-सचिवकी आज्ञा पाकर ये फ्रान्स गये थे। वहाँ इनके मित्र फतही ने टर्कीकी ओरसे सैनिक राजदूत थे। मुस्तफ़ा कमाल वहाँ सैनिक परामर्श-दाता होकर गये थे। इस पदपर भी उन्होंने अपनी योग्यता प्रदर्शित की थी। मडेम गालिन्स उनकी स्मरण शक्तिकी प्रशंसा करती हुई कहती हैं, कि 'ये उस समय केवल तीन महीनेतक फ्रान्सकी राजधानी पैरिसमें रहे; परन्तु इन्हें आज भी फ्रान्सके लोगोंकी रहन सहन, उनके खयाल आदिकी बातें खूब याद हैं।' सेना नायकके लिये यह भी एक अत्यावश्यक गुण है।

तरावलीसके कार्य

यूरोपीय महायुद्धके आरम्भ होनेके प्राय ३ वर्ष पहले अर्थात् सन् १९११ ई० में इटलीने तरावलोस (ट्रिपोली) पर चढ़ाई की। तुर्कीकी सरकारने अरों और वहाँ रहनेवाले तुर्कोंकी रक्षाके लिये अपने यहाँसे कुछ सेना और कई सैनिक अफसर भेज दिये। इन फौजी अफसरोंमें मुस्तफा कमाल भी एक थे। उस समय ये मुस्तफा कमाल बे कहलाते थे।

मुस्तफा कमालने देखा, कि टर्कीसे जितने सैनिक आये

हैं, वे भी अधिक दिनों तक यहाँ नहीं रह सकते। इसलिये उन्होंने यह विचार किया, कि अर्बोंकी ही एक अच्छी शिक्षित सेना तैयार कर दी जाये। यह विचार कर उन्होंने अर्बोंको एकत्र करना आरम्भ कर दिया और कुछही दिनोंके अन्दर अर्बोंकी इस नव संगठित सेनाको कवायद सिखायी, नवीन अस्त्र-शस्त्रोंका प्रयोग सिखाया और युद्ध-नीति की शिक्षा दी।

इस प्रकार बहुतही अल्प समयके भीतर, उन्होंने अशिक्षित अर्बोंकी इस सेनाको वर्त्तमान सामरिक शिक्षा देकर ऐसा सुशिक्षित और सुसंगठित बना दिया, कि सब लोग उसे देखकर हैरतमें आ गये। इनकी इस अद्भुत संगठन-शक्तिको देख, टर्कोंकी सरकार तथा अन्यान्य यूरोपीय देशोंने मुक्त कण्ठसे इनकी योग्यताकी प्रशंसा की।

जबतक यहाँकी सेना अशिक्षित रही, तबतक तो इटली वाले अर्बोंको दबाते गये और बहुतसे अंशोंपर अपना अधिकार जमाते गये; परन्तु जब वही सेना मुस्तफा कमाल द्वारा सुशिक्षित बना दी गयी, तब इटलीको पद-पदपर कठिनाइयोंका सामना करना पडा। यहाँतक कि अन्तमें उसे पीछे हटना पडा और कई अधिकृत स्थानोंको खाली भी कर देना पडा।

दर्रे-दानियालके कार्य

सन् १९१४ में यूरोपीय महासमर आरम्भ हुआ। जर्मनी बीच-बीचमें टर्कोंकी सहायता करता आरहा था। इस लिये जब

उसने टर्की से इस युद्धमें सहायता माँगी, तो टर्कीको उसकी सहायता करनी ही पडी।

मुस्तफा कमाल पहलेसेही इस युद्धमें टर्की के शरीक होनेके विरुद्ध थे, क्योंकि वे इससे रूम-साम्राज्यकी कोई भलाई नहीं देखते थे। वे टर्की का निरपेक्ष रहनाही श्रेयस्कर समझते थे।

इस समय अनवर पाशा टर्कीके प्रधान युद्ध सचिव थे। वे रूमको लेकर जर्मनोंके पक्षसे महायुद्धमें शरीक हुए। मुस्तफा कमालने उन्हें बहुत मना किया। जब उन्होंने मुस्तफा कमालकी बात न मानी, तो उन्होंने बडे कडे शब्दोंमें उनके इस कार्यका विरोध किया।

बलकान युद्धके बादही फनहो 'बे' सेनापतिका काम छोडकर सोफियामें टर्की के राजदूत होकर चले गये। मुस्तफा कमाल भी उनके साथ सामरिक परामर्श-दाता होकर सोफिया गये थे। तबसे अबतक वे सोफियामें ही थे।

मुस्तफा कमालने जब देखा, कि मेरे विरोध करनेका कुछ फल न हुआ, तब उन्होंने अपने पदसे इस्तेफा दे दिया और कुस्तुनतुनिया लौट आये। यहाँ आनेपर अनवर पाशाने, उन्हें दर्रेदानियालमें सेना संगठन करने और मोर्चाबन्दी कायम रखनेकी आज्ञा देकर दर्रेदानियालके युद्ध क्षेत्रमें भेज दिया।

इस विषयमें कुछ अंगरेजी पत्रोंके संवाद दाताओंका कहना है, कि अनवर पाशा, मुस्तफा कमालको देख नहीं सकते थे। वे चाहते थे, कि किसी तरह मुस्तफा कमाल मर कट जाये। इसीसे

दर्रे-दानियालकी कठिन किले बन्दीके कामपर उन्होंने मुस्तफा कमालको उनकी इच्छाके विरुद्ध भेज दिया। परन्तु कुछ मुसलमान पत्र सम्पादकों और विद्वानोंका कहना है, कि यह बात बिलकुल गलत है। वे कहते हैं, कि अनवर पाशा और कमाल पाशामें भलेही किसी विशेष बातका मतभेद हो, पर वे एक दूसरेके दुश्मन नहीं हैं। अनवर पाशाने मुस्तफा कमालको दर्रे-दानियालके उस कठिन मौकेपर इसलिये भेजा था, कि वे यह बात अच्छी तरह जानते थे, कि सिवा कमालके और कोई उन कठिनाइयोंका सामना नहीं कर सकता है।

दर्रे-दानियालके इस युद्धमें जर्मन जेनरलों और अनवर पाशाकी एक राय रहती थी, पर कमालकी राय इनसे नहीं मिलती थी। जर्मन जेनरलों और अनवर पाशाकी राय थी, कि मित्र-राष्ट्रोंकी सेनाको आगे बढ़ने दिया जाये और जब वे बीचमें आजायें, तब उनपर घेरकर आक्रमण कर दिया जाये। परन्तु कमाल ऐसा करना उचित नहीं समझते थे। वे अपनी बातपर अड गये और उन्हें शुरूमें ही रोक दिया।

जर्मन सैनिक-अधिकारियों और अनवरके लाख कहनेपर भी वे अपनी बातसे न टले। इसपर जर्मन अधिकारी तथा अनवर उनसे बिगड खड़े हुए, परन्तु उनकी अधीनस्थ सेनाने उनका साथ न छोड़ा। वे बराबर उन्हींकी बात मानते रहे।

मुस्तफा कमालने यहाँ अनारकोटा स्थानमें अँगरेज फौजको इस बहादुरीके साथ हराया, कि अनवर और जर्मन अधिकारी

लोग हैरतमें आगये। इस युद्धमें इन्होंने यह एक विशेषता दिखायी, कि इनकी ओरके बहुतही कम सैनिक काम आये और अँगरेज फौजको बुरी तरह हार खानी पड़ी।

इस युद्धमें उन्होंने अपने सैनिकोंकी जानें बड़ी खूबीके साथ बचायीं और उनकी निगरानी बराबर इस तरह करते रहे, जैसे पिता अपने पुत्रकी देख-भाल करता है।

इसी कारण तमाम सैनिकोंमें उनकी प्रशंसा फैल गयी। सब सैनिक सदा मुस्तफाकीही चर्चा करने लगे। पहले मुस्तफा कमालने यह बात छिपा रखी, परन्तु उनके कुछ न कहनेपर भी भला यह बात छिप कैसे सकती थी? तमाम तुर्की संवाद पत्रोंमें उनकी इस वीरताकी बातें प्रकाशित हो गयीं। तभीसे मुस्तफा कमालको अंगरेजी संवादपत्र "डिफेण्डर आफ-दी डार्डेनलीज" अर्थात् "दर्रे-दानियालके रक्षक" कहने लगे।

इस युद्धमें मुस्तफा कमालके अधीन १६०००० सैनिक थे। जो सेना-नायक इतने सैनिकोंको सुचारु रूपसे अपनी आज्ञाके वशवर्त्ती बनाये रख सकता है, जो इस प्रकार शत्रुओंको हराकर भी अपनी प्रशंसाकी परवा नहीं करता है, वह कोई मामूली सेनापति नहीं गिना जा सकता।

रूसियोंसे युद्ध

आत्म प्रशंसी जर्मन सेनाध्यक्षों तथा अनवर पाशाने जब देखा, कि दर्रेदानियालकी जैसी कठिन लड़ाईमें और अपनी ज़िद्द कायम

रखकर भी मुस्तफा कमाल विजयही प्राप्त किये जारहे हैं, तब उन्हें वहांसे हटाकर टर्कीके उत्तरी भागमें, ककेशियन सीमापर रूसियोंके साथ लडने भेज दिया।

परन्तु कमालकी तक्दीरने वहाँपर भी उसका साथ न छोडा! छोडती कैसे? जो आदमी अपनी तदवीरोंसे अपनी तक़दीरको, जिधर चाहे उधर घुमा देनेकी ताक़त रखता है, उसके पास तो तकदीर बेचारी हाथ बाँधे खडी रहती है!

वहाँ पहुंचकर उन्होंने वडी सफलताके साथ रूसियोंका सामना किया। वहाँ जाकर उन्होंने मुसलमान फौजका अच्छी तरह सङ्गठन किया और पीछे हटते हुए रूसियोंको और भी पीछे हटाकर अपना पाया मजबूत कर दिया।

पद-त्याग

महायुद्धके समय जर्मन-प्रधान सेनापति वान फालकेनहेन तुर्कों की सहायताके लिये टर्की आया हुआ था। इसने शाममें तुर्कोंकी रक्षाके लिये सेनापतिका पद ग्रहण किया। इसकी युद्ध नीति मुस्तफा कमालको पसन्द न थी। वह जिस चालसे चलता था, उसका परिणाम टर्कीके लिये अच्छा न था, यह बात मुस्तफा कमाल अच्छी तरह जानते थे। वान फालकेनहेनने अँगरेजोंसे बाग़दाद पुन छीननेका हठ किया। [illegible] पाशाने उसकी बात मान ली। यह देख, कमालसे [illegible] पहले इसका विरोध किया. [illegible] से उन[illegible]

अनवरने उनकी एक भी न मानी। उन्हें फिर एक बार अपनेको नीचा देखना पड़ा। उनके मनमें बड़ी ग्लानि उत्पन्न हुई। उन्होंने अपने पदसे इस्तीफा दाखिल कर दिया।

अनवर पाशाने, जो इस समय टर्कीकी सरकारका हर्त्ता कर्त्ता हो रहा था, मुस्तफा कमालके पद-त्याग पत्रका भी कुछ खयाल नहीं किया। बल्कि उन्हें अलप्पोमें जाकर रहनेका हुक्म दे दिया। यह भी एक प्रकारका निर्वासन-दण्ड था।

भविष्य-वाणी

२० सितम्बर सन् १९१७ ई० को अलप्पो स्थानसे ग्राण्ड वजीर तलात पाशा और समर-सचिव अनवर पाशाके पास मुस्तफा कमालने जो रिपोर्ट भेजी थी, उसमें उन्होंने टर्कीकी परिस्थितिका इस प्रकार वर्णन किया था —

"इस महासमरमें टर्कीके शरीक होनेके कारण टर्कीकी आन्तरिक परिस्थिति दिन ब-दिन खराब हुई चली जा रही है। शान्तिप्रिय और साधारण प्रजाजन टर्कीकी सरकारसे अत्यन्त, असन्तुष्ट हो रहे हैं और वे सरकारसे कोई सम्बन्ध रखना नहीं चाहते। बाहरवाले, जो रूम-साम्राज्यके अन्दर आकर बस गये हैं, वे भी नेतरह ऊब उठे हैं। उनके बाल-बच्चों और बूढ़ोंको भोजन मुहय्या नहीं किया जारहा है। प्रजाजन सरकारकी इस बदइन्तजामीसे उसके विरुद्ध खड़े होनेको तुल गये हैं।

"असैनिक सरकारका दृढ़ होना नितान्त आवश्यक हो रहा

रखकर भी मुस्तफा कमाल विजयही प्राप्त किये जारहे हैं, तब उन्हें वहांसे हटाकर टर्कीके उत्तरी भागमें, ककेशियन सीमापर रूसियोंके साथ लडने भेज दिया।

परन्तु कमालकी तकदीरने वहाँपर भी उसका साथ न छोडा! छोडती कैसे? जो आदमी अपनी तदवीरोंसे अपनी तकदीरको, जिधर चाहे उधर घुमा देनेकी ताकत रखता है, उसके पास तो तकदीर बेचारी हाथ बाँधे खडी रहती है!

वहाँ पहुंचकर उन्होंने बडी सफलताके साथ रूसियोंका सामना किया। वहाँ जाकर उन्होंने मुसल्मान फौजका अच्छी तरह सङ्गठन किया और पीछे हटते हुए रूसियोंको और भी पीछे हटाकर अपना पाया मजबूत कर दिया।

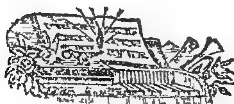
पद-त्याग

महायुद्धके समय जर्मन प्रधान सेनापति वान फालकेनहेन तुर्कों की सहायताके लिये टर्की आया हुआ था। इसने शाम- में तुर्कोंकी रक्षाके लिये सेनापतिका पद ग्रहण किया। इसकी युद्ध-नीति मुस्तफा कमालको पसन्द न थी। वह जिस चालसे चलता था, उसका परिणाम टर्कीके लिये अच्छा न था, यह बात मुस्तफा कमाल अच्छी तरह जानते थे। वान फालकेनहेनने अँगरेजोंसे बाग्दाद पुन छीननेका हठ किया। अनवर पाशाने उसकी बात मान ली। यह देख, कमालसे रहा न गया। उन्होंने पहले इसका विरोध किया, बहुत तरहसे उन्होंने समझाया, पर

बीचमें भण्डाफोड करते रहे । वे नहीं चाहते थे, कि जर्मन सेना-पतियों द्वारा तुर्कोंके उर्वर प्रदेशों और तीर्थस्थानोंकी रक्षा हो, क्योंकि ऐसा होनेसे भविष्यमें टर्कोंके लिये बुरा परिणाम होनेकी सम्भावना थी ।

ग्राण्ड ड्यूकसे सामना

जब ये रूम साम्राज्यके पूर्वीय स्थानोंकी, रूसियोंके हाथोंसे रक्षा करनेके लिये भेजे गये थे, तब इन्होंने रूसियोंके अधिकारसे मौच और विटलिस नामक स्थान ले लिये थे । यहाँ रूसी सेना ग्राण्ड ड्यूक निकोलास द्वारा परिचालित होती थी । ग्राण्ड ड्यूक बड़े जबर्दस्त सेनापति समझे जाते हैं, पर उन्हें भी मुस्तफा कमालके आगे हार खानी पड़ी ।



है। जो परिस्थिति हो रही है, उसे सम्पूर्ण अराजकता कहना भी अनुचित नहीं होगा। अर्थ-सङ्कटकी वातसे समस्त प्रजा जनकी मति डाँवा-डोल होरही है। यदि अब भी युद्ध जारी रखा गया, तोपरिणाम बहुतही बुरा होगा। टर्कोंकी सल्तनत सदाके लिये मटियामेट हो जायेगी। उसका नाम भी मिट जायेगा।"

"अँगरेज लोग फ़िलस्तीनमें ईसाई राज्य स्थापित कर लेंगे, जिसका फल यह होगा, कि मिश्र, स्वेज नहर और लाल समुद्र पर भी उनका यथेष्ट अधिकार और प्रभाव रहेगा। हमारी समस्त उपजाऊ ज़मीन और तीर्थ-स्थानोंपर उनका अधिकार क़ायम हो जायेगा और अन्तमें टर्की समस्त इस्लाम-जगतसे अलग कर दिया जायेगा।"

मुस्तफा कमालने यह भविष्य-वाणी उस समय की थी, जब कि संसारके किसी बड़े-से-बड़े सेनापति या दूरदर्शी व्यक्तिको भी यह परिणाम दिखाई नहीं दिया था। मुस्तफ़ा कमालने ये बातें इस तरह कही थी, मानों उन्हें ये परिणाम स्पष्ट दिखाई दे रहे थे। मित्र राष्ट्रोंकी विजय मानों उनको आँखोंके आगे नाच रही थी, वे परिस्थितिको पूर अच्छी तरह समझ रहे थे। वे देख रहे थे, कि किस तरह टर्कोंकी शक्ति दिन-ब दिन क्षीण होती चली जाती है।

मुस्तफा कमाल बराबर इस बातपर ज़ोर देते रहे, कि हमारे तीर्थ स्थानोंके सैनिक तुर्क सेनापतिके अधीन रहें। साथही वे जर्मनीके सेनापति वान फाल्कनहेनके उद्देश्यका भी बीच-

बीचमें भण्डाफोड करते रहे । वे नहीं चाहते थे, कि जर्मन सेना-पतियों द्वारा तुर्कोंके उर्वर प्रदेशों और तीर्थस्थानोंकी रक्षा हो, क्योंकि ऐसा होनेसे भविष्यमें टर्कीके लिये बुरा परिणाम होनेकी सम्भावना थी ।

ग्राण्ड ड्यूकसे सामना

जब ये रूम साम्राज्यके पूर्वीय स्थानोंकी, रूसियोंके हाथोंसे रक्षा करनेके लिये भेजे गये थे, तब इन्होंने रूसियोंके अधिकारसे मौच और बिटलिस नामक स्थान ले लिये थे। वहाँ रूसी सेना ग्राण्ड ड्यूक निकोलास द्वारा परिचालित होती थी। ग्राण्ड ड्यूक बड़े जबर्दस्त सेनापति समझे जाते हैं, पर उन्हें भी मुस्तफा कमालके आगे हार खानी पड़ी ।



स्वतन्त्र सेनापति

स्वातन्त्र्य-प्रियता

मुस्तफा कमाल अपनी स्वदेश भक्ति, अपने स्वदेश प्रेम और अपनी योग्यताके लिये समस्त तुर्कोंके हृदयमें घर कर चुके थे। तमाम तुर्क उन्हें अपना वास्तविक नेता मानने लगे थे और अपनी वीरताके लिये वे पहलेसे ही प्रसिद्धि पा चुके थे।

अलप्पोमें अपनी सरकार द्वारा निर्वासित होकर वे चुपचाप बैठ रहनेवाले जीव नहीं थे। वहाँ उन्होंने कुछ नौजवान तुर्कोंकी सहायतासे जर्मनोंके बारुदखानेपर एक दिन हमला किया; क्योंकि शीघ्रही वे आक्रमणकारी अङ्गरेजोंसे भिडना चाहते थे।

इस प्रकार उन्होंने यह दिखा दिया, कि वे न तो जर्मनोंकी सहायता चाहते हैं और न मित्र राष्ट्रोंसेही पनाह माँगना चाहते हैं। वे चाहते थे, कि तुर्कीकी रक्षाके लिये स्वय तुर्क ही लडें। तुर्कीके बाहरवालोंका तुर्कीके अन्दर आना भी वे अच्छा नहीं समझते थे।

वे चाहते थे, कि तुर्क अपनी स्वाधीनताकी रक्षा आपही करें; और वे किसीकी नकल करना न सीखें, न किसीपर भरोसा ही करें।

बर्लिन-यात्रा

मुहम्मद पाँचवे, कुछ दिन पहले, जब वे टर्की के युवराजकी हैसियतसे बर्लिन गये थे, तब मुस्तफा कमाल भी उनके साथ हो लिये थे। मुस्तफा कमालने उन्हें अपना परिचय दिया और प्रधान मन्त्री तलात पाशा और समर-सचिव अनवर पाशाके अधिकार परिमित कर देने और स्वेच्छाचारिता रोकनेके लिये कहा था।

फिलस्तीनकी रण-यात्रा

इधर मुस्तफा कमाल अलगही अपना कार्य बड़ी तत्परताके साथ कर रहे थे। तुर्कोंमें वास्तविक स्वदेश प्रेमकी शिक्षा देते फिरते थे और इस तरह अपनी स्वतन्त्र शक्ति बढ़ा रहे थे। उधर जर्मनीकी सामरिक शक्ति क्रमश क्षीण होती चली जाती थी। अनवर पाशा, तलात पाशा और जर्मन सेनापतिकी एक भी न चलती थी। निरुपाय होकर उन्होंने मुस्तफा कमालकी सहायता पानेके लिये एक और उपायका अवलम्बन किया।

जर्मन सेनापति और अनवर दोनोंने अनवरके पास पत्र भेजे और उन पत्रोंमें उनके स्वदेश प्रेमकी बड़ी लम्बी चौड़ी प्रशंसाएँ कीं और उन्हें फिर लौट आनेका आग्रह किया। अलप्पोसे लौट आनेपर वे फिल्स्तीनके रण क्षेत्रमें भेज दिये गये।

पर इस समयतक फिलस्तीनपर अँगरेजोंके पैर जम चुके थे। अब वहाँ थोड़ीसी सेनाके साथ जाकर कमाल क्या कर

वह अपनी लाल-लाल आँखें दिखलानेसे बाज़ नहीं आया। कुचला हुआ और बर्छोंसे छिदा हुआ साँप मौतके पास पहुँचकर भी जिस प्रकार फुँफकार मारना नहीं छोडता है, जर्मनी भी उसी तरह फुँफकार मार और फन पीट रहा था।

आस्ट्रिया हार मानकर बैठ गया था अत: उससे जो कुछ बन पडा था, उसे मित्र राष्ट्रोंको दे-दिलाकर वह सिर झुकाकर चुप हो गया था।

बाकी रह गया, बूढा, खुर्राट टर्की—वह टर्की, जिसपर तमाम यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्र बहुत दिनोंसे आँख गडाये देख रहे थे! आज वह भी काबूमें आगया है। फिर भला उसे छोड देना कैसा न्याय है?

उसके भी जो प्रदेश मित्र-राष्ट्रोंके हाथ आगये थे, अब उनके बाँट बखरेका सवाल खडा हुआ। मित्र-राष्ट्रोंमें ब्रिटिश सरकारके हाथही बढिया माल लगा था। फ्रान्स और इटलीको भी अगर मक्खन नहीं, तो कमसे कम मठा तो जरूर मिला। फिर क्या था!

मुस्तफा कमाल इस समय कुस्तुनतुनियामें ही थे। वे पहलेसेही—कुस्तुनतुनियापर मित्र-राष्ट्रोंके पाँव जमतेही—उनका अभिप्राय समझ गये थे। जो आदमी टर्कीके युद्धमें शरीक होनेका परिणाम इतने दिनों पहले कह सकता था, जब कि उसका भविष्य बिल्कुल अन्धकारमें था, वह भला मित्र-राष्ट्रोंका यह भाव कैसे नहीं समझता?

अतएव उन्होंने झट इनका मतलब ताड लिया और सुल्तान

को खुद समझाया ; पर उन्होंने मुस्तफा कमालकी बात न मानी। वे मानही कैसे सकते थे, जब कि उनका मन्त्रिमण्डलही कमालके विपक्षमें था।

मुस्तफा कमालने इसी समय कुछ दिनोंके लिये अपने कामसे छुट्टी लेली। धूर्त्त अँगरेज जासूस मुस्तफा कमालको हरकतों-पर नज़र रखने लगे। वे हर समय यह देखते, कि कमाल क्या कर रहे हैं, उनका क्या उद्देश्य है, वे कहाँ जाते हैं और किससे मिलते हैं। उन लोगोंने जो कुछ देखा सुना, उससे अँगरेज लोगोंको बड़ी चिन्ता होने लगी। उनलोगोंने देखा, कि यदि यह तुर्क युवक यहाँ रहेगा, तो सब बना-बनाया खेल बिगाड़ देगा। इसलिये उन लोगोंने एक और तरकीब निकाली। तुर्की सरकारके प्रतिनिधियोंसे उसे किसी उपायसे कुस्तुनतुनियासे बाहर हटा देनेके लिये कहा।

उनकी यह तदबीर कारगर होगयी। दामद फरीदके मन्त्रि-मण्डलने देखा, कि इस मौकेपर इसे हटानेसे यह गोंटी नहीं हटेगा। यह सोचकर उसने मुस्तफा कमालको पूर्वीय सेनाओं-का इन्सपेक्टर बनाकर भेज दिया।

१५ वीं मई सन् १६१६ ई० को मुस्तफा कमाल सामसौर पहुँचे। इनके पहुँचनेके ठीक २४ घण्टे पहले यूनानियोंने स्मर्नामें प्रवेश किया था। मुस्तफा कमालने ज्योंही यह बात सुनी, त्योंहीं उन्हें बड़ा क्रोध चढ़ आया। उन्होंने यूनानियोंसे युद्ध करने और उन्हें भगानेका निश्चय कर लिया। साथही उन्होंने

तमाम राष्ट्रवादी कुस्तुंनतुनियासे निकल कर मुस्तफा कमालके पास अनातूलियामें आये। उनका सच्चा सहयोग पाकर मुस्तफा कमालका बल और भी बढ़ गया।

मुस्तफा कमाल पहलेसेही यूनानियोंको कई जगह शिकस्त दे चुके थे और अब उनका बल बढ़ जानेपर उन्होंने बड़ी सफलता के साथ यूनानियोंपर महा भयंकर धावा बोल दिया। अब तमाम अनातूलियामें उनका प्रभुत्व जम गया और प्रायः समस्त तुर्क जाति उनकी ओर आशा-भरी निगाहसे देखने लगी।

संगठन-कार्य

टर्कीकी समस्त जनता—जो अब बड़ी-बड़ी कठिनाइयोंसे घिर रही थी, त्राहि-त्राहिकी पुकार मचा रही थी और अपनी रक्षाके विविध उपाय ढूँढ रही थी—सहसा मुस्तफा कमालको इस प्रकार अपना रक्षक, सहायक और त्राता पाकर उनसे आ मिली।

ऐसी परिस्थितिमें मुस्तफा कमाल समय नष्ट करनेवाले न थे। उन्होंने एक तरफ यूनानियोंको दबाना और दूसरी तरफ अपना सङ्गठन-कार्य करना आरम्भ कर दिया। जिस बातको वे बहुत दिनोंसे सोच रहे थे, जिस कामको करनेके लिये वे व्याकुल हो रहे थे, आज वही बात, वही काम, उनके सामने स्वयं उपस्थित हो गया है। उन्होंने तुरन्त राष्ट्रवादियोंका सङ्गठन-कार्य आरम्भ कर दिया।

राष्ट्र-वादियोंकी कांग्रेस

कुछही दिनोंके अन्दर उन्होंने ऐसा उत्तम संगठन कर दिया, जिसे देखकर मित्र राष्ट्र भी भीतर ही-भीतर घबराने लगे।

जुलाई सन् १९१९ ई० में मुस्तफा कमालकी रायसे तुर्क राष्ट्रवादियोंकी कांग्रेसकी अर्जेरूममें एक असाधारण बैठक हुई। इसमें राष्ट्रवादियोंने टर्कीकी सरकारसे पृथक् होकर अपने देशकी रक्षाके उपायोंपर विचार किया। रिफत बे, अली फौआद और मुस्तफा कमालने कार्य क्रम स्थिर किया। यह कार्यक्रम केवल सभामें एकत्र होकर लेक्चर देने, प्रस्ताव पास करने और सभा-मण्डपके बाहर आतेही सब भुला देनेका कार्यक्रम नहीं था। यह देशके जीवन और मरणका कार्यक्रम था। हजारों सैनिकोंके खूनकी दरिया बहानेका कार्यक्रम था।

मुस्तफा कमालके सामने इस समय कई अत्यावश्यक विचारणीय प्रश्न उपस्थित थे। एक तरफ अगर यूनानियोंको खदेड़ भगाने और अर्मेनियोंको दबा रखनेका प्रश्न था, तो दूसरी ओर मित्र-राष्ट्रोंकी प्रबल शक्तियोंके साथ सामना करनेका प्रश्न था। साथही यदि वे इस परिस्थितिमें चुप रह जाते, तो टर्कीकी चिरकाल व्यापिनी शान्ति और स्वतन्त्रता सदाके लिये दूर हो जाती। इसके अतिरिक्त टर्कीकी सरकार भी मित्र-राष्ट्रोंके वशवर्ती हो चुकी थी। उससे कुछ सहायता पाना तो दूर रहा, उल्टे वह राष्ट्रवादियोंके विरुद्ध खड़ी होनेको तैयार थी। ऐसी परि-

स्थितियोंसे घिरकर भी अपना मस्तिष्क ठीक रखना और अपने निश्चित मार्गसे विचिलित न होना, कोई मामूली बात न थी। परन्तु मुस्तफा, कमाल जो कुछ निश्चय कर लेते थे, उससे विमुख होना तो वे जानतेही न थे।

इसी अर्जेरूमको काग्रेसके साथ-साथ टर्कीकी राष्ट्रीय पार्लमेण्ट—तुर्कोंकी कौमी सरकारकी भी नींव डाली गयी। तुर्कोंकी नयी सरकार कायम होनेकी घोषणा भी कर दी गयी।

सिवासकी कांग्रेस

इसके केवल कई महीने बाद राष्ट्रवादियोंकी इस नयी काग्रेस या पार्लमेण्टकी एक और बैठक सिवासमें हुई। अर्जेरूमकी काग्रेसमें जो बातें तय हुई थीं, यहाँ उन्हीं बातोंकी विस्तार पूर्वक आलोचना की गयी।

इसके सिवा यहाँ यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्रोंकी दुरङ्गी चालोंकी भी बडी कडी और तीव्र आलोचना की गयी। अमेरिकाके राष्ट्रपति प्रेसिडेण्ट विलसनकी १४ शर्तोंके मित्र राष्ट्रों द्वारा पालन न किये जानेकी बात भी कही गयी और साथही अमेरिकाको निरपेक्ष बताया गया।

तुर्कीके तमाम तीर्थस्थानों और अधिकारियोंके पास मुस्तफा कमालने अपनी अपील भेजी। समस्त बाहरी राष्ट्रोंके पास भी अपनी स्वतन्त्रताका घोषणापत्र भेजा।

इन अपीलोंमें, जो मुस्तफा कमालने टर्कीकी विलायतोंमें

भेजी थीं, यह बात स्पष्ट रूपसे समझा दी गयी थी, कि राष्ट्रवादी तुर्क एक सरकारके कायम रहते हुए, भी एक नयी सरकार कायम करना क्यों चाहते हैं ? स्मर्नापर यूनानियोंका अधिकार करना और उससे होनेवाली भयङ्कर हानियों और उनके द्वारा किये गये अत्याचारोंका हाल, उन्हें दण्ड देनेकी आवश्यकता, दामद फरीद्-की सरकारकी गलतफहमी और उसके अनुचित कार्य आदि सब बातें इन अपीलोंमें समझा दी गयी थीं। साथही वर्त्तमान परिस्थितिमें तुर्कोंको अपनी स्वतन्त्रता कायम रखनेका उपाय क्या हो सकता है, यह भी बताया गया था।

सुल्तानसे अन्तिम अपील

इन राष्ट्रवादी तुर्कोंने १५ जुलाई १९१९ को सुल्तानके पास एक अत्यन्त आवश्यक अपील भेजी। इस अपीलमें मुस्तफ़ा कमालने लिखा था —

"तुर्क राष्ट्रवादियोंने अपने, देशकी अपनी कौमकी आजादीको कायम रखनेके लिये अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेका निश्चय किया है। परन्तु अपना कार्य आरम्भ करनेके पूर्व, अपने स्वदेशकी रक्षाके लिये, स्वदेशके नामपर हम आपसे यह प्रार्थना करना चाहते हैं, कि आप स्वय इस विषयमें हस्तक्षेप करें और अपने शत्रुओंके बिगड़े हुए दिमाग़को राहपर लानेके लिये खड़े हो जायें अथवा आपका जो विचार हो, उसे तार द्वारा हम लो-गोंको सूचित कर दें, ताकि हम अपना कर्त्तव्य निश्चय कर लें।

"हम लोग आपके प्रत्युत्तरकी प्रतीक्षामे 'तार-घर'के पास ठहरे हुए हैं। आप कृपाकर शीघ्र हमारी बातोंका जवाब देदीजिये। यदि हमारी उचित और न्यायसंगत आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ पूर्ण नहीं की जायेंगी, तो हम वर्त्तमान सरकार और मन्त्रिमण्डलके उत्तर दायित्वका खयाल छोड देंगे और अपना कार्य आरम्भ कर देंगे ; साथही हमलोग यह भी समझ लेंगे, कि हमलोग जो कुछ करेंगे, उसके लिये टर्कीकी सरकारही जिम्मेवर है।

"हमलोग तमाम दुनियाको यह दिखा देंगे, कि उसमानिया सल्तनत या तुर्क कौममें कितना साहस, कैसी शक्तिऔर कितनी जबर्दस्त स्वदेशभक्ति भरी हुई है।"

जब यह अपील तार-द्वारा सुल्तानके पास भेजी गयी, तब जो लोग तार देनेके लिये आये थे, वे बडी देर तक सुल्तानके उत्तरकी प्रतीक्षामें तार-घरमेंही खडे रहे। परन्तु सुल्तान तो इस समयतक मित्रराष्ट्रोंके हाथमें आ गये थे! जवाब कौन देता? अत' निश्चित समय बीत गया। सुल्तानका कोई जवाब नहीं आया! बस, फिर क्या था? 'या नसीब या किस्मत, या तख्त या तख्ता?'—यही अन्तिम निश्चय हो गया।

सरकारी हुक्म

टर्कीकी सरकार मित्र राष्ट्रोंके हाथोंमें थी। वे जो चाहते, करते। पर मुस्तफा कमालपर उनका कोई प्रभाव नहीं था।

तथापि वे मुस्तफा कमालके कार्योंको देख देखकर आश्चर्यमें आते और भीतर ही भीतर घबराते थे।

उन्होंने सुल्तानके द्वारा मुस्तफा कमालपर यह आज्ञा जारी करायी, कि मुस्तफा कमाल या तो कुस्तुनतुनिया लौट आयें या सेनाध्यक्षका पद छोड़ दें।

अबतक मुस्तफा कमाल धर्माचार्यके खयालसे सुल्तानका सम्मान करते थे, परन्तु अब उन्होंने उस सम्मानके भावको धारण करना व्यर्थ समझा ; क्योंकि अब वे सुल्तान या मुसल्मान-धर्मके गुरु नहीं,—बल्कि गैर मुसलमान राष्ट्रोंके हाथोंके कठपुतले हो रहे थे। उन्होंने सुल्तानकी वह आज्ञा न मानी।

मुस्तफा कमालके अधीन जो सैनिक थे, वे भी उन्हींकी तरफ रहे। उन्होंने अब मुस्तफा कमालकोही अपना धर्म और कर्म गुरु समझा। इसके कारण भी यथेष्ट थे। वास्तवमें इस समय मुस्तफा कमालही मुसल्मानोंके युग धर्मके रक्षक और आचार्य-का काम कर रहे थे।

राष्ट्रीय समझौता

इसी समय तुर्क राष्ट्रवादियोंकी इस नवीन संस्थाके २० सदस्योंने एक "राष्ट्रीय समझौते" का मसौदा बनाकर टर्कीकी पार्लमेण्टमें पेश करनेके लिये दामद फरीदके पास भेजा। टर्की-पार्लमेण्टमें जो सदस्य थे, उनमें अधिकतर लोग मुस्तफा कमा-लकी रायसे मिले हुए थे। यह देखकर उन लोगोंने समझा, कि

राष्ट्रवादियोंका यह समझौता टर्कीकी पार्लमेण्ट शायद स्वीकार कर लेगी। यही सोचकर उन लोगोंने टर्कीकी पालमेण्टको भी तोड़ दिया और उसके कितनेही मेम्बरोंको माल्टामें निर्वासित कर दिया।

कुस्तुन्तुनियाके कितनेही पत्र-सम्पादक, नेता और व्याख्याता आदि फिर भी इस समय कुस्तुनतुनियासे निकाल बाहरकर दिये गये। इस प्रकार जितने लोग निकलते थे, सब आ आकर मुस्तफा कमालके साथ मिलते गये।

इस प्रकार मुस्तफा कमालका दल क्रमशः बढ़ताही गया।



अङ्गोरा सरकार

नगरका दृश्य

अर्जेरूम और सिवासमें राष्ट्रवादी तुर्कों की जो कांग्रेस हुई, उसके निश्चयके अनुसार अङ्गोरामें तुर्कोंकी राष्ट्रीय पार्लमेण्ट संगठित की गयी। एक पत्र-संवाद-दाताने वर्तमान अङ्गोराका एक अत्यन्त रोचक वर्णन किया है, जिसे यहाँ दे देना अनुचित नहीं मालूम होता। संवाददाताका कहना है —

"अङ्गोरा एशियाई-टर्कीका एक बहुत पुराना नगर है। वह पहाड़ोंपर, समतलसे ५०० फीटकी ऊँचाईपर बसा हुआ है। उसका पुराना नाम अन्सीरा था लेकिन अब उसे अङ्गोरा कहते हैं। यहाँके निवासी प्राचीन प्रथाओंके अनुयायी हैं। एशिया-माइनरके अन्य नगरों, यथा ट्रेबीजोन्द और समासौनपर यद्यपि यूरोपीय सभ्यताका काफी प्रभाव पड़ा है, परन्तु अङ्गोरा ज्यों-का त्यों ही बना हुआ है।

अङ्गोरामें घुसतेही सबसे पहले उसके कब्रिस्तान नजर आते हैं। ये कब्रिस्तान अत्यन्त प्राचीन और विशाल हैं एवं नगरके चारों ओर फैले हुए हैं। एक अर्द्ध-गोलाकार रूपमें बढ़ते हुए अन्तमें पहाड़की चोटियोंमें विलीन हो जाते हैं। इन

क़ब्रिस्तानोंसे घिरा हुआ नगर एक छोटे गाँवकासा दिखाई देता है, जिसके मस्तकपर एक दुर्ग शोभायमान है। इस दुर्गकी, सफेद-सफेद मीनारें नगरकी प्राचीनता और रमणीयताको प्रकट करती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। नगर लगभग १००० वर्षका पुराना है।

"यह प्राचीन रोमन और यूनानी नगरोंके खण्डहरोंपर बसा हुआ है, जिनके चिह्न अब भी कहीं-कहीं दृष्टि-गोचर होते हैं। जहाँ कहीं, स्तूप, खम्भे तथा गढ़े हुए पत्थर मिलते हैं, उन सब पर प्राचीन रोमन अथवा लैटिन लेख खुदे हुए हैं, अभी हालमें ही नगरके जिस हिस्सेमें आग लग गयी थी, उसमें एक रोमन मन्दिरको छोडकर और कुछ नहीं बचा। यहाँ यूरोपीय पोशा कमें बहुत कम लोग मिलते हैं।

"बाजारोंमें बडी भीड रहती है। खच्चरोंके कारण गलियोंमें और भी अधिक गडबड बढ जाती है, क्योंकि कोई भी तुर्क बिना खच्चरके नहीं चलता। एक ओर सौदागर, कारीगर, नाई, नानबाई इत्यादि आवाज लगा लगाकर लोगोंको अपनी-अपनी ओर खींचते हैं, दूसरी ओर लुहार लोग खच्चरोंके नाल तैयार करनेके लिये घन कूटते हैं। कहींपर कुछ लोग बेलनसे ऊन फैलाते मिलेंगे, तो कहींपर कुछ सफेद-सफ़ेद पदार्थों का हलवा तैयार करते मिलेंगे। एक स्थानपर छोटेसे बाज़ारमें नीलाम होता देख पडेगा, जिसमें एक हृष्ट पुष्ट तुर्क, जोरसे चिल्लाता हुआ फर्श नीलाम करता मिलेगा।

"बाजारमें कहीं कहीं सैनिकोंके झुण्ड मिलेंगे। उनकी पोशाक सब प्रकारकी होती है—जर्मनी, अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, रूसी इत्यादि। इसी प्रकार उनके जूते भी विभिन्न प्रकारके होते हैं। कोई-कोई तो अनेक कारतूसोंकी पेटियाँ बाँधे मिलेंगे, परन्तु सबके मुखसे आप यूनानियोंको मार भगानेकी बात बिना सुने न रहेंगे।

"व्यापार-वणिज्य अत्यन्त साधारण रूपमें होता है। यद्यपि कुछ लोग विलायती सामान भी बेचते पाये जायेंगे, परन्तु अधिकतर दूकानदार भोजन सामग्री, मोजे, जीन, पीतलके बर्तन और सस्ते गहने बेचते मिलेंगे। इनके यहांसे विशेषत सैनिक लोगही सौदा खरीदते हैं। पश्चिमीय सभ्यताकी संस्थाओंने अभी अपना अड्डा इस शान्त, प्राचीन और पवित्र नगरमें नहीं जमा पाया।

"यहाँपर क्लब, पुस्तकालय, पुस्तक भण्डार अथवा थियेटर नहीं हैं। सार्वजनिक मतका संगठन यहाँपर गलियों और तन्दूरोंपर होता है और मौलवी लोगही सर्वसाधारणके प्रतिनिधि समझे जाते हैं। इन मौलवियोंका प्रभाव और बल अभीतक ज्यों-का त्यों-ही है। सन्ध्या होतेही बाजारों और गलियोंमें निस्तब्धता छा जाती है। इस निस्तब्धताको गलियोंमें घूमनेवाले कुत्तेही भङ्ग करते हैं।"

इसी शान्तिप्रिय छोटेसे नगरमें राष्ट्रवादियोंकी पार्लामेण्टका बदस्तूर दफ्तर बनाया गया। महासभाका यह दफ्तर बहुत बड़ा नहीं है, तथापि वह परम पवित्र है, क्योंकि वह स्वतन्त्रताकी वेदी है—तुर्कोंके लिये एक महान् तीर्थ स्थान है।

अर्जेरूमके गवर्नर

२५ फरवरी १९२० के रूटरके एक तारसे जाना जाता है, कि इस सुप्रीम नैशनल ऐसेम्बलीकी स्थापनाके बाद तुर्क राष्ट्र-वादियोंने मुस्तफा कमाल पाशाको अर्जेरूमके गवर्नरके पदपर अभिषिक्त किया है।

राष्ट्रवादियोंका बल

इस समय तुर्क कौम परस्तोंका बल कितना बढ गया था, यह लण्डनके 'टाइम्स' पत्रके एक संवाददाताके उस पत्रसे मालूम होता है, जो उसने ८ मार्च सन् १९२० को लिखकर प्रकाशनार्थ भेजा था। उस पत्रमें मि० वेस्टनने तुर्क राष्ट्रवादियोंके बल, मुस्तफा कमाल पाशाकी अद्भुत संगठन-शक्ति और राष्ट्रवादियोंकी एकताकी आलोचना करते हुए लिखा था, कि आजकल टर्कीकी असल हुकूमत कुस्तुनतुनियामें नहीं, अंगोरा या सिवास में है। उन्होंने यह भी लिखा था, कि यदि ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डल या मित्र-राष्ट्र टर्की की सरकारसे किसी बातका निबटारा करना चाहते हैं, तो वे पहले मुस्तफा कमालसे निपट लें।

इस पत्रसे यह स्पष्ट प्रमाणित होता है, कि कुछही दिनोंके अन्दर राष्ट्र वादियोंका प्रभाव और बल बहुत बढ गया था और बाहर वालोंको भी इसका अच्छी तरह अनुभव होने लगा था।

राष्ट्रीय कोष और सेना

अंगोरा सरकारके पर-राष्ट्र सचिव बक्र समी बे जब हालमें "लण्डन कानफरेन्समें" सम्मिलित होनेके लिये विलायत गये थे, तब लण्डनसे निकलने वाले "इस्लामिक न्यूज़" नामक संवाद-पत्रके सम्पादक उनसे मिले थे। उनके पूछनेपर समीबेने कहा था, कि "अंगोरा सरकारकी आर्थिक अवस्था अच्छी है, परन्तु व्यय भी यथेष्ट है। अभी ५॥ करोड़ पौण्डकी (अर्थात् ८२ करोड़ ५० लाख रुपयेकी) आय है।"

सेनाका परिमाण पूछनेपर उन्होंने कहा था, कि—"वहाँ बालक, युवा और वृद्ध सभी सैनिक कार्य करना सीख रहे हैं और सदा सैनिक सहायताके लिये तैयार रहते हैं। अभी दो लाख वैतनिक और अवैतनिक सैनिक हैं, जो अपने प्राणोंको त्यागनेके लिये सदा प्रस्तुत रहते हैं। आशा है, शीघ्रही ऐसे सैनिकोंकी संख्या ढाई लाख तक पहुँच जायेगी; क्योंकि जहाँ जहाँ सैनिक भर्ती करनेके अड्डे कायम किये गये हैं, वहाँ-वहाँ नित्यही बीसों सैनिक स्वेच्छासे, स्वदेश प्रेम और राष्ट्रीय स्वतन्त्रताकी बलवती प्रेरणासे प्रेरित होकर भर्ती हो रहे हैं।

शस्त्रागारपर आक्रमण

क्षणिक सन्धिके बादसेही राष्ट्रवादी तुर्कोंने असाधारण उत्साह और शक्तिके साथ काम करना आरम्भ कर दिया। वीर,

स्वतन्त्र तुर्क कौम, जो बराबरसे आज़ादीकी हवामें साँस लेती चली आ रही थी, आज उसे गुलामीकी जञ्जीरमें बाँध रखना भला कैसे सम्भव था ? इन लोगोंने सबसे पहले मित्र राष्ट्रोंके गैलीपोलीवाले शस्त्रागारपर छापा मारा।

यद्यपि इस स्थानपर पहलेसेही मित्र-राष्ट्रोंका सैनिक पहरा था और वे पहलेसे सतर्क भी थे, तथापि राष्ट्रवादी जवान उसपर छापा मारकर सफल-मनोरथ हो गये ! यह कुछ कम आश्चर्यकी बात न थी, उनके इस पहले कामने मानों उनकी भावी विजयकी सूचना उसी समय दे दी थी।

शस्त्रागारपर छापा मारकर यहाँसे ये लोग ८० हज़ार बन्दूकें, ५ लाख कारतूस और तैंतीस मेशीन-गनें उठा तथा बहुतसा युद्ध सामान ले आये।

ब्रिटिशोंकी धारणा

११ मार्च सन् १९२० ई० को लार्ड कर्जनने अपने एक भाषणमें कहा था, कि ब्रिटिश सामरिक अधिकारियोंका ख़याल है, कि मुस्तफा कमाल पाशाकी सेनाका जो परिमाण बताया जाता है, वह बेहद तवालतसे भरा हुआ है। इस समय लण्डनमें सर्व साधारणकी धारणा थी, कि मुस्तफा कमाल पाशाका सामना करनेके लिये यूनानी फौजही काफी है। तुर्क राष्ट्रवादियोंकी शक्ति, जो चारों ओर बिखरी हुई है, अकेली किस-किस तरफ जायेगी और किस-किसका सामना करेगी !

सम्बन्ध-विच्छेद

१२ मार्च १९२० को मित्र-राष्ट्रोंके उच्च सैनिक अधिकारियोंने, जो इस समय कुस्तुनतुनियामें फौज जमा चुके थे, यह निश्चय कर लिया, कि कुस्तुनतुनियाके डाक और तारकी इमारतोंपर अधिकार कर लिया जाये, ताकि टर्की सरकार और मुस्तफा कमाल पाशामें परस्पर संवादोंके आदान-प्रदानकी सम्भावना भी न रहे।

इसी निश्चयके अनुसार १७ मार्च १९२० को मित्र राष्ट्रोंने कुस्तुनतुनियाको तमाम डाक और तारकी इमारतोंपर अधिकार कर लिया और इस प्रकार मुस्तफा कमाल और टर्कीकी सरकारका सम्बन्ध विच्छेद कर दिया।

राष्ट्रवादियोंपर इल्जाम

टर्कीके बाहर रहनेवाली मुसलमान जनताके हृदयमें इन तुर्क राष्ट्र वादियोंके प्रति, किसी सहानुभूतिका भाव जागृत होने न पाये, इसकी भी यथेष्ट चेष्टा की गयी। संसारके आगे राष्ट्रवादी तुर्कोंपर कितनेही इल्जाम लगाये गये। टर्की सरकारने भी मित्र राष्ट्रोंकी आवाजके साथ अपनी आवाज मिला दी। इस प्रकार सबने मिलकर एक स्वरसे कहा—"ये राष्ट्रवादी तुर्क अपने धर्माचार्य्य खलीफाकी आज्ञाओंका भी पालन नहीं करते सुतरा ये धार्मिक न्यायानुसार [illegible]

ध्येयतक पहुँचनेका मार्ग भूल सकते थे ? अत वे अपनी नीति पर दृढ रहे।

सबसे पहले उन्होंने टर्कीकी सरकारकी ओरसे भेजे गये सैनिकोंके दवा दिया। टर्की सरकारके दव जाने वाद अब उन्हें सामना करना रहा, अर्मेनियों, यूनानियों, ब्रिटिशों और फ्रान्सोंका।

अर्मेनियोंसे युद्ध

१७ फरवरी १९२० के एक तारसे जाना जाता है, कि उन दिनों राष्ट्रवादी तुर्कों ने सलेशिया प्रान्तमें ७००० अर्मेनियोंको कत्ल कर डाला था। अर्मेनियन त्राहि-त्राहिकी पुकार मचाते हुए भाग रहे थे।

इसके वाद भी कई महीनेतक राष्ट्रवादी तुर्कोंकी जमायतोंके अर्मेनियोंको वरावर खदेड़ते जानेकेही समाचार आये ; पर अन्तमें ११ अक्तूवर १९२० के एक तारसे जाना गया, कि अर्मे-नियोंने अपने यहाँ सेना भर्ती करनेका काम वड़े जोरोंसे करना आरम्भ कर दिया था। साथही उसने अंगोरा सरकारके साथ युद्ध करनेकी घोषणा भी कर दी थी।

२१ अक्तूवर १९२० के तार-समाचारसे मालूम होता है, कि रूसी वोलशेविकोंने भी अर्मेनियोंको एक अलटिमेटम दिया था और यह कहा था, कि 'तुम हमारे जानेके लिये रास्ता साफ कर दो, ताकि हम तुर्क राष्ट्रवादियोंसे मिल सकें।'

६ नवम्बर १९२० के एक तारसे पता चलता है, कि बोल-शेविक अर्मेनियनोंकी ओर बढ़ रहे हैं और राष्ट्रवादी तुर्कोंकी फौजें अलेगजेण्ड्रियाकी ओर अग्रसर हो रही हैं।

इसके बाद जेनेवाके एक तारसे मालूम होता है, कि राष्ट्र-वादी तुर्कोंने अर्मेनियाकी राजधानी अरीवानपर अधिकार कर लिया है। १० और ११ नवम्बरके कई तारोंसे मालूम होता है, कि अर्मेनियनोंने तुर्कोंके साथ सन्धि करनेकी प्रार्थना की है। अन्तमें दिसम्बरके आरम्भमें मुस्तफा कमाल पाशाकी सरकार-के साथ अर्मेनियनोंने सन्धि करली।

फ्रान्सीसियोंसे युद्ध

अर्मेनियावाले सन् १९२० ई० के अन्ततक परास्त कर दिये गये। राष्ट्रवादी तुर्कों की विजय हुई। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये, कि तुर्कों की या अंगोरा सरकारकी सारी शक्ति इस सालके अन्दर अर्मेनियनोंको भगानेमेंही खर्च होती रही। इसी समयमें तुर्क फौजोंने फ्रान्सवालोंसे भी लड़ाई शुरू कर दी थी।

११ मार्च १९२० के लण्डनके एक तारसे मालूम होता है, कि सलेशियामें फ्रान्सीसियोंकी जो फौजें छावनी डाले पड़ी हैं, शायद उनपर भी राष्ट्रवादी तुर्क आक्रमण करनेकी तैयारी कर रहे हैं।

४ अप्रेलका तार है, कि सलेशियाकी परिस्थिति अच्छी नहीं दिखाई देती। फिर २८ अप्रेलके पेरिसके एक तारसे जाना जाता है,

मुस्तफा कमाल पाशाकी फौजोंने फ्रासीसियोंके सैनिक पडावोंको घेर लिया है। इसके वाद युद्ध होने लगा। युद्धमें फ्रासीसी दव गये और वे भागनेको उतावले होने लगे। पहले फ्रासीसियोंने यह चेष्टा की, कि अपना वचाव करते हुए, पीछे हट जायें, पर वे यह भी न कर सके

अन्तमें फ्रासीसियोंने मुस्तफा कमाल पाशासे लडाई रोकनेके लिये प्रार्थना की। मुस्तफा कमालने कुछ शर्तोंपर लडाई रोकना मजूर किया। फ्रासवालोंने उनकी शर्तों को स्वीकार कर लिया और लडाई वन्द कर दी गयी।

परन्तु विजेता राष्ट्र होकर एक सामान्य पराजित जाति द्वारा अपनी हार माननेको भला वह इतनी आसानीसे कैसे तैयार हो सकता था? सम्भव है, अपना मतलव सिद्ध करनेके लिये ही उसने मुस्तफ़ा कमालकी शर्त्तें स्वीकार कर ली हों, पीछे जव उसे कुछ और सहायता मिल गयी, और उसने अपनेको मुस्तफा कमालकी फौजी ताकतको दवा देने योग्य समझा, तव उसने फिर लडाई छेड दी।

इस वार मुस्तफा कमालने अपनी और भी ताकत लगाकर फ्रान्सीसियोंपर आक्रमण किया और सलेशियाका वहुतसा अंश खाली करा लिया। उनकी कितनीही तोपें भी राष्ट्रवादी तुर्कों ने छीन लीं। अन्तमें फ्रान्सीसियोंको सलेशिया खाली कर देना पडा। इसपर फ्रान्स सरकारने मित्र-राष्ट्रोंपर इस वातके लिये जोर दिया, कि सेवर्सकी सन्धि वदल दी जाये। इस

प्रकार फ्रांसीसियोंके साथ तुर्क राष्ट्रवादियोंकी लडाईका अन्त हुआ।

यूनानियोंसे युद्ध

यूनान और टर्कीके बीच बहुत दिनोंका पुराना शत्रु-भाव था, पर यूरोपीय महासमरमें यूनानने भाग नहीं लिया था। उसने जब देखा, कि टर्की महा-शक्तियों द्वारा पराजित होकर हतबल हो गया है, तब झटसे स्मर्नापर अधिकार कर लिया और तमाम मुसलमान जनतापर अत्याचार करना आरम्भ कर दिया।

यूनानियोंके इन अत्याचारोंसे तमाम मुसलमान-जगत्में बड़ी भयङ्कर खलबली मच गयी। यदि कोई विजेता राष्ट्र स्मर्नापर अधिकार कर लेता, तो मुसल्मान-जगत् शायद इतना अन्दोलित न होता।

यूनानका यह अनुचित और अनधिकार आक्रमण भला मुस्तफा कमाल कैसे देख सकते थे? उन्होंने उसे खदेड़कर टर्कीकी सीमाके बाहर कर देनेका विचार किया और विचार स्थिर होते ही उन्होंने यूनानके विरुद्ध लोहा उठा लिया।

२४ जून १९२० के एक तारसे ज्ञात होता है, कि राष्ट्रवादी तुर्कों ने यूनानियोंपर आक्रमण करना आरम्भ कर दिया है। कई स्थानोंपर तुर्क फौजोंने यूनानियोंको हौलनाक शिकस्तें दी हैं। दो दिनोंतक तुर्क फौजने अङ्गोरा सरकारके वीर सेनापति इस्मत बे के नेतृत्वमें यूनानियोंपर ऐसा भयङ्कर आक्रमण किया है, कि

यूनानी बदहवास होकर बराबर भागते गये हैं। इस आक्रमणमें यूनानियोंकी कितनीही तोपें, बन्दूकें, गोले-बारूद आदि युद्ध-सामग्री तुर्कोंके हाथ लगीं।

तुर्कोंका कहना है, कि यूनानियोंके चार हजार सैनिक इस युद्धमें मारे गये और चार हजार तीन सौ जवान घायल हुए।

तुर्क इस प्रकार सफलता प्राप्त करते, यूनानियोंकी फौजोंको शिकस्तें देते और उनके भाग जानेपर उनकी युद्ध सामग्रियाँ इकट्ठी करते हुए आगे बढ़ने लगे।

इसी बीचमें लण्डन कानफरेन्सके कारण कुछ दिनोंके लिये लड़ाई बन्द रही। परन्तु कानफरेन्सका परिणाम आशा प्रद न होनेके कारण तुर्कोंने फिर यूनानियोंपर आक्रमण किया।

४ अप्रेल १९२१ के कुस्तुनतुनियाके एक तारसे मालूम होता है, कि यूनानियोंपर तुर्कोंकी एक बहुत बड़ी सेनाने आक्रमण किया है। इस सेनामें प्राय: बीस हजार तुर्क सैनिक हैं। इनके पास गोले-बारूद वगैरह लड़ाईके सामान भी यथेष्ट परिमाणमें हैं। १६ इञ्च गोलाईकी तोपें भी बहुत हैं।

इसी तारीखके एक और तारसे जाना जाता है, कि यूनानी पीछे हटते चले जा रहे हैं और तुर्क उनको खदेड़ते जा रहे हैं।

२४ अप्रेलके तारसे मालूम होता है, कि यूनानियोंने खेत छोड़ दिया और वे बिल्कुल बदहवासीकी हालतमें भागे।

सितम्बरके महीनेमें यूनानको अन्य सश्लिष्ट, अधिक शक्तिशाली राष्ट्रोंकी सहायता मिली। उसने फिर सिर उठाया। इस

१५ मार्च १९२० के एक तारसे मालूम होता है, कि 'टाइम्स' पत्रको समाचार मिला है,'राष्ट्र वादी तुर्कोंको एक जमायतने अस्म दृके पासकी रेलवे लाइनके एक पुलको डिनामाइटसे उड़ा दिया है। इस पुलके उड़ा दिये जानेके करीब-तीन चार मिनट पहले एक गाड़ी गुजरी थी, जिसपर अंगरेज सैनिक अफसर और सेना थी।

२० मार्चका एक तार है, कि ब्रिटिश कण्ट्रोल-अफसर कैप्टेन फारेस्ट मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

२८ मईके लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, कि मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे कर्नल रालिनसन अभी तक अर्जरूममें नजरबन्द हैं। कैप्टेन कैमेल भी अर्जरूम शहरमें रखे गये हैं। दोनों अच्छी तरहसे हैं। शहरमें सैर कर सकते हैं। एक और अँग-रेज लेफ्टिनेण्ट मि० मण्टको भी कौम परस्तोंने अदावाजा स्थानमें रोक रखा था, पर पीछे इन्हें छोड़ दिया है।

३ जनवरी १९२१ को 'कलकत्तेके 'स्टेटमैन' पत्रका एक संवाददाता लिखता है, कि "राष्ट्रवादी तुर्क कुस्तुनतुनिया और उसके आस-पासकी फौजोंसे ऐसा वर्त्ताव करने लगे हैं, कि लण्डनके मन्त्रि-मण्डल और समर-विभागके अधिकारियोंको उनकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता जान पड़ने लगी है।

अपना प्रभाव जमाते देखकर भी अंगरेजोंकी ओरसे खुल्लम-खुल्ला कोई घोर-घमासान नहीं किया गया !

इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण सम्भवतः यह है, कि लगातार ५ वर्षा के यूरोपीय महासमरमें उसने अपनी अपरिमित शक्ति और सम्पत्ति खर्च कर डाली थी। इस अवस्थामें इङ्गलैण्डसे फौज लाकर सुदूर एशियामें युद्ध करना उसके लिये कोई साधारण काम न था। दूसरा कारण यह हो सकता है, कि महासमरके समाप्त होतेही ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत कई स्थानोंमें हल-चलसी मच गयी थी। आयर्लैण्ड और मिश्र अपनी-अपनी स्वतन्त्रताके लिये यदि अपना गला कटानेको तैयार हो गया था, तो भारतवर्षमें भी खिलाफत और पञ्जावके हत्याकण्डोंसे एक नया झगडा खडा हो रहा था। तीसरा कारण यह हो सकता है, कि विलायतमें टर्कीके प्रश्नोंपर दो प्रकारके मत वाले हो गये थे। एक मत वाले टर्कीके पक्षमें थे और दूसरे यूनानियोंके पक्षका समर्थन करते थे। सम्भव है, इन्हीं कारणोंसे ब्रिटिश अधिकारी लडनेको तैयार न हुए हों।

यद्यपि राष्ट्रवादी तुर्कोंके साथ अँगरेजोंका कोई विशेष युद्ध नहीं हुआ, तथापि समय-समयपर जहाँ कहीं दोनोंका सामना होगया है, उनका तारोंसे इस प्रकार मालूम होता है —

१ मार्च १६२० के लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, राष्ट्रवादी तुर्कोंने कुस्तुनतुनियासे ५५ मील पश्चिम अँगरेज फौजको अस्मदसे हट जानेकी धमकी दी है।

१५ मार्च १९२० के एक तारसे मालूम होता है, कि 'टाइम्स' पत्रको समाचार मिला है,'राष्ट्र वादी तुर्कोंको एक जमायतने अस्म इके पासकी रेलवे लाइनके एक पुलको डिनामाइटसे उड़ा दिया है। इस पुलके उड़ा दिये जानेके करीब-तीन चार मिनट पहले एक गाड़ी गुजरी थी, जिसपर अंगरेज सैनिक अफसर और सेना थी।

२० मार्चका एक तार है, कि ब्रिटिश कण्ट्रोल-अफसर कैप्टेन फ़ारेस्ट मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे गिरफ्तार कर लिये गये हैं।

२८ मईके लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, कि मुस्तफा कमाल पाशाके हुक्मसे कर्नल रालिन्सन अभी तक अर्जेरूममें नजरबन्द हैं। कैप्टेन केमेल भी अर्जेरूम शहरमें रखे गये हैं। दोनों अच्छी तरहसे हैं। शहरमें सैर कर सकते हैं। एक और अँग-रेज लेफ्टिनेण्ट मि० मण्टको भी कौम परस्तोंने अदावाजा स्थानमें रोक रखा था, पर पीछे इन्हें छोड़ दिया है।

३ जनवरी १९२१ को कलकत्तेके 'स्टेटमैन' पत्रका एक संवाददाता लिखता है, कि "राष्ट्रवादी तुर्क कुस्तुनतुनिया और उसके आस-पासकी फौजोंसे ऐसा बर्ताव करने लगे हैं, कि लण्डनके मन्त्रि-मण्डल और समर-विभागके अधिकारियोंको पुनः उनकी ओर ध्यान देनेकी आवश्यकता जान पड़ने लगी है। साथही तुर्कोंके द्वारा यूनानी फौजका एशियाए कोचकमें खातमा होनेका करीना है।

"मुस्तफा कमाल पाशा दिन दिन अपना सैनिक और

अपना प्रभाव जमाते देखकर भी अंगरेजोंकी ओरसे खुल्लम-खुल्ला कोई घोर-घमासान नहीं किया गया।

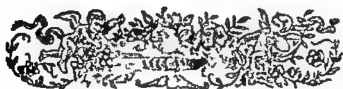
इसके कई कारण हो सकते हैं। पहला कारण सम्भवतः यह है, कि लगातार ५ वर्षों के यूरोपीय महासमरमें उसने अपनी अपरिमित शक्ति और सम्पत्ति खर्च कर डाली थी। इस अवस्थामें इङ्गलैण्डसे फौज लाकर सुदूर एशियामें युद्ध करना उसके लिये कोई साधारण काम न था। दूसरा कारण यह हो सकता है, कि महासमरके समाप्त होतेही ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत कई स्थानोंमें हल-चलसी मच गयी थी। आयर्लैण्ड और मिश्र अपनी-अपनी स्वतन्त्रताके लिये यदि अपना गला कटानेको तैयार हो गया था, तो भारतवर्षमें भी खिलाफत और पञ्जाबके हत्याकाण्डोंसे एक नया झगड़ा खड़ा हो रहा था। तीसरा कारण यह हो सकता है, कि विलायतमें टर्कोंके प्रश्नोंपर दो प्रकारके मत वाले हो गये थे। एक मत वाले टर्कोंके पक्षमें थे और दूसरे यूनानियोंके पक्षका समर्थन करते थे। सम्भव है, इन्हीं कारणोंसे ब्रिटिश अधिकारी लड़नेको तैयार न हुए हों।

यद्यपि राष्ट्रवादी तुर्कोंके साथ अँगरेजोंका कोई विशेष युद्ध नहीं हुआ, तथापि समय समयपर जहाँ कहीं दोनोंका सामना होगया है, उनका तारोंसे इस प्रकार मालूम होता है —

१ मार्च १९२० के लन्दनके एक तारसे जाना जाता है, राष्ट्रवादी तुर्कोंने कुस्तुनतुनियासे ५५ मील पश्चिम अँगरेज फौजको अस्मदसे हट जानेकी धमकी दी है।

देशोंमें) सदा लडाईकी आग सुलगाते रहनेका एक स्थायी कारण हो रही हैं।

"इनसे जो आग धधकेगी, वह बढते-बढते तमाम बलकानमें फैल जायेगी। अतएव इस बातकी अत्यन्त आवश्यकता है, कि यह सन्धि-पत्र एक रद्दी कागजका पुर्जा समझकर फाड डाला जाये। टर्कीके विषयका फिरसे नया बन्दोबस्त करनेकी कोशिश की जाये। इस विषयका स्थायी रूपसे निर्णय होना तभी सम्भव है, जब कि यूनानके द्वारा अधिकृत टर्कीके स्थान टर्कोंको लौटा दिये जायें। यूनान उन स्थानोंपर न तो अपना अधिकार रखनेके योग्य है और न न्यायत उन स्थानोंपर उसका कोई अधिकारही है।"



आर्थिक बल बढ़ाते तथा अपने मोर्चोंको जबर्दस्त किये चले जारहे हैं।

"खबर मिली है, कि ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलके कुछ सदस्य मित्र राष्ट्रोंपर यूनानी फौजकी मदद करनेके लिये ज़ोर दे रहे हैं। परन्तु बहुमत इस पक्षमें है, कि मित्र-राष्ट्र शायद फिर इस नयी एशियाई लड़ाईमें शामिल होनेको तैयार नहीं होंगे। इन्हीं लोगोंका मत है, कि सेवर्सकी सन्धिकी शर्तों पर फिरसे विचार किया जाये। थ्रेस और स्मर्नाको यूनानके हवाले करनेकी जो शर्त है, वह बिल्कुल निकाल दी जाये।

"खबर है, कि लार्ड कर्जन सुप्रीम कौन्सिलकी ओरसे एक कानफरेन्स करानेका विचार कर रहे हैं, और ऐसा इन्तजाम कर रहे हैं, जिसमें यूनानी तथा तुर्क प्रतिनिधि भी वहाँ उपस्थित हों तथा उनका एक मेल-मिलाप हो जाये।"

सेवर्सकी सन्धिपर लोकमत

इस समय विलायतका लोकमत सेवर्सकी सन्धिके विषयमें क्या खयाल करता था, यह वहाँके सुप्रसिद्ध पत्र "डेली एक्सप्रेस" की उस टिप्पणीसे मालूम हो सकता है, जो इसने इसी समय लिखी थी।

"डेली एक्सप्रेस" कहता है, कि—"सेवर्सकी सन्धिकी शर्तें निकट पूर्वमें [illegible] एक न एक लड़ाई पैदा करती रहेंगी। वे शर्तें एक प्रका[illegible] निकट पूर्वमें (अर्थात् यूरोपकी पूर्वीय सीमाके

अङ्गोरा सरकार मित्र-राष्ट्रोंकी किसी कानफरेन्समें शामिल होनेके लिये अपने प्रतिनिधि तभी भेजनेका विचार कर सकती है, जब कि वे स्वयं प्रत्यक्ष रूपसे हमारी सरकारको निमन्त्रण देंगे और अपने यहाँसे प्रतिनिधि तभी भेज सकती है, जब वे नीचे लिखी शर्तें मञ्जूर कर लेंगे —

(१) टर्कीके जिस प्रान्तमें या जिन स्थानोंमें गैर तुर्क सरकारोंने अपना अधिकार कर रखा है,उसे वे फौरन खाली करदें।

(२) उसमानिया सरकार किसी राष्ट्रको लड़ाईकी क्षति पूर्तिके रूपमें कोई रकम देनेके लिये बाध्य न की जायेगी।

(३) कुस्तुनतुनियाका मन्त्रिमण्डल फौरन इस्तीफा दे दे, क्योंकि वह खुदमुख्तारी कर रहा, और उच्छृङ्खल हो रहा है।

(४) सुल्तानके रहनेका स्थान स्तम्बोल हो।

(५) टर्कीसे तमाम गैर-मुल्कोंकी फौजें हटाली जायें।"

युद्ध स्थगित

मुस्तफा कमाल खामखाह खूँरेजी करना नहीं चाहते। वे शान्तिप्रिय हैं, परन्तु अत्याचारियोंका अत्याचार उनसे सहा नहीं जाता है। वे स्वयं जैसे स्वतन्त्र विवेकके आदमी हैं, स्वतन्त्रताके लिये जैसे वे अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेको तैयार रहते हैं,वैसे-ही वे दूसरोंकी स्वतन्त्रताको भी कायम रखना चाहते हैं। इसी अब उन्होंने देखा, कि हमारे स्वत्वोंकी रक्षा यदि सद्भावसेही ये, तो झगड़ा बढ़ानेसे क्या लाभ? यही सोचकर उन्होंने

सन्धिका आरम्भ

टर्की को निमन्त्रण



जनवरी १९२१ की २१ ता०को लन्दन कानफरेन्समें अपने प्रतिनिधि भेजनेके लिये टर्कीको निमन्त्रण दिया गया। ३० जनवरीको टर्की सरकारने इस निमन्त्रण पत्रका यह जवाब दिया, कि 'हमें यह निमन्त्रण स्वीकार है, परन्तु राष्ट्रवादी तुर्कोंसे परामर्श किये विना प्रतिनिधियोंका चुनाव नहीं हो सकता है। आशा है, अङ्गोरा सरकार और कुस्तुनतुनियाके बीच तार समाचारोंके आदान-प्रदानकी व्यवस्था शीघ्रही हो जायेगी और वहांसे जवाब आनेपर आपको खबर दी जायेगी।'

टर्कीकी सरकारने इस विषयमें अङ्गोरा सरकारको जो पत्र लिखा था, उसका जवाब देते हुए मुस्तफा कमालपाशाने राष्ट्रवादी तुर्कों की इस नवस्थापित सरकारके सभापतिकी हैसियतसे लिखा —

"अङ्गोराकी यह सरकारही इस समय तमाम टर्कीकी एकमात्र स्वतन्त्र और सर्वजन सम्मत सरकार है। मुझे टर्कीके राष्ट्रने—तुर्क कौमने—इस सरकारका सभापति होनेका गौरव प्रदान किया है।

अङ्गोरा सरकार मित्र-राष्ट्रोंकी किसी कानफरेन्समें शामिल होनेके लिये अपने प्रतिनिधि तभी भेजनेका विचार कर सकती है, जब कि वे स्वयं प्रत्यक्ष रूपसे हमारी सरकारको निमन्त्रण देंगे और अपने यहाँसे प्रतिनिधि तभी भेज सकती है, जब वे नीचे लिखी शर्तें मञ्जूर कर लेंगे —

(१) टर्कीके जिस प्रान्तमें या जिन स्थानोंमें गैर तुर्क सरकारोंने अपना अधिकार कर रखा है,उसे वे फौरन खाली करदें।

(२) उसमानिया सरकार किसी राष्ट्रको लड़ाईकी क्षति पूर्तिके रूपमें कोई रकम देनेके लिये बाध्य न की जायेगी।

(३) कुस्तुनतुनियाका मन्त्रिमण्डल फौरन इस्तीफा दे दे, क्योंकि वह खुदमुख्तारी कर रहा, और उच्छृङ्खल हो रहा है।

(४) सुल्तानके रहनेका स्थान स्तम्बोल हो।

(५) टर्कीसे तमाम गैर-मुल्कोंकी फौजें हटाली जायें।"

युद्ध स्थगित

मुस्तफा कमाल खामखाह खूँरेजी करना नहीं चाहते। वे शान्तिप्रिय हैं, परन्तु अत्याचारियोंका अत्याचार उनसे सहा नहीं जाता है। वे स्वयं जैसे स्वतन्त्र विवेकके आदमी हैं, स्वतन्त्रताके लिये जैसे वे अपना सर्वस्व अर्पण कर देनेको तैयार रहते हैं,वैसे-ही वे दूसरोंकी स्वतन्त्रताको भी कायम रखना चाहते हैं। इसी लिये अब उन्होंने देखा, कि हमारे स्वत्वोंकी रक्षा यदि सद्भावसेही हो जाये, तो झगडा बढानेसे क्या लाभ? यही सोचकर उन्होंने

राष्ट्रवादी तुर्कों को हुक्म देदिया, कि जबतक सन्धिकी यह बात चीत चल रही है, तबतक सलेशियामें फान्सीसियोंके साथ और इराके अरबमें अँगरेजोंके साथ किसी प्रकारकी लड़ाई-भिड़ाई न की जाये। इस प्रकार उन्होंने अपनी तमाम फौजको लड़ाई करनेसे रोक दिया।

६ फरवरी १९२१ को अङ्गोरा सरकारके पर-राष्ट्र-सचिव बक समी बेने सुलतानके पास इस आशयका एक पत्र भेजा, कि यदि मित्र-राष्ट्रोंको तथा टर्कीकी सरकारको हमारी शर्तें स्वीकार हों,तो हम अपने यहाँसे प्रतिनिधि भेज सकते हैं। हमारी सरकारकी ओरसे जो प्रतिनिधि जायेंगे, वे तमाम तुर्क कौमके प्रतिनिधि-स्वरूप भेजे जायेंगे और लण्डनकी कानफरेन्समें वे अपने खयाल कौमकी भलाई और स्वत्वोंकी रक्षाके लिये प्रकट करेंगे।

प्रतिनिधियोंकी विदाई

मित्र-राष्ट्रों और कुस्तुनतुनियाकी सरकारोंने मुस्तफा कमाल की सरकारकी उपर्युक्त शर्तोंमेंसे अधिकांश शर्तों को स्वीकार कर लिया और अङ्गोरा सरकार भी इस कानफरेन्समें स्वतन्त्र रूपसे निमन्त्रित की गयी।

७ तारीखको टर्कीकी सरकारने अपने यहाँसे तीन प्रतिनिधियोंको कानफरेन्समें सम्मिलित होनेके लिये भेज दिया। मुस्तफा कमाल पाशाकी अङ्गोरा सरकारने भी अपने प्रतिनिधि भेजनेकी सूचना कानफरेन्सको देदी।

६ फरवरी १६२१ को जब राष्ट्रवादियोंके प्रतिनिधि अङ्गोरासे विदा होने लगे, उस समय नगरका दृश्य अत्यन्त मनो-मोहक होरहा था। तमाम इमारतों और बुर्जों पर राष्ट्रीय विजय-पताकायें चढ़ी की गयी थीं। नागरिकोंको बड़ी भारी भीड़, जिसमें स्त्री-पुरुष, बूढ़े-जवान सभी शरीक थे, उन्हें बिदाई देनेके लिये एकत्र हुई थी।

"अलविदा" कहते समय मुस्तफा कमाल पाशाने प्रतिनि-धियोंसे कहा,—"भाइयो! तुम जिस कामके लिये जा रहे हो, वह तुम्हारा अपना नहीं, कौमका है! तुम्हारे ऊपर अपने देश, जाति और राष्ट्रके स्वत्वोंकी रक्षा करनेका भार दिया गया है। तुमसे मेरा अन्तिम वक्तव्य केवल यही है, कि तुम अपने मुल्ककी आज़ादीको कायम रखनेके लिये अपनी बातोंपर पहाड़की तरह अटल रहना

प्रतिनिधियोंके चले जानेपर सन्ध्याको नमाज पढ़ी गयी और प्रतिनिधियोंकी सफलताके लिये ईश्वरसे प्रार्थनायें की गयीं।

लण्डन कानफरेन्स

सन् १६२१ के फरवरी महीनेमें अन्तके मित्र राष्ट्रोंकी एक परिषद् हुई थी। इस परिषद्में मुख्य विचारणीय विषय दो थे। उनमें पहला यह था, कि जर्मनीसे हर्जाना कैसे वसूल किया जाये और दूसरा विषय यह था, कि टर्कीके साथ जो सन्धि हुई है, उसमें किन किन बातोंका सुधार किया जाये।

इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और इटलीके प्रधान मन्त्री अपने अपने साम-

रिक तथा साम्पत्तिक परामर्श दाताओंके साथ परिषद्में उपस्थित थे। यूनानके प्रधान मन्त्री और नीति-निपुण एम० वेनिज़ेलीस भी वहां मौजूद थे। कुस्तुनतुनियाके सुल्तानके वजीर और अङ्गोरा सरकारकी ओरसे भेजे गये प्रतिनिधि सभी वे आदि भी उपस्थित थे।

इस कानफरेन्समें मित्र-राष्ट्रोंकी ओरसे अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंका विशेष आदर-सत्कार किया गया। मित्र-राष्ट्रोंने पृथक् पृथक् अपनी खास बातें भी कीं। इटलीकी सरकार तथा फ्रांसकी सरकारोंने इनसे एक प्रकार समझौता भी कर लिया। परन्तु ब्रिटिश सरकारके प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्ज यूनानको सम्हाले रखनेका बन्दोवस्त कर चुके थे। इसलिये उनकी परिस्थिति डाँवाडोल थी। परन्तु लायड जार्ज जैसे राजनीतिज्ञ भला ऐसे मौकोंपर कैसे चूक सकते थे!

कई दिनोंतक इस कानफरेन्सकी बैठकें होती रहीं। यूनानके मुख्य मन्त्रीने कहा, कि सेवर्सकी सन्धिकी जो शर्तें निश्चित हुई हैं, वे ज्योंकी त्यों रहें। कोई परिवर्त्तन नहीं हो। परन्तु फ्रान्सके प्रधान मन्त्री इसके विपरीत थे। उन्होंने कहा, कि यह ठीक नहीं है, कि तुर्कों के स्थानोंपर यूनानी अपना अधिकार जमायें। तुर्कों के अधिकृत प्रदेश उसे लौटा दिये जायें। के प्रतिनिधिने भी ऐसीही राय दी।

फलत स्थिर हुआ, कि कुस्तुनतुनियाके आस-पासके यूनानको न सौंपकर सार्व-राष्ट्रीय बनाये जायें और

में एक बड़ी सेना रखनेके लिये तुर्कों को अनुमति दे दी जाये, इधर केवल स्मर्ना नगरपर ग्रीसका अधिकार कायम रख कर शेष प्रान्त तुर्कों को वापस कर दिये जायें। परन्तु स्मर्ना नगर-से तुर्कों का स्वामित्व बिल्कुल नष्ट न किया जाये। अर्थात् उसका बन्दरगाह तुर्की व्यापारके लिये खुला रहे। ८० से ६० हजारतक सेना कुस्तुनतुनियामें रखनेको आज्ञा दी जाये और विदेशी लोग तुर्की न्यायालयकी सत्तामें रहें।

सेवर्सकी सन्धि शर्तों में इसी प्रकारके कई और परिवर्त्तन करनेके लिये मित्र-सरकारें तैयार हुईं; परन्तु अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंने उसके उत्तरमें यही कहा, कि 'हम अङ्गोरा जाकर वहाँकी सरकारसे पूछेंगे, कि शर्त्तें उसे स्वीकार हैं या नहीं।'

इसके बाद अँगोरा सरकारके प्रतिनिधि मार्चके तीसरे सप्ताहमें वहाँसे अँगोरेके लिये रवाना हुए और ११ अप्रेलको अँगोरा पहुँचे। अँगोरा सरकारने मित्र राष्ट्रोंकी उक्त शर्तोंको स्वीकार नहीं किया।

मित्र राष्ट्रोंका रङ्ग-ढङ्ग देखकर राष्ट्रवादी तुर्कों के सर गरोह—अँगोरा सरकारके सभापति—मुस्तफा कमाल पाशा खूब अच्छी तरह समझ गये, कि अनातूलियाके इस मसलेका फैसला मेल मिलाप और सौजन्य सद्भावसे नहीं हो सकता।

तलवारसे होगा

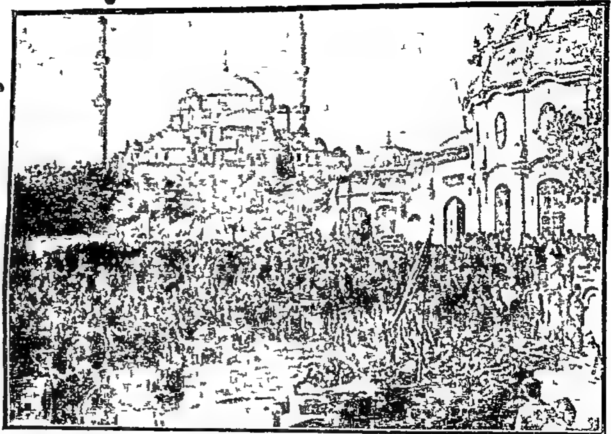
इसी समय मुस्तफा कमाल पाशाके सभापतित्वमें राष्ट्रवादी तुर्कोंकी पार्लमेण्टकी एक विशेष बैठक आगेका कार्यक्रम निश्चित

विजयी कमाल पाशा

यूनानियोंपर आक्रमण

बस, फिर क्या था ? मुस्तफा कमालके सैनिकों, सेना-पतियों और सेना-नायकोंमें चौगुना जोश आ गया। मुस्तफा कमालकी आज्ञा पाकरही वे अबतक लड़ाईसे हाथ खींचे हुए बैठे थे। उनके दिलोंमें यूनानियोंको उनके कियेका दण्ड देनेकी प्रबल क्रोधाग्नि तो पहलेसेही प्रज्ज्वलित थी। अत अब उनकी आज्ञा पातेही उनकी छाती दूनी-चौगुनी हो गयी।

विजयी सेना-दल लेकर मुस्तफा कमाल फिर एक बार यूनानियोंका ध्वंस करने और अँगरेजोंको टर्कीसे हटानेके लिये निकल पड़े। इनकी विजयी सेना बे-रोक, चालसे यूनानियोंकी ओर बढ़ी। यूनानी सेनाएँ बुरी तरह शिकस्त...
छोड़ स्मर्नाकी ओर भागी।



कुस्तुनतुनियामें तुर्क लोग विजयके उपलक्षपर मुस्तफा कमाल पाशाका चित्र लेकर जुलूस निकाल रहे हैं।

इसी समय अँगरेजी फौजके अफसर कैप्टेन थेसिगारने तुर्क सेनाध्यक्षोंको सूचना दी,—"यूनानी स्मर्नासे निकलकर भाग गये हैं। आप लोग अब अगर शान्तिसे स्मर्नाके अन्दर दाखिल होंगे, तो प्रजावर्गमें किसी प्रकारका आतङ्क या डर नहीं छायेगा। वे शान्तिसे रहेंगे।"

यूनानियोंकी दुष्टता

मुस्तफा कमालके विजयी सेना दलने कैप्टेन थेसिगारकी बात मान ली। वे बड़ी शान्तिके साथ स्मर्नामें प्रवेश करने लगे। रास्तेमें उनके सेनापतिपर किसी आर्मेनियनने एक बम फेंक दिया। उससे वे बुरी तरह घायल हुए, परन्तु इतना होनेपर भी उनका सैनिक दल शान्तिभाव धारण किये रहा,—कहीं किसी प्रकारका गोलमाल नहीं हुआ।

दो दिनोंतक तुर्क सैनिक दलोंने स्मर्नामें शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित रखी। इसके बाद शहरमें आग दिखाई दी। देखते देखते उस अग्निने महा प्रचण्ड रूप धारण किया। नगरवासी आर्मेनियों और यहूदियों आदिकी जान और मालपर आफत आ गयी। वे जान बचानेके लिये शहरसे बाहर निकलकर भागने लगे।

साथ ही साथ सब दोष तुर्कोंके मत्थे मढ़नेकी चेष्टा की गयी। इस महाभयङ्कर अग्नि काण्डके दोही दिन बाद विलायतके "टाइम्स" पत्रके संवाद दाताने लिखा,—"The town

अँगरेज आगे बढ़े

अँगरेज लोग चौंक पड़े, क्योंकि स्मार्नामें अंगरेजोंकी जिस पूजीसे कारबार होते हैं, उनका परिमाण ७५ करोड रुपया है। जिस साकरी जल प्रणालीके ऊपर गैलीपोलीमें महासमरके समय अँगरेजोंको बुरी तरह मुँहकी खानी पडी थी, फिर उसी प्रणालीके भीतर उन्हें तटस्थ देशोंकी रक्षा करनी पडेगी। अँगरेज लोग अब चुप न रह सके। उन्होंने अन्यान्य देशों और राष्ट्रोंका सम्मतिकी भी प्रतीक्षा नहीं की। लड़ाईके लिये पुन ब्रिटिश साम्राज्यको तैयार होनेकी घोषणा कर दी गयी। एक विज्ञप्ति निकली —

"Great Britain is prepared to do her part in maintaining the freedom of the Straits and the existence of the neutral zones"

अर्थात्—"ग्रेट ब्रिटेन अपने उपनिवेशोंकी रक्षा और देखभाल करने तथा निरपेक्ष देशवासियोंका अस्तित्व कायम रखनेके लिये तैयार होगया है।"

इसीलिये जेनरल हैरिङ्गटनकी सेना बढानेकी व्यवस्था की गयी। भूमध्य सागरमें बेडोंपर हुक्म जारी किया गया। भारतके सिवा ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत और सब देशोंको लडाईके लिये तैयार होनेको कहा गया।

इसका कारण 'टाइम्स' पत्रके सवाददाताके मुँहसेही सुन

was given over to fire, Billage and mas-acre" ऐसी भी गफवाहें उडायी गयीं, कि हवा मुताबिक न होनेके कारणही दो दिनोंतक तुर्कोंने शहरमें आग न लगायी—लूट-मार नहीं की और न कत्लेआम मचाया।

पथेन्ससे अफ़वाह उडी, कि करीब १ लाख ८० हजार आदमी मार डाले गये हैं। एक अमेरिकन जहाजपर भागकर १ हज़ार ८ सौ यूनानियों और अर्मेनियोंने अपनी जानें बचायी हैं। यह भी बताया गया, कि इस महान् अग्निकाण्डमें २२ करोड ५० लाख रुपये मूल्यकी वस्तुएँ जलकर भस्म हो गयी हैं। 'रूटर'-का अधिकार केवल सवाद देनेका है, पर उसने अपने अधिकारकी बात भूलकर उसपर अपनी ओरसे यह टिप्पणी भी जोड दी,—"The Turk is unfit to govern any one but himself" अर्थात्—"तुर्क केवल अपनेही देशपर शासन कर सकता है, दूसरोंपर शासन करनेकी योग्यता उसमें नहीं है।"

परन्तु साँचको आँच कहाँ ? अन्तमें जो सच्ची बात थी, वह निकलही आयी। दुनिया जान गयी, कि स्मर्नाके अग्निकाण्डके लिये कमाल पाशाका सेना दल जिम्मेवर नहीं है। यूनानीही भागते समय शहरमें आग लगाते गये थे और आरमेनियोंने भी शहरमें आग लगानेमें उनकी मदद की थी। पीछेसे यही बात स्पष्ट शब्दोंमें यह कहकर स्वीकार की गयी,—

"burning towns and villages in theire retreat."

अँगरेज़ आगे बढ़े

अँगरेज लोग चौंक पड़े, क्योंकि स्मार्नामें अंगरेजोंकी जिस पूंजीसे कारबार होते हैं, उनका परिमाण ७५ करोड़ रुपया है। जिस साकरी जल प्रणालीके ऊपर गैलीपोलीमें महासमरके समय अँगरेजोंको पुरी तरह मुंहकी खानी पड़ी थी, फिर उसी प्रणालीके भीतर उन्हें तटस्थ देशोंकी रक्षा करनी पड़ेगी। अँगरेज लोग अब चुप न रह सके। उन्होंने अन्यान्य देशों और राष्ट्रोंकी सम्मतिकी भी प्रतीक्षा नहीं की। लड़ाईके लिये पुन ब्रिटिश साम्राज्यको तैयार होनेकी घोषणा कर दी गयी। एक विज्ञप्ति निकली—

"Great Britain is prepared to do her part in maintaining the freedom of the Straits and the existence of the neutral zones"

अर्थात्—"ग्रेट ब्रिटेन अपने उपनिवेशोंकी रक्षा और देख-भाल करने तथा निरपेक्ष देशवासियोंका अस्तित्व कायम रखनेके लिये तैयार होगया है।"

इसीलिये जेनरल हैरिङ्गटनकी सेना बढ़ानेकी व्यवस्था की गयी। भूमध्य सागरमें बेड़ोंपर हुक्म जारी किया गया। भारतके सिवा ब्रिटिश साम्राज्यके अन्तर्गत और सब देशोंको लड़ाईके लिये तैयार होनेको कहा गया।

इसका कारण 'टाइम्स' पत्रके सवाददाताके मुंहसेही सुन

लीजिये। वह कहता है,—"मुस्तफा कमाल जब विजयी हुए हैं, तब बहुत सम्भव है, कि वे मित्र राष्ट्रोंको दर्रेदानियालके उस पार चले जानेको कहेंगे और कुस्तुनतुनियाकी रक्षाके लिये जब वे मार्मोरा समुद्रमें अपनी नौ सेना रखेंगे, तो प्रणालीके अन्दर मित्र राष्ट्रोंके बेड़े न रहने देंगे।"

१६ वीं सितम्बरको अंगरेज-सरकारकी फिर एक विज्ञप्ति निकली। इसके बादसेही रङ्ग ढङ्ग बदलने लगा। फ्रान्स सरकारने बिना सलाह परामर्श कियेही इस विज्ञप्तिसे अपनी उदासीनता प्रकट की। यह देख, मामला गड़बड़ाया समझकर फ्रान्सको अपने पक्ष समर्थनके लिये मिलानेके उद्देश्यसे लार्ड कर्जन पेरिस भेजे गये। वहाँ फिर एक परामर्श परिषद् की जानेकी बात तय पायी।

ॐ अँगरेज़ नर्म पड़े ॐ

टर्कीके विषयमें कितनोही बार, कितनीही तरहकी अफवाहें उड़ायी गयीं हैं, यह सभी जानते हैं। यूरोपकी पेटीके भीतर एक एशियाई जातिको—तुर्कों को—रहने देना यूरोपीय राष्ट्रोंको पसन्द नहीं है यह भी किसीसे छिपा नहीं है। शायद इसी उद्देश्यसे तुर्कों के ऊपर स्मर्नाके कत्ले आम और उस महान् अग्निकाण्डका इल्जाम लगाया गया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं।

मित्र-राष्ट्रोंकी पेरिसकी परिषद् भी व्यर्थ थी। मुस्तफा कमाल शान्तिके मार्गसेही अपना अपहृत राज्य वापस पाना

चाहते थे। उन्होंने बाध्य होकरही तलवार उठायी थी। अङ्गरेज सरकारने कहा था, कि एशिया माइनर, थ्रेस और कुस्तुनतुनिया तुर्कों को लौटा दिये जायेंगे, पर उन्होंने ऐसा नहीं किया।

ब्रिटिश सरकारके प्रधान मन्त्री मि० लायड जार्ज और लार्ड कर्जनने अपनी उन बातोंको कायम न रखकर यह समझा होगा, कि हमने अपने देशकी—अपनी जातिकी भलाईही की है, पर वास्तवमें भलाईके बदले उन्होंने अपनी जातिके ऊपर कलङ्क ही लगाया है। बहुत लोगोंका तो यह खयाल है, कि मि० लायड जार्जके इशारेसेही यूनानियोंने इस प्रकार उपद्रव करनेकी हिम्मत की थी और यहाँतक कहा था, कि हम कुस्तुनतुनियातक दखल कर लेंगे, जो बिल्कुल असम्भव था।

जो हो, फ्रान्स और इटालीने ग्रीसका साथ देना और उसकी ओरसे तुर्कों के साथ लड़ाई करना स्वीकार नहीं किया। इस प्रकार फ्रान्सीसियों और इटालियनोंके पीछे पाँव खींच लेनेपर अँगरेजोंने शान्तिका मार्ग अवलम्बन करनाही अपने लिये मङ्गल जनक समझा।

मुस्तफा कमाल जबर्दस्ती लड़ाई छेड़ना नहीं चाहते, यह भी मालूम होगया। उन्होंने सर्वाधिकृत देशोंपर हस्तक्षेप न करनेकी अपनी सम्मति प्रकट की। साथही उन्होंने यह भी कह दिया, कि हमारी फौजोंने सर्वाधिकृत भूमिपर कभी पैर नहीं रखा, ऐसा कहना भी नहीं कह सकते।

तुर्क सैनिकोंने चानकके पास सर्वाधिकृत प्रदेशमें पहुँचकर

तीन स्थानोंपर आक्रमण किया। इसके बाद तुर्कोंने ब्रिटिश सेनाध्यक्षोंको सूचित किया, कि मुस्तफ़ा कमाल नहीं चाहते, कि खामखाह अंगरेज़ोंके साथ लडाई करें।

उस समय भी बारूदके अम्बारपर आगकी चिनगारियाँ दिखाई दे रही थीं—युद्ध या सन्धि करना तोपोंके गोलोंके चलने या बन्द हो जानेपर निर्भर करता था। तो भी इसी बीचमें मि० लायड जार्जने मन्त्रि-मण्डलकी ओरसे लार्ड कर्जनको पेरिसकी परिषदुमें कृत-कार्य होनेके लिये बधाइयाँ भेज दीं, मानों उन्होंने किसी क़िलेपर फतहयाबीही हासिल कर ली है।

उसी समय वचन दिये गये, कि अङ्गोरा सरकारको कुस्तुनतुनिया,आड्रियोनोप्ल और थ्रेस दे दिये जायेंगे।

२५ सितम्बरके तारोंसे जाना जाता है, कि तुर्क घुड सवार फ़ौजें चानकके पास सर्वाधिकृत प्रदेशोंमें प्रवेश कर गये हैं और जेनरल हैरिङ्गटनने तुर्क सेनापतिसे अपनी फौजें हटा लेनेका अनुरोध किया है—"has requested their withdrawl"

जेनरल हैरिङ्गटन यदि चाहते, तो उस समय राष्ट्रवादी तुर्कोंके साथ युद्ध करनेकी घोषणा कर सकते थे, परन्तु उन्होंने ऐसा नहीं किया, बल्कि युद्ध न करनेकी ही चेष्टा की।

इसी समय यूनानियोंने जेनरल हरिङ्गटनके इस व्यवहारके विषयमें कहा,—"The Entante's capitulation to Kamal Pasha" अर्थात् मित्र-राष्ट्रोंने कमाल पाशाके आगे आत्म-समर्पण कर दिया है।" परन्तु जेनरल हैरिङ्गटनने स्थिर भावसे

कहा,—"जब तक हम तुर्कों की फौजके पीछे पीछे तोपोंका ले जाना न देखेंगे, तबतक हम उनपर आक्रमण नहीं कर सकते।" उन्होंने मुस्तफा कमालको सूचना दी, कि बिना हमारी आज्ञाके ब्रिटिश सैनिक तुर्क फौजपर आक्रमण नहीं कर सकते। साथ ही उन्होंने यह भी कहा, कि मुस्तफा कमालके साथ हम इन विषयोंपर बात-चीत करनेको तैयार हैं। मुस्तफा कमाल पाशाने उनकी बात मञ्जूर कर ली।

इस समय मुस्तफा कमालकी सरकारने अपने पुनरधिकृत स्थानोंमें शराबकी खरीद-फरोख्त बन्द करा दी थी। इसीपर "डेली टेलीग्राफके एक संवाददाताने ब्रिटिशोंको उभाडनेके लिये लिख भेजा था,—"Kamal desires to force humiliation on Britain, disgracing us in the eyes of the world" अर्थात्—"कमालकी सरकार हम अङ्गरेजोंको दुनियाके सामने अपमानित करके हमें नीचा दिखाना चाहती है।"

मुदानिया कानफ्रेन्स

ऐसेही अवसरपर जब कि युद्धकी पूरी पूरी सम्भावना दिखाई देती थी, मुस्तफा कमालने फ्रान्सीसी दूतके कहने सुननेसे मुदानियाकी सन्धि परिषद्में उपस्थित होना स्वीकार किया ३ री अक्तूबरको इस मुदानिया सन्धि परिषद्की बैठकका आरम्भ होना स्थिर हुआ। तुर्कों ने अब सर्वाधिकृत प्रदेशमें आगे बढना बन्द कर दिया।

अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधियोंके इस कानफरेन्समें सम्मिलित होनेके पहले मित्र-राष्ट्रोंमें यह प्रश्न उठा, कि सका क्या होगा? वहाँ अब यूनानियोंके रहनेका कोई उपाय न देखकर मित्र राष्ट्रोंने यह निश्चय किया, कि सन्धि परिषद्का निर्णय प्रकाशित होने तक तुर्क सर्वाधिकृत प्रदेशपर आक्रमण न करें। यदि तुर्क यह बात स्वीकार कर लेंगे, तो यूनानियोंको थ्रे स छोडकर चला जाना पडेगा, इसके पहले वे ही थ्रे सपर अधिकार किये रहेंगे।

उस समय तुर्कोंके विरुद्ध दो भिन्न-भिन्न शक्तियों द्वारा काम लिया जा रहा था। एक तरफ 'डेलीमेल' आदि अँगरेजी पत्र कहते,—"तुर्कोंकी माँगें बहुत जियाद हैं। "दूसरी तरफ यूनानके भूतपूर्व मन्त्री वेनिजेलिस 'टाइम्स' पत्रमें अपनी चिट्ठियाँ प्रकाशित कर यह कह रहे थे, कि 'अगर तुर्क लोग अभी थ्रे सपर अधिकार कर पायेंगे, तो वे वहाँकी ईसाई आवादीको नष्ट कर डालेंगे।' यही नहीं, वे तो यहाँतक कहते थे, कि 'यूनान थ्रे स-पर अपना अधिकार कायम करनेके लिये युद्धकी तैयारियाँ कर रहा है', जो विल्कुल असम्भव था। इसी समय विलायतमें अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधिने वेनिजेलिसकी बातोंकी असत्यताको प्रमाणित कर दिया।

इधर मित्र शक्तियोंकी ओरसे यह तय पाया, कि तुर्कोंको थ्रे स दे दिया जाये और कुस्तुनतुनियाकी शासन सभामें राष्ट्र-वादी तुर्कों को भी अधिकार दिया जाये। तुर्क लोग सर्वाधिकृत स्थानोंको छोड दें। परन्तु कमाल पाशाकी सरकारके प्रति-

निधियोंने कहा, कि सन्धि परिषद्में रूसकी सोवीट सरकारके प्रतिनिधिका आना भी आवश्यक है।

अन्तमें बहुत वाद-विवादके बाद अँगरेज फ्रान्स और इटालियन सबकी सम्मतिसे निश्चय हुआ —

(१) यूनानी लोग थ्रेस छोडकर चले जायें और मित्र राष्ट्र उसपर अपना अधिकार कर ले ।

(२) इसके बाद एक महीना बीत जानेपर उसपर टर्की सरकार अधिकार करेगी।

इसके बाद भी इसी प्रकारकी कितनीही बाते होती रहीं। इसी समय जेनरल हैरिङ्गटनने अङ्गोरा सरकारके प्रतिनिधिसे लडाई बन्द करनेके लिये धन्यवाद देते हुए कहा था —

"Your goal is with in your reach and it will be entirely within your hands in 45 days and your administration will be established satisfactorily

अर्थात्—"आपका अभीष्ट आपको प्राप्त हो गया और आजसे ४५ वें दिनसे आपका शासन सन्तोष-जनक रीतिसे स्थापित हो जायेगा।"

इसके बाद अन्तिम सन्धिका शर्तें ये रखी गयीं —

(१) यूनानी एक पक्षके भीतर थ्रेस छोडकर चले जायें।

(२) टर्कोंकी जो फौज यहाँ रहेगी, उसकी संख्या ८ हजार से अधिक नहीं हो।

(३) मरित्जा नदीके पश्चिम किनारे मित्र राष्ट्रोंकी सैनिक छावनी (Covering force) रहेगी।

(४) सर्वाधिकृत स्थानोंकी सीमा पहलेकी तरह नहीं रहेगी, नयी बाँधी जायेगी।

११ वीं अक्तूबर १६२२ के दिन मुदानियामें शामके ६॥ बजे अस्थायी सन्धिकी उपर्युक्त शर्तोंपर हस्ताक्षर हो गये। रण-चण्डीका विसर्जन हुआ। तुर्क वीरोंके शरीरमें जिस वीर-भावका सचार हुआ था, वह आगे न बढ़कर वहीं स्थिर रह गया। बिना युद्धकेही विजयश्री उनके पाँवपर लोट गयी।

मुदानियाकी सन्धि परिषद्के निश्चयके अनुसार यूनानियोंने थ्रेस प्रान्त छोड़ना शुरू कर दिया। १५ तारीखकी आधी रातको यूनानी सेनाने थ्रेसको अन्तिम प्रणाम किया, जिसपर दो वर्षोंसे वह अधिकार जमाकर बैठी थी।

इसी समय तुर्क पुलिसके दल प्रवेश करने लगे। ज्यों-ज्यों यूनानी सेना प्रदेश खाली करके जाने लगी, त्यों-त्यों तुर्की सेना अपना अधिकार प्रसारित और स्थापित करती हुई आगे बढ़ने लगी। इस प्रकार स्थायी सन्धि परिषद्का मार्ग थ्रेस खाली करके साफ कर दिया।

इस प्रकार यूनानियोंके चले जानेपर और तुर्कोंके अपने अपहृत देश पुन प्राप्त करनेपर ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलको मुँहकी खानी पड़ी। मि० लायड जार्जने प्रधान मन्त्रीके पदसे इस्तीफा दे दिया और अब हम देखते हैं, कि आज समस्त एशिया माइनर,

स्मर्ना, थ्रेस और कुस्तुनतुनिया तकपर मुस्तफ़ा कमाल पाशाका विजयी झण्डा फहरा रहा है।

लासेन कानफ़रेन्स

अब यह प्रश्न उठा, कि सन्धिकी शर्तोंका स्थायी रूपसे निश्चय करनेके लिये परिषद्की बैठक कहाँ हो? इङ्गलैण्ड, फ्रान्स और रूस अपने अपने देशोंमें परिषद्की बैठक करनेके लिये जोर देने लगे। अन्तमें यह निश्चय हुआ, कि अब जिन बातोंपर परिषद्को विचार करना है, वह कोई विशेष विवाद-ग्रस्त प्रश्न नहीं है, इसलिये किसी निरपेक्ष देशमें इस बारकी बैठक हो। इस प्रकार स्विजरलैण्डके लासेन नगरमें परिषद्की बैठक निश्चित हुई।

इसी बीचमें ब्रिटिश मन्त्रि-मण्डलका निर्वाचन कार्य आरम्भ हुआ। मि० लायडजार्जने प्रधानमन्त्रीके पदसे इस्तीफा देदिया। इसी कारण परिषद्की बैठक ६ नवम्बरसे न होसकी। उधर इटलीमें भी विद्रोह हुआ। वहाँ नया पक्ष अधिकार पानेके लिये व्याकुल होने लगा। यूनानमें राज-विप्लव हुआ। इन्हीं कारणोंसे सन्धि-परिषद्की बैठकमें देर होने लगी, अन्तमें फ्रान्सने बैठक आरम्भ होनेकी तारीख २५ नवम्बर निश्चित की।

एक और प्रश्न अभी बाकी रह गया। वह यह, कि इस परिषद्में किन किन राष्ट्रोंके प्रतिनिधि आमन्त्रित किये जायें। यह प्रश्न भी विवाद-ग्रस्त था। कमाल पाशा पहलेसेही इस विषयपर जोर देते आते थे, कि रूसकी सोवीट सरकारके प्रतिनिधि

कमाल और बोलशेविक

मित्रताका प्रारम्भ

सन् १९२० के आरम्भसेही रूटरके तारों तथा बाहरी समाचार पत्रोंसे मालूम होने लगा, कि रूसकी सोवीट सरकार और राष्ट्रवादी तुर्कों में मेल-मिलाप होने लगा है।

४ फरवरी १९२० को विलायतके 'टाइम्स' पत्रका एक संवाद दाता लिखता है —

"सिवासमें राष्ट्रवादी तुर्कों की एक विराट् सभा हुई। इसमें बाहरी मुल्कोंके भी कई प्रतिनिधि आये थे। सभापतिका आसन राष्ट्रवादी तुर्कों के प्रधान मुस्तफा कमालपाशाने ग्रहण किया था।

"इस सभामें रूसकी सोवीट सरकारकी ओरसे भी एक प्रतिनिधि आया था। सभाकी बैठकमें राष्ट्रवादी तुर्कों और सोवीट सरकारके बीच मित्रता स्थापित करनेका प्रस्ताव उपस्थित किया गया। बोलशेविक पहलेसेही राष्ट्रवादी तुर्कों के साथ सहानुभूति रखते थे, यह बात रूसी प्रतिनिधिके भाषणसेही मालूम हो गयी। उसने कहा,—"मैं रूसकी सोवीट सरकारकी ओरसे प्रति निधि होकर आपकी सभामें उपस्थित हुआ हूँ। सोवीट सरकार राष्ट्रवादी तुर्कों के साथ हार्दिक सहानुभूति रखती है। हमारी

सरकार समझती है, कि टर्कीमें आपलोग जैसी सरकार स्थापित और संगठित करना चाहते हैं, उससे तमाम मुसलमान सलतनतें एकताकी एक मजबूत डोरीसे बँध जायेंगी और रूसने, यूरोपकी पूँजी सत्तावादी सरकारोंके विरुद्ध जो आन्दोलन आरम्भ किया है, उसमें उसे सहायता मिलेगी।

"इसके बाद उस रूसी प्रतिनिधिने मुस्तफा कमाल पाशाके सम्मुख यह प्रस्ताव उपस्थित किया, कि यदि राष्ट्रवादी तुर्क मित्रराष्ट्रोंकी फौजोंसे लड़नेको तैयार हों, तो सोवीट सरकार उनकी मदद करनेको तैयार हो सकती है।"

मुस्तफा कमालने तुर्कों की ओरसे सोवीट सरकारको धन्यवाद दिया और कहा,—"सोवीट सरकारने केवल रूसकी ज़ारशाहीकोही नष्ट भ्रष्ट नहीं किया है और न केवल रूसमेंही प्रजासत्ताका आदर्श कायम किया है, बल्कि उसने तमाम संसारके साम्राज्यवादी राष्ट्रोंके लिये एक आतङ्का कारण उपस्थित कर दिया है।" इसके बाद मुस्तफा कमालने अपने प्रतिनिधि मास्कोमें भेजकर सोवीट सरकारसे स्थायी रूपसे मेल कर लिया है।

कई महीनेके बाद ६ नवम्बर १६२० के एक तारसे मालूम हुआ, कि बोलशेविक अर्मेनियाकी ओर बढ़ रहे हैं और सम्भव है, वे राष्ट्रवादी तुर्कों की ओरसे अर्मेनियोंपर आक्रमण भी करें।

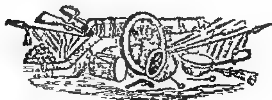
राष्ट्रवादी तुर्कों द्वारा स्थापित अङ्गोरा सरकारके सभापतिको हैसियतसे मुस्तफा कमाल पाशाने सोवीट सरकारके पर-राष्ट्र

सचिवको जो पत्र भेजे थे और सोवीट सरकारकी ओरसे उनको जो पत्र मिले थे, उनसे भी यह मालूम होता है, कि दोनोंमें पूरा मेल है और उनका मत भी एक दूसरेसे मिलता-जुलता है।

मोशिये लेनिनका पत्र

राष्ट्रवादी तुर्क जय सफलता प्राप्त करते हुए अपने अभीष्टकी ओर बढ़ने लगे और जब वे यूनानियों और अर्मेनियोंको कड़ी शिकस्तें देने लगे, तब सोवीट सरकारके प्रधान मोशिये लेनिनने मुस्तफा कमाल पाशाको इस आशयका एक पत्र भेजा था :—

"आपकी सफलतापर मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूं। आप अपने यहांके तमाम राष्ट्रवादी तुर्कोंको मेरा यह सन्देशा सुना देनेकी कृपा करें, कि उन्होंने अपनी आजादी क़ायम रखनेके लिये जो बहादुरी दिखायी है, उसके लिये हमलोग हृदयसे उनके आभारी हैं।"



"(१) राष्ट्रवादी तुर्क रूम साम्राज्यकी राजधानी कुस्तुन-तुनियाको गैर-मुसल्मान राष्ट्रोंके पजेमें जकडा हुआ समझते हैं, इसलिये वहाँसे जितने आज्ञा पत्र आते हैं, उन्हें वे धर्मतः और न्यायत पालन करने योग्य नहीं समझते और न टर्की सरकार-के सन्धि शर्तो को स्वीकार करनेकाही राष्ट्रवादी तुर्कोंकी दृष्टि-में कुछ मूल्य है।

"(२) तुर्क राष्ट्रवादियोंने यह निश्चय कर लिया है, कि वे-चाहे जैसे हो— अपने स्वत्वोंकी रक्षा करेंगे और वे केवल ऐसी-ही सन्धिको स्वीकार करनेको तैयार हैं, जिसमें सम्मान और समानताका पूरा पूरा खयाल रखा जायेगा।

"(३) तुर्की कौम अपनी इस संस्थाके प्रतिनिधिके सिवा और किसी गैरको मित्र राष्ट्रोंके साथ सुलह करनेका कोई भी अधिकार देना नहीं चाहती।

"(४) ईसाई, यहूदी या कोई दूसरे देशवासी अथवा दूसरी जातिके लोग जो रूम साम्राज्यके अन्तर्गत रहते हैं उन्हें तुर्क राष्ट्रकी सत्ता स्वीकार करनी होगी और वे ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकेंगे, जिससे राष्ट्रका अहित हो। आशा है, तुर्क कौमकी इन माँगोंको आप न्याय सङ्गत और उचित समझेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि मैं आपका अनुगृहीत सेवक हूँ।

तुर्क राष्ट्र सङ्घकी स्वीकृति तथा उसके सभापतिकी आज्ञा

(हस्ताक्षर) "—मुस्तफा कमालपाशा।"

कामोंको प्रकट कर दूँ, जो मित्रराष्ट्रोंने युद्ध समाप्त होनेके बाद किये हैं और जो हम मुसल्मानोंकी दृष्टिमें हमारे धार्मिक और राष्ट्रीय अपमानके द्योतक हैं। कुस्तुनतुनिया हमारा धार्मिक पीठस्थान है। उसे हम गैर मुसल्मानोंके द्वारा अधिकृत होते नहीं देख सकते हैं।

"मित्र राष्ट्रोंकी पुलिस और सेनाने राष्ट्रीय तुर्क नेताओंको खींच खींचकर कुस्तुनतुनियासे निकाला। तुर्क फौजी अफसरों, न्यायालयके विचारकों, संवाद-पत्र सम्पादकों, लेखकों और व्याख्यान दाताओंको गिरफ्तार कर लिया और उनके हाथोंमें हथकड़ियाँ और पैरोंमें बेड़ियाँ डालकर उन्हें अपने घर और नगरसे बाहर निकाल दिया।

"हमारी सरकारी और सार्वजनिक इमारतोंपर सङ्गीनके ज़ोरसे अधिकार कर लिया गया।

"तुर्कोंने अपने स्वत्वोंको इस प्रकार अपहृत और अपनी क़ौमकी इतनी लाञ्छना होते देख, इसका प्रतिकार करनेके लिये एक कार्यकारिणी सभाका सगठन किया है। यह संस्था राष्ट्र-वादी तुर्कों की पार्लमेण्टकी कार्यकारिणी सरकार है।

"राष्ट्रवादी तुर्कों ने मुझे इसी कार्यकारिणी सरकारका सभा-पति निर्वाचित कर मुझे सम्मानित किया है।

"उपर्युक्त बातोंको तथा राष्ट्रवादी तुर्कों ने २६ जून १६२० को अपने जो विचार प्रकट किये हैं, उन्हें मैं आपके सामने प्रका-शित करना चाहता हूँ। वे इस प्रकार हैं—

"(१) राष्ट्रवादी तुर्क रूम-साम्राज्यकी राजधानी कुस्तुन-तुनियाको गैर-मुसल्मान राष्ट्रोंके पजेमें जकडा हुआ समझते हैं, इसलिये वहाँसे जितने आज्ञा पत्र आते हैं, उन्हें वे धर्मत और न्यायत पालन करने योग्य नहीं समझते और न टर्की सरकार-के सन्धि शर्तो को स्वीकार करनेकाही राष्ट्रवादी तुर्कों की दृष्टि-में कुछ मूल्य है।

"(२) तुर्क राष्ट्रवादियोंने यह निश्चय कर लिया है, कि वे-चाहे जैसे हो— अपने स्वत्वोंकी रक्षा करेंगे और वे केवल ऐसी-ही सन्धिको स्वीकार करनेको तैयार हैं, जिसमें सम्मान और समानताका पूरा पूरा ख्याल रखा जायेगा।

" (३) तुर्की कौम अपनी इस संस्थाके प्रतिनिधिके सिवा और किसी गैरको मित्र राष्ट्रोंके साथ सुलह करनेका कोई भी अधिकार देना नहीं चाहती।

"(४) ईसाई, यहूदी या कोई दूसरे देशवासी अथवा दूसरी जातिके लोग जो रूम साम्राज्यके अन्तर्गत रहते हैं उन्हें तुर्क-राष्ट्रकी सत्ता स्वीकार करनी होगी और वे ऐसा कोई भी काम नहीं कर सकेंगे, जिससे राष्ट्रका अहित हो। आशा है, तुर्क कौमकी इन माँगोंको आप न्याय-सङ्गत और उचित समझेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ, कि मैं आपका अनुगृहीत सेवक हूँ।

[तुर्क राष्ट्र सङ्घकी स्वीकृति तथा उसके सभापतिकी आज्ञा से प्रेषित]

(हस्ताक्षर) "—मुस्तफा कमालपाशा।"

अङ्गोरेका भाषण

कुस्तुनतुनिया सरकारके सन्धिकी शर्तों पर अपनी स्वीकृति का हस्ताक्षर कर देनेके बाद, राष्ट्रवादी तुर्कोंकी एक महती सभामें, जो अङ्गोरेमें हुई थी, मुस्तफा कमाल पाशाने जो व्याख्यान दिया था, वह इस प्रकार है .—

"मेरे प्यारे भाइयो !

हमारी जातिके सिवा संसारमें कोई भी ऐसी दूसरी जाति नही है, जिसे इस बातका गौरव हो, कि उसने दूसरे धर्मके अनुयायियोंके स्वत्वोंकी रक्षा की है। हमारे पूर्वजोंने अन्य देशोंपर बहुत बार विजय पायी है, परन्तु अधिकृत देशोंके निवासियोंके धार्मिक स्वत्वोंकी उन्होंने सदा रक्षाही की है। सुल्तान मुहम्मद फातेह जब कुस्तुनतुनियामें आये, तब उन्होंने यहाँके निवासियोंके धर्मपर, उनके धार्मिक भावोंपर आघात नहीं पहुँचाया, बल्कि पराजित देशवासियोंके धर्म गुरुओंको सपूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी थी और इस प्रकार इस बातको प्रमाणित कर दिया था, कि हम तुर्क जिस प्रकार अपने धर्मका खयाल रखते हैं, उसी प्रकार अन्य धर्मावलम्बियोंके धर्मका भी सम्मान करते हैं। हम उन्ही तुर्कोंकी सन्तान हैं, जो सदा अपनी तरह दूसरोंको समझते थे।

"सन्धि-परिषद्‌ने शायद हमारे दुश्मनोंकी बातोंपर विश्वास कर लिया है, जिनमें हमपर निरर्थक दोष लगाये गये हैं—कितनीही झूठी बातें उडायी गयी हैं, लेकिन, प्यारे भाइयो! याद

रखिये, कि सच—सचही है और वह कभी छिपकर नहीं रह सकता। सच्ची बातको कोई दबाकर नहीं रख सकता!

"फरीद पाशाने अपने सरकारी बयानमें आर्मेनियाके विषयमें बातें करते हुए पेरिसमें कहा है, कि पश्चिममें कोहिस्तान तारसमें हमारी सरहद मानी जा सकती है, लेकिन उन्हें शायद यह बात याद नहीं रही, कि तारसकी पश्चिमी सीमातक—तारससे अनातोलियातककी अर्बी बोलनेवाली आबादीमें एक हजार वर्षोंसे तुर्कों का खून दौड़ रहा है।

"हमारे ऊपर यह तोहमत लगायी गयी है, कि तुर्कों का भूतकाल ऐसा अन्धकारपूर्ण है, कि इनके वर्तमान और भविष्यका कुछ भी पता नहीं लगाया जा सकता। ऐसीही तोहमतें लगा कर हमारे स्वत्वोंका अपहरण किया जारहा है।

"परन्तु, भाइयो! उन लोगोंको याद रखना चाहिये, कि वीर तुर्क जाति स्मर्नापर किये गये अत्याचारोंको देखकर भी चुप होकर बैठी नहीं रह सकती। हमें अब चाहिये, कि हम अपनी कमर कसकर खड़े हो जायें, तलवारके जोरसे अपने स्वत्वोंकी रक्षाके लिये निकल पड़े। शान्ति और मेल मालफ़तसे अब काम निकलनेकी कोई आशा नहीं दिखाई देती।

एक और भाषण

इसके कुछ दिनों बाद राष्ट्रवादी तुर्कों की एक और सभा हुई, उसमें भाषण करते हुए मुस्तफा कमाल पाशाने कहा —

"प्यारे भाइयो! अर्जेरूम और सिवासमें हमारे जो कौमी जलसे हुए थे, उनका मकसद यही था, कि दारल खिलाफतकी आजादी क़ायम रखनेकी किसी भी कोशिशसे हम बाज नहीं आयेंगे।

"जो जाति अपने प्राणोंपर खेलकर अपने देशके गौरव और अपने राष्ट्र-सिद्ध अधिकारोंकी रक्षा नहीं करता, वह वास्तवमें एक निहायत ज़लील क़ौम कहलाने योग्य है।

"जब किसी देशके आदमी पृथक्-पृथक् रहकर अपने स्वत्वों की रक्षा और प्रबन्ध करने योग्य नहीं रहते हैं, तब वहाँ जमायत क़ायम होती है और वह जमायत जिधर चाहती है, उधर भिन्न भिन्न आदमियोंको लगाकर काम कराती है। उस समय सब लोगोका भविष्य उस जमायतके हाथोंमें आ जाता है। इस प्रकार वह जमावत अपना अभीष्ट पृथक्-पृथक् व्यक्तियोंकी शक्तियोंको सग्रह करके सब लोगोंका कल्याण-साधन करती है। हमें भी चाहिये, कि अपनी इस जमायतको, अपनी अपनी भिन्न-भिन्न शक्तियाँ प्रदान कर इसे पूर्णत शक्ति सम्पन्न बनायें और इसीके द्वारा अपना उद्धार-साधन करें।

"सज्जनो! हमारी इस जमायतकी भूत और वर्त्तमान अव-

रातें हाँका करती थीं, उन्हें छोड चुकी हैं। उन्हें अब अपनी बडी बडी आशाओंपर पानी फिर जानेका भय होने लगा है।

"मित्रो! यह परिणाम है—हमारे स्वदेश प्रेमका! उसीकी प्रेरणासे हम अपमानित होकर जीना नही चाहते। इस समय हमारा कर्त्तव्य है, कि हम अपने मार्गपर बेधड़क, बेखौफ होकर चलते जायें और हमारे रास्तेमें जो रोड़े मिलें उन्हें पीसकर धूल करदें।

"अङ्गोरा सरकारकी पार्लमेण्टको भी चाहिये, कि वह अपने काम खूब सावधानतापूर्वक करती रहे, क्योंकि योग्य शासकों और सैनिक अधिकारियोंपर ही हमारी सफलता निर्भर करती है और वेही कौमकी भलाई या बुराईके लिये ज़िम्मेवर हैं।

"मेरी बातोंका साराश यह है, कि हम शान्ति और धैर्यसे च्युत न हों, अपनी स्वतन्त्रताको हाथसे जाने न दें और तुर्क कौमको गुलाम न बनने दें।

"मुझे ईश्वरकी सहायताका पूरा भरोसा है। मेरा दृढ़ विश्वास है, कि हम तुर्क अवश्यही अपनी अभीष्ट सिद्धिमें सफलता प्राप्त करेंगे। परन्तु क्या अपने देशको स्वतन्त्र बना लेने और शान्ति तथा सुशासन करलेनेसेही हमारा काम खत्म हो जायेगा? नहीं, भविष्यमें हमें बहुत बड़े-बड़े उत्तरदायित्वपूर्ण काम करने हैं। हाँ, यह जरुर है, कि अभी हमें अपनी अन्तरङ्ग परिस्थितिको ही पहले सम्हालना है, ताकि दुनियापर रौशन हो जाये, कि हम एक ज़िन्दः कौम हैं।

"मैं किसी प्रकारकी सन्धि करने या न करनेके लिये जिम्मेवर नहीं हूँ। प्रत्येक विषयका निश्चय अङ्गोरेकी राष्ट्रीय सभा करती है। यह राष्ट्रीय संस्था उन अन्यायोंपर विचार करनेके लिये स्थापित हुई है, जो यूरोपीय साम्राज्यवादी राष्ट्रोंने तुर्क कौमके साथ उसका अस्तित्वतक लोप कर देनेके लिये किये हैं।

इस सभाके सङ्गठन और उद्देश्यके विषयमें समय-समयपर सूचनाएँ और विज्ञप्तियाँ प्रकाशित करा दी गयी हैं। सभाका स्पष्ट उद्देश्य यह है, कि वह कौमी सरहदके अन्दर कौमी आजादी-की पूरी तरह हिफाजत करे और खलीफेकी सल्तनत मुसल्मानों-के हाथमेंही रहे। बस, इससे अधिक इसका और कोई उद्देश्य नहीं है।

"तुर्क जाति केवल इतनाही चाहती है, कि उसके स्वत्वोंकी रक्षामें कोई गैर कौम हस्तक्षेप न करे।

"इस सभाका विश्वास है, कि वह यूरोपीय साम्राज्यवादी सरकारोंके पञ्जेसे तुर्कों को छुड़ा लेगी और उसे स्वतन्त्र बनाये रखेगी और राष्ट्रीय सरकारकी फिरसे स्थापना करेगी।

"इसी सभाके नियमों और आदेशोंके अनुसार एक सुसंगठित सेना तैयार की गयी है, जो कौमकी हर तरहके अत्याचार-उत्पीड़नोंसे रक्षा करेगी और जो तुर्कोंके मार्गमें रोड़े अट-कायेंगे, उन्हें दण्ड देगी।

"यह सभा एक नयी सरकारकी स्थापना करके अपनी कौमकी हिफाजत करनेका बन्दोबस्त करेगी।"

सल्तनतकी स्वतन्त्रतामें बट्टा आये और न हमारे आपसकी बरा बरीमेंही फर्क आये।

"हमें तुर्क लोग अपने पादशाह या खलीफाको किसी गैर-मुसल्मानके अधीन देखना नहीं चाहते। साराश यह, कि हम अपनी कौमको गुलामीकी ज़िल्लतसे बचानेके लिये अपना सब कुछ कुर्बान करनेको तैयार हैं। तुर्क कौम जबतक अपना अभीष्ट सिद्ध न कर लेगी, तबतक वह चैन न लेगी।

"भाइयो! यह समय हमारी परीक्षाका है। हमें इस परीक्षाके समय अपनी स्वतन्त्रताकी रक्षा करके और अपने देशमें शान्ति और सुव्यवस्था स्थापित करके यह दिखा देना चाहिये, कि हम वास्तवमें शासक होनेके योग्य हैं या नहीं।"



सल्तनत और खलीफत

कमालका सम्मान

तुर्कोंको जिस दिन अपने अपहृत स्मर्ना, थ्रेस आदि प्रान्त वापस मिले, उस दिन तमाम टर्कीमें महान् आनन्दोत्सव मनाया गया। जिन सुल्तान वहीद उद्दीनको विजयके बादसे शासनके कार्य भारसे मुक्त कर दिया गया था, वे भी इस राष्ट्रीय आनन्दोत्सवमें सम्मिलित हुए थे और उन्होंनेभी मसजिदमें जाकर ईश्वरको अपनी कौमकी सफलतापर धन्यवाद दिया था।

कुस्तुनतुनियाके लोगोंने जिस प्रकार गाजी मुस्तफा कमाल पाशाके प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा प्रकट की है, वह वास्तवमें एक असाधारण बात है और कमालके लिये ऐसीही श्रद्धा शोभा भी पा सकती है। इस प्रकारकी श्रद्धा केवल वेही पाते हैं, जो अपनी जातिकी, अपनी मातृ-भूमिकी दुर्दशाके समय उसके उद्धारके लिये कमर कसकर खड़े हो जाते हैं और उसके कल्याणके लिये अपना अस्तित्वतक उसीमें मिला देते हैं। कुस्तुनतुनियामें लोगोंने मुस्तफा कमालका एक वृहत् चित्र लेकर जुलूस निकाला। मसजिद्के पास अपने देशके त्राता और रक्षकके प्रति अपनी आन्तरिक श्रद्धा और भक्ति प्रकट करने तथा उनके दीर्घ जीवन-

लाभके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करनेको लोगोंकी एक बड़ी भारी भीड इकट्ठी हुई थी। अङ्गोरा सरकारके सेना-दल शृङ्खला-बद्ध होकर तमाम गश्त लगा रहे थे।

शासनमें सुधार

राष्ट्रवादी तुर्क पहलेसेही इस बातकी आवश्यकताका अनुभव कर रहे थे, कि टर्कीकी शासन-पद्धतिमें संस्कार करना चाहिये। इसका कारण यह है, कि आजतक एकही व्यक्तिके हाथमें धार्मिक और राजकीय सत्ता रहती थी। एकही व्यक्ति खलीफा और सुल्तान हो सकता था। अतएव एकही मनुष्य दो काम करे, यह बडा कठिन हो जाया करता था।

पीछेके इतिहासके पन्ने उलटकर देखा जाये, तो मालूम हो जायेगा, कि राजकीय सत्ता खलीफाके हाथमें होनेसे उसका दुरुपयोग किया गया है। अब्दुल हमीद जब सुल्तान और खलीफा थे, तब उन्होंने तुर्कों से भिन्न मुसलमान नौकरशाही नियत करके तुर्कोंको बुरी तरह तङ्ग किया था। अतएव तुर्कों को खलीफाकी राजकीय सत्तासे घृणा हो गयी थी। महासमरके पहले दोनों सत्ताएँ अलग-अलग कर देनेका प्रयत्न भी हुआ था।

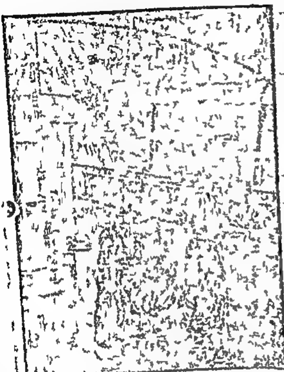
इस पद्धतिको जड-मूलसे बदल न सकनेके कारणही 'नवीन तुर्क संघ'वालोंकी अभिलाषा अभीतक पूर्ण नहीं हुई थी। इस पद्धतिके परिचालक खुद सुल्तान थे। इसीलिये विजयके बाद तुर्कों ने उनसे शासनके कार्य-भारसे मुक्त होनेके लिये कहा था, साथही उनका यह भी कहना था, कि सुल्तान अपने धार्मिक

अधिकारोंके साथ मुसलमान-जगत्‌के धर्माचार्य अर्थात् खलीफा बने रहें तो इसमें कोई दुःख नहीं है। सुल्तानके साथ इस विषयमें परामर्श करने तथा इस विषयका निर्णय करनेके लिये अङ्गोरा सरकारकी ओरसे रिफत पाशा सुल्तानके पास भेजे गये थे। सुल्तान तथा रिफत पाशामें इस विषयमें करीब चार घण्टेतक बातें हुई और सुल्तानने रिफत पाशाकी बात मान ली।

इस प्रकार उनको स्वीकृति लेकर उन्हें केवल धर्माचार्यका कार्य भार सौंपा गया था और यहभी स्थिर हुआ था, कि भविष्यमें खलीफाकी गद्दीपर उसमानिया खानदानके लोगही बैठा करेंगे। सुल्तानने भी यह बात मान ली थी, परन्तु पीछे वे आप ही-आप अङ्गरेजोंके शरणापन्न होनेके लिये देश छोडनेका विचार करने लगे। अन्तमें अङ्गरेजोंने उन्हें अपने युद्ध पोतमें सवार कराकर माल्टा पहुंचा दिया।

इसके बाद अब तुर्कोंने सुल्तान अब्दुल मजीदको खलीफा निर्वाचित किया है। सुल्तान या खलीफाके इस निर्वाचन कार्यमें मुसल्मान धर्मग्रन्थोंके आदेशोंका पालन भी किया गया है।

साराश यह, कि खिलाफतके लिये मुस्तफा कमाल और रिफत पाशाके हृदयमें बहुत सम्मान है। पर अभी अभी कायरकी तरह भाग छूटनेवाले सुल्तान वहीद् उद्दीनके विषयमें उनके हृदयमें जरा भी आदर नहीं है। उनका दृढ विश्वास है, कि उक्त सुल्तानने ही तुर्कों का सर्वनाश किया है। अतएव तुर्कोंका द्वेष खलीफा नामक व्यक्तिके विषयमें है—खिलाफतके



'बर्म्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्वोत्तम पुस्तकें।

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इस उपन्यासमें भारत सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही मनरञ्जक घटनाओंका सचित्र वर्णन किया गया है। सम्राट अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इस्कन्दर" का गुप्त भावसे "ईदलगढ़-दुर्ग" पर चढ़ाई करना, भयानक अंधेरी रातके समय चुपचाप दुर्गपर अधिकार जमा कर दुर्गाधिपति 'सोहानी' को कैद करनेकी चेष्टा करना, सोहानीकी वीर-पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप लावण्यसे मुग्ध हो कर्तव्य-विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इस्कन्दरका पीछा करना, सोहानीका पहाड़से गिर कर प्राण त्याग करना,



गुलशनकी फरियाद पर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, गुलशनकी सहायतासे इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति "बाजबहादुर" का गुप्त घातककी आक्रमणसे बचाना, बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, दोनोंमें विवाह होना आदि अद्भुत अपूर्व घटनायें दी गयी हैं। मूल्य २), रेशमी जिल्द २॥) रु०

जासूसी कहानियां—यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) साढ़े आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नीलाम-घरका रहस्य, (४) घुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर चोर चतुर। दाम सिर्फ ॥=) आना।

पता-आर, एल, बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

जासूसी कुत्ता

चित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने कभी ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। छपाया है। "आप एक स्वामि-भक्त कुत्ते एक सम्मान करामाते दिखाई हैं प्रकार "शत्रुओं स्वामीको "लार्ड" के अपनी अद्वितीय पहुंचा दिया है, कि "पेटा" सहित फड़क उठती है। आये, किस उपन्यासमें यह शिक्षा इसने भारतमें सकती है, कि मनुष्य ने छोड़ा, किस परिश्रमके बलपर कोई कारी जासूस कर सकता है। ये ने शत्रुओंके अनुरोध है, कि यदि नकी रक्षा की, न्यायाधि कुछ भी लोकि जासूस कार्य भी आप इसे अवश्य पढ़ें, उसमें कुछ पछताना न पड़ेगा, क्योंकि मूल भाव्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि इसे पढ़कर निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें कोटोके सुन्दर सुन्दर ३ चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य १॥), रेशमी जिल्द सहित



महेन्द्रकुमार

ऐय्यारी और तिलिस्मका अनूठा उपन्यास।

ऐय्यारी और तिलिस्मी खेलोंसे भरा हुआ, आश्चर्य व्यापारों और रोमाञ्चकारी घटनाओंसे छवा हुआ यह अनूठा उपन्यास पढ़ने ही योग्य है। इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी ऐय्यारियां खोली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक फड़क उठेंगे। इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकोंका खाना, पीना, सोना, बैठना तक भूल जायगा। इतनेपर भी १००० पेजके बड़े पोथेका दाम, सिर्फ ५) है

आर. एल. बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता



दुर्गादास



स

इस उपन्यास-पूर्ण सचित्र ऐतिहासिक नाटक।

बङ्गाल घटनाओंसे जिस नाटककी धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें लिख किया गया है।



बादशाहसे दैगाप गुप्त भावसे चढ़ाई करना, समय चुपचाप कार दुर्गाविपा करनेकी वीर-पत्नी रूप लावण्य

नाटकके अनेकों संस्करण हाथों हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकके खेलते समय दर्शकोंको स्थान मिलना कठिन हो जाता था, वही युद्धयुक्त हुआ वीर-रस प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें छपकर तय्यार है। भारत में यह नाटक नाटकोंका 'मुकुट' विशुद्ध। इसमें "औरङ्गजेब" महाराणा राजसिंह, भीमसिंह, राजा उदयसिंह, दक्षिणीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, आज़म तथा कामबख्श प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया है। मुगल-रमणियों और राजपूत ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही खूबीसे खींचा गया है। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहली बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोके छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गीन चित्र भी दिये हैं जिन्हें देखकर आप फड़क उठेंगे। दाम सिर्फ १॥), रेशमी जिल्द व चौखा २) रुपया।

खूनी औरत

इसमें एक डाकरके मेस्मेरिज्म या मौतिक-विद्याका बयान ऐसे विचित्रतासे किया गया है, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १।) रु०

अमीरअली ठग — सचित्र जासूसी उपन्यास

पाठक महोदयो ! आपने शायद पुराने जमानेके भयानक ठगोंका हाल सुना होगा। 'ईष्ट इण्डिया कम्पनी' के राजत्वकालमें इन ठगोंका बड़ा ही ज़ोर शोर था। ठगोंके जोर-जुल्मसे उस समय सरकार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थी। ठगोंके बड़े बड़े दल ठाठ-बाट से दौरा करते थे और उनके गोइन्दे मुसाफिरोंको बहका (बहका) कर अपने गरोहमें ले आते थे। फिर ठग लोग विचित्र ढङ्गसे रूमालके झटकेसे यात्रीको गलेमें उन्हें फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे।



यह उपन्यास बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है और हाफटोन फोटोकी बड़ी बड़ी कई तस्वीरें लगाकर खूबही सजा दिया गया है। दाम सिर्फ ॥=)

कैदीकी करामात

यह एक बड़ाही रहस्यपूर्ण सचित्र डिटेकटिभ उपन्यास है, लण्डनके मशहूर जासूस मि॰ रावट ब्लेकने फ्रान्सके प्रसिद्ध विद्रोही और डाकू "हेनरी गेरक" को कितनी ही बार बड़ी बहादुरीके साथ गिरफ्तार किया था, पर फिर भी गेरक बराबर उनकी आखोंमें धूल झोंक भागता रहा। इस डाकूने सारे यूरोपमें हलचल मचा रखी थी। यहांतक कि स्वयम् मिष्टर ब्लेकको भी कई बार इससे लांछित होना पड़ा। अन्त में उन्होंने किस तरह इसे पकड़ कर सजा दिलवाई, यह पढ़कर आप दङ्ग होजायेंगे—दाम १॥), सजिल्द २)

नकली रानी— इसमें एक डाकू स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका बयान बड़ी ही खूबीसे किया गया है। सुन्दर-सुन्दर कई चित्र भी हैं, दाम सिर्फ १) रु॰

पता-आर, एल, बर्मन एण्ड कोः, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

भीषण डकैती

यह उपन्यास बङ्ग साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एक मात्र कर्णधार श्रीयुत बाबू पांचकौड़ी दे की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इसमें "मिष्टर रोटलेयड" नामक एक अमेरिकन जासूसकी प्रथम कार्रवाइयों-का ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासकी प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ, प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्दमें दिलचस्पी और मनोरञ्जकता कूट कूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। इसमें इस उपन्यासकी प्रधान नायिका 'मिसेस तोरायणी' का एक ऐसा अपूर्व तिनरङ्गा चित्र दिया गया है, कि देखते ही मन हाथसे निकल जाता है। दाम सिर्फ १॥) सजिल्द २) रु०



डाक्टर साहब

सचित्र जासूसी उपन्यास

इसमें लण्डनकी विख्यातनामा अस्त्र-चिकित्सक, अद्भुत क्षमताशाली 'डाक्टर क्यू' की उस, भीषण, रसायन-विद्याका चमत्कार है, जिसके द्वारा वह आततायी यातनें, जिन्देको मुर्दा और मुर्देको जिन्दा बनाकर अपना इच्छित मतलब गांठ लेता था। इस डाक्टरके गुप्त अत्याचारोंसे सारा इङ्गलैण्ड दहल उठा था और सभी लोग "जादू-विद्या" "भूत-विद्या" आदि समझने लगे थे। अन्तमें वहांके विलक्षण प्रतिभाशाली सुप्रसिद्ध जासूस "मिष्टर ब्लेक" ने किस प्रकार उसका रहस्य-भेदकर उस 'डाक्टर क्यू' को गिरफ्तार किया है, यह पढ़नेही योग्य है। सुन्दर सुन्दर दो चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ १॥)

जासूसी चक्कर

सचित्र जासूसी उपन्यास

लेखकने इस उपन्यासमें बम्बईकी पारसी-समाजका बड़ा ही विचित्र रहस्य खोला है। कुछ दिन हुए बम्बईमें "हरमसजी" नामक एक धनाढ्य पारसी सज्जनके खजानेसे विचित्र रूपसे एक लाखकी चोरी हो गयी, साथ ही खुली सड़कपर भरी गाड़ीमें एक पारसी युवक जानसे मार डाला गया। इन दोनों घटनाओंको लेकर बम्बईमें बड़ी हलचल मच गयी। खून और चोरीके इल्जाममें "रुस्तमजी" नामक एक पारसी गिरफतार हुआ। इन दोनों घटनाओंकी जांचके लिये सरकारकी ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूमधामसे होने लगी, फिर कैसे चार दस जासूसोंने सुन्दरी 'रतनबाई'की सहायतासे पता लगाया,



कैसे निरपराध रुस्तमजीने अदालतसे छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय, भीषण व्यक्ति सभीरको गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें इस खूबीसे लिखी गयी हैं, कि बिना समाप्त किये पुस्तक छोड़नेको इच्छा ही नहीं होती। खून, चोरी, जाल, जुआ-चोरी, सभी बातें दिखलाई गयी हैं। हाफटोनके ५ चित्र भी हैं। मूल्य २॥) सजिल्द ३)

सचित्र गो-पालन-शिक्षा

इसमें गौ बछड़ोंकी पहचान, पालन, दवायें और दूध बढ़ाने तथा दूधसे बननेवाले पदार्थोंको बनानेके ऐसे सरल तरीके लिखे गये हैं, कि मनुष्य कुछ ही दिनोंमें मालामाल हो जा सकता है। गाय आदि पशु पालनेवालोंको इसे अवश्य खरीदना चाहिये। २ चित्र भी दिये हैं। दाम केवल ।=) आना।

पता—आर, एल, बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड।

राष्ट्रीय-साहित्यका सर्वोत्तम ग्रन्थ

गान्धी-गीता

रंग-विरंगे १३ चित्रों सहित छपकर तैयार है।



जिस प्रकार महाभारतके युद्धमें कर्त्तव्य-विमुख अर्जुनको भगवान् कृष्णने 'गीता'का दिव्य उपदेश देकर कर्त्तव्य-परायण बनाया था, उसी प्रकार इस बीसवीं सदीके स्वराज्य-युद्धमें कर्त्तव्य-विमुख भारतको कर्त्तव्य-परायण बनानेके लिये महात्मा-गान्धीने जो समय समयपर दिव्य उपदेश दिये हैं, यह ग्रन्थ उन्हींके आधार और गीताकी शैलीपर लिखा गया है। इसकी भाषा प्राञ्जल, वर्णन-क्रम औपन्यासिक तथा शब्द-विन्यास बड़ा मधुर है। पुस्तकके आरम्भमें प्रायः पचास पृष्ठोंमें श्रीकृष्णके युगसे लेकर आजतककी राजनैतिक प्रगतिका बड़ा ही अनूठा और क्रमबद्ध इतिहास दिया गया है। सारांश यह कि, पुस्तक इस युगके लिये बड़ी ही उपयोगी हुई है, जिन्होंने इसे देखा है, वे इसे मुक्त कण्ठसे भारतकी **"राष्ट्रीय गीता"** स्वीकार कर चुके हैं। जनतामें इसका आदर भगवद्गीताकी ही भांति हो रहा है। अनेक राष्ट्रीय विद्यालय, देशी पाठशाला तथा पुस्तकालयोंने इसे पाठ्य पुस्तक और उपहारके लिये निर्वाचित किया है। छपाई सफाई और कागजके लिये मत पूछिये। १३ रंग-विरंगे चित्र देकर पुस्तकको खूब सजाया गया है। तिसपर भी—मूल्य सर्वसाधारणके लिये केवल २), रंगीन जिल्द २।) और रेशमी जिल्द का २॥) रु० रखा गया है।

पता—आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०,

३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

मुस्लिम-महिला-रत्न के एक बहुरंगे चित्रका नमूना



इस पुस्तकमें रजिया, चाँदबीबी, नूरजहाँ, बीदरकी बेगम आदि १२ मुस मान वी
विदुषी रमणियोंके सचित्र जीवनचरित्र बड़ी मधुर भाषा और उपन्यासके ढँगपर लि